विज्ञापन.

श्रीमंतो धर्माचार्य धर्मशील सद्गुरुभ्योनमः अहो भव्यलोको नमस्कार करो उस आदि पुरुषोत्तम ऋषभ सर्वज्ञकूं की जिसने धर्म अर्थ कांम ओर मोक्षका रस्ता बतलाया ओर प्रजा सुखसे निर्वाह करसके इसवास्ते अनेक कलाकौशल पैदा करके प्रजाकूं सिखलाइ जगतमें कुंभार सुथार लुहारादिकोकी कारीगरी देखके निश्चे अनुमांन होताहे के यह विद्यासरूमें उसीने सिखलाईहे वह देहधारी ओर स्वयंबुद्ध ज्ञानीथा निराकार ईश्वर विद्या उपदेशक नही होसकता इय बात तो न्यायसे ओर प्रतक्ष प्रमांणसेंही सिद्धहे हां अलबत्तें बुद्धि तो मनुष्योकी उसमें सहाय देणेवाली जरूरहे जेसें विद्यांमान अंग्रेजोने एक २ वस्तूका होता हुवा कार्य देखके रेल तार बिजली छापखाणे आदि अनेक कल पेदा करली खिचडी पकती हुइ हंडीकी बाफसे ढकणी उछलतीकूं देख अग्नि ओर पाणी ओर वायूके योगसे एसी कुदरत होतीहे इतनी बातकूं विचारते बाफकूं रोकणेका ज्यादा प्रयत्न बढाया तो अनेक किस्मके कार्य द्रव्यानुयोगसें करते चले जातेहे अगर इस बातकूं

ज्यादा सुक्ष्मबुद्धिसें विचारोगे तो इह कार्यभी उस आदि पुरषकी बनाइ शिल्पकलाउमेहीहे जो कोइ कहेगा की तुमारे आर्यावर्त्तमें यह विद्या कब थी जूठी बातकूं हम केसें माने उत्तर हे महाशय हमारा देश सर्व विद्याका उर धनका भंडारथा देखो हमारा कोणिक असोक चंद्रराजाका चरित्र उसने छव खंडका चक्रवर्त्ति बणणेकुं दिग्विजय करणेकूं सातरत्न लोहमइ बणायेथे सो चक्र तो आकासमें स्वत चलताथा इत्यादि इस कलसे काम लेणेकी कारीगरी उस वखत कायमथी जिसकों अढाइ हजार वर्षही भयाहे गजसिंह कुमार चरित्रमे एक सुथारने एसा मोर बणायाथा कलका उसपर बेठणेसे सइकडो योजन गजसिंह कुमार फिराथा देखो वसुदेव हिंड उससें वसुदेवजीकूं बुलाणे राजाने कलमइ हाथी बणाके भेजाथा देखणेमें हाथीकी तरे उसके पेटमें आदमी लोक बेठेथे इत्यादिक कलकी कारीगरी आर्यावर्त्तमेंथी विमानभी आकाशमे चलतेथे पद्मचरित्रसे साबितहे जबसे विद्याका पठन पाठन कमपडा तबसें बुद्धिभी मंद होते गई लडाइ दंगोमे बहोत कामिल शास्त्रभी नष्ट भ्रष्ट होगये उर विलायतोवालेभी

लेगये इसवास्ते यह ग्रंथको जो मेने संग्रह क-
राहे सो च्यारोही वर्णके मनुष्योके लिये हित-
कारीहे कारण हरकिसमका काम जो ज्ञानयुक्त
बुद्धिसें विचारके करणेमें आताहे तो अंतमे उ-
सका परमार्थभी ठीक हासिल होताहे इसमे
नोकरी राज्य सेवा युद्ध मातापिता आदिकोसें
वर्त्तावा रुजगार सात प्रकारकी आजिविका
व्याज वगेरे सब करके पूरा नफा करके शंसा-
रमे धनवान इज्जतदार उर बमा चतुर बजकर
अंतमें जीव परमपद साध सकताहे एसा ग्रंथ
किसीने नहीं छपाहे ज्यादा क्या तारीफ लिखूं
इस ग्रंथकूं पढके जो अमल करेगा तो निश्चे
वह मनुष्य वतोर बालस्टरोके माना जायगा
यह ग्रंथ साक्षात्कानून धर्मशास्त्रहे इस अर्थोके
प्रकाशक अर्हद् परमेश्वरहे जैनधर्मके कायदा
कानून कइएक नमुनेकी वानगी लोकहितार्थ
जाहिराकीहे अवलसें लेकर आखरीतक पढे
विगर तृप्तिभी न होगी गृहस्थके धर्म कायदेके
श्राद्धदिनकर आचारदिनकर विवेक विलाश
श्राद्धप्रज्ञप्ती श्राद्धकौमुदी आदि अनेक ग्रंथ वडे
विस्तारके संस्कृत प्राकृत भाषामें वणे हुयेहे
लेकिन् भाषाभिलाषी पुरषोके लियेही मेरा प-

रिश्रमहे जैनधर्ममें सर्व तरेके ग्रंथ मोजूद ज्योतिषवैद्यकादिक परंतु जैनलोक उसकी खोज नही करतेहे उर जो कोइ खोज करे तो उसकूं मदत नही मिलतीहे मेने यह ग्रंथ मंबईमें छ-पाणे गया तब श्रीमान् सावणसुखा बीकानेर वास्तव्य सेठ जुहारमलजी समेरमलजीके मु-नीम पारख माणकचंदजीने मुझे कुछ एक आश्रय दियाहे जिसके सहायसें यह मेरा परिश्रम सफल भयाहे इस ग्रंथकी किमत ब-होत खरचा लगणेपरभी बहोत थोमी रख्कीहें १॥ रुपा देढ जिल्द बंधी समेत ॥ मिलणेका ठिकाणा बीकानेर राजपूताणा बमा उपासरा उ-पाध्याय युक्तिवारिधिः श्रीरामलालजी गणिः के शिष्य पांक्षेमचंद पेमचंद अमरचंद प्रकाशक विद्याशाला ॥

अथ

॥ श्री श्रावक व्यवहारालंकारः ॥

॥ श्रीऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योनमः ॥ श्रीवाण्यायैनमः ॥ अथश्रावकव्यवहारालंकार ग्रंथोयंलोकभाषयालिख्यते ॥ सर्वसंपत्करीयासा वाणीकलुषनासिनी ऋद्धिसिद्धिप्रदानित्यं वंदेजि नमुखोद्भवं ॥ १ ॥ धर्मशीलात्मयालब्धा भवाब्ध्यो च्छेदकारणीं लोकलोकोत्तरोशुद्धिं नौमिनित्यं स- सद्गुरुं ॥२॥ व्यवहारअलंकारं श्रावकस्यसुखायवै क्रीयते ऋद्धिसारेण श्राद्धग्रंथानुसारतः ॥ ३ ॥

अब–पहले गृहस्थ श्रावक च्यार घडी पि- छली रात रहनेसें उठके मनमें नवकार मंत्रका जाप करता हुवा जिधरका स्वर नाकका चलता होय वोही पांव अपणे बिछोनेसें नीचे जमीनपर रखके फेर जतनके साथ निर्जीव शुद्ध जमीनपर काय चिंतासे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर सारे बदनपर हाथ फेरकर आठ पांखडीका कमल अपने नाभिचक्रमें मनसे विचारकर एक- सो आठ वेर अथवा ज्यादा मनमेंही नवकार मंत्रका जाप करे जिसमें संसार संबंधी कार्य-

सिद्धिके वास्ते ॐ ह्रीँ एसा बीज लगाकर पां-
चोंही परमेष्टीका जाप जपे मुक्तिके वास्ते ए-
साही जापजपे फेर सामायकादिक ६ आवस्यक
करे जिन मंदिरमें जाके विधीके साथ चैत्यवं-
दनादि करे इसका विस्तार चैत्यवंदनभाष्य
श्राद्धदिनकरादिक ग्रंथसें जाणना फेर जतनके
साथ जिनमूर्त्तिकी पूजा स्नान तिलकादिक करके
द्रव्यभाव संयुक्त करे पूजाका विस्तार श्राद्धविधी
पूजापंचाशकादि ग्रंथोसें जाणना फेर उपाश्रय
जाके गुरुवंदन करके व्याख्यान सुणे पच्चख्काण
करे गुरुवंदनकीविधि गुरुवंदनभाष्यसें जाणना
पच्चख्काणका निर्णय आगारोका अर्थ पच्चखाण
भाष्यसे जाणना गृहस्थकूं चाहीये पंडित जतीसें
हमेसां धर्म सुणे उरसीखे क्यूं के विद्या एसी
अमोलख कामधेनुहे सों सबतरेके मनवंछित
पूरणे समर्थ हे ऊपर कहे मुजब धर्मक्रिया
किया पीछे राजा अपणे राज्यसभामें जावे
मंत्री अपणे सुप्रत न्यायसभाका काम देखे
व्यापारीवणिक अपणे २ उद्यमका प्रयास करे
धर्मकूं विरोध नही आवे इस मुजब धन पैदा
करे जेसें राजा धनवानका उर गरीबका अपने
खातरीवाले मान्य पुरुषका उर सामान्य प्रजा-

का उत्तमका उर नीचका पूर्वापर जुवानकूं विचारकर कसूरदारका कसूर जाणकर मध्यस्थ भावसें इनसाफ करें ज्यादे खातरी न्यायपक्षमें नही करे इसपर एसा दृष्टांतहे कल्याण कटकपुर नगरमें बमा न्यायवान एसा यशोवर्मानामे राजा राज्य करताथा उस राजानें राज मेहेलके नीचे गरीब लोकोंकी फरियाद सुननेको न्याय घंटा बंधवाई एक समय राजाकी कुलदेवी राजाके न्यायकी परिक्षा करणेकूं तुरत जणी हुई गायका रूप धारण कर बच्चे समेत राज रास्तेमें बेठ गई इतनेमें राजाका लमका पूरे जोरसें घोमा दोमाता हुवा आतेके फेटमें आणेसें वछमा मारा गया तब वो गाय वमे शब्दसें पुकार करती हुई रोती २ आंसू वरसाणे लगी तब किसी आदमीने गायसें कहा इहांतो जो होणहारथा सो होगया अगर इनसाफ करायें चाहतीहे तो राजाकी न्यायघंटा बजाकर फरी-याद कर तब वह गाय उसी मुजब जायकर सींगोंसें घंटा बजाणे लगी राजा उस वखत भोजन करताथा घंटाकी अवाज सुणकर पूछा ये फरीयादी कोण हे नोकरोने देखकर कहा एक गइया वजातीहे राजा भोजन छोमके

जाहिर आया तब गइयासें पूछणे लगा तुजें किसीने सतायाहे क्या वो सताणेवाला कहांहे मुजे बतला तब गऊ आगे चली राजा उनके पिछाडी चला गऊनें मराहुवा बछडा दिखलाया राजा तब लोकोंसें पूछणे लगा ये बछडेकूं जिसनें माराहे वो हमारे सामने आवे जब कोइभी आदमी हाजर नहीं भया तब राजाने नियम कीया जब कसूरवार जाहिर होगा तभी अन्न जल लूंगा राजाकूं लंघन भया तब राजाका लडका हाथ जोड हाजर हुवा कहणे लगा हे स्वामी गुनहगार में हुं इसवास्तेही चाणाक्य नीतिमें लिखाहे यतः विनयं राजपुत्रेभ्यः पंडितेभ्यः सुभाषितं ॥ अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यःशिक्षेतकैतवं ॥ १ ॥ अर्थ—विनय याने अदबका कुरब कायदा सीखणा होय तो राजोंके कुमरोंसें सीखणा वो लक्ष्मीपुत्र छोटे उर बडे सबोंके संग वरतावेकी नीतीसें चलतेहे कुलहीन आदमी हुकमत उर पेसेके नसेमें किसीकूं कुछ नही समजतेहे काग जो सिंहासणपरभी बैठ जाय तो क्या हंसके गुण जो क्षीरनीर जुदे करणेके हे वो कब आसकताहे उर सभामें वोलणेके सुभाषित सीखणा होय तो

पंडितोंसें सीखणा अनृत याने झूठ चोरी छरी-
फाड़ सीखणा होय तो जुवारीसें सीखणा उस-
में ये सब अपलक्षण होते हे और कैतव याने
कपटाइ सीखणा होय तो औरतोसें सीखणा
स्त्रीका जन्मही मायावळहे उस कुमरनें राजासें
सब हकीगत कह सुणाई हे पिताजी जेसा
मेरा कसूरहे वेसीही मुझे सजा होणी चाहिये
तब राजा कानूनके जांणकार स्मृतियोंके पढे
ब्राह्मणोसें राजाने पूछा तब उन ब्राह्मणोंनें कहा
हे राजन् राजके योग्य तेरे ये एकही लडकाहे
इसके वास्ते क्या सजा बतलावें तब राजा
बोला हे ब्राह्मणो किसका राज किसका लडका
मेंतो सबसें ज्यादा न्यायनीतिकूं समझताहुं
और राजाओंका यही श्रेष्ठधर्महे सोही लिखाहे
दुर्जन जो बद आदमी प्रजाकूं कष्ट देणेवाला
उसकूं दंड करणा १ सत्जन याने गुणवंत और
अछी चालचलणेवाले पुरषोंकी पूजा सत्कार
करणा २ न्यायसें खजानेका धन जमाकरणा ३
पक्षपात याने तरफदारी न करणा ४ शत्रु जो
राज्यके दुस्मन हे उनकूं जीतके प्रजाकी
हमेसां रक्षा करणी ५ ये राजा लोकोंकूं नित्य
करणे योग्य पंचमहायज्ञ जांणना सोमनीतिमेंभी

कहाहे राजाउंको चाहिये अपणे लमकेने कोइ कसूर कीया होय तो अपराध माफक दंम करणा इसवास्ते राजपुत्रकी कोइ खातरी नही राखकर शास्त्रोक्त दंम होय सो कहो तबजी पंमतोनें कुछजी नही बतलाया तब राजा वि- चारणे लगा जो जीव दुसरे जीवकूं हकनाहक दुख देवे तो जिस मुजब उस जीवने दुसरे जीवकूं कष्ट पोहचाया होवे वेसाही कष्ट उस गरीब फरीयादीके बदलेमें कसूरदारकूं देणा यही राजाउंका न्यायहे उर किसीने उपगार कीया होय तो उसका गुण नही जूलकर उसका बदला उतारणा ये सब सत्पुरषोंका धर्म हे उर राजाउंकों चाहीये अनाथ दीन दुखी अबोलकी ज्यादा रक्षा करे क्षत्रीलोकोकी एसी नीतिहे की जो दुस्मन शस्त्र मालके नग्न हो- जावे उसकूं मारे नही जो शत्रु संग्राममें जाग जावे उस जागतेकूं मारे नही जो शत्रु मूंमे घास तिणखा माल लेवे एसे पशुसंज्ञक शत्रुकूं मारे नही जिसने किसीकाजी विगाम नहि कियाहे एसे निरपराधीकूंजी मारे नही जेसें राजाकी प्रजा मनुष्यहे उससें अधिक राजाकी प्रजा दुपग्गे उर चोपग्गे वगेरह जिनावरहे इस

जांणवरोंसें प्रजाकूं अनेक तरेके फायदे उस जांनवरोंके जीवणेसे हे अपणी मोतसें मरे बादभी उनके चमड़ा वगेरह अनेक तरेका काम आताहे मनुष्य तो मरे बाद कुछभी काम नही आसकताहे एसें जानवर निरपराधीयोको जो राजपुत्र अपणे स्वारथकेवास्ते मांस खाने-का लालची होकर मारे वो राजपुत्र न्याइ नही महा अन्याईहे क्योंके आदमी तो आपणा अहवाल कहकर सुणाताहे ये जांनवरोंका दुख जब राजाही नही सुणेगे उर दया न लावेगे तो फेर इन गरीबोकों तो सब अनार्य म्लेच्छ मारतेही हे फेर इनकूं तो सरणागत जो राजा सबका रक्षक वोही मारताहे तब तो न्याय पातालमें गया पहले लिखाहे नग्न शस्त्ररहित शत्रूकूं राजा मारे नही तो सब पशु नग्न उर शस्त्ररहितहे श्वापद सिंहादि बलीहे लेकिन शस्त्रधारी तो नहीहे लेकिन् उर पशुउंकों मनु-ष्योंको मारताहे इसवास्ते उसका यत्न करे लेकी-न अन्यपशु निरपराधी शस्त्ररहित हे घास मूंमें माल लेवे एसें शत्रूकूंभी राजपूत पशुजांण मारे नही तो प्रत्यक्ष घास करके पेट भरणेवाले एसे निरापराधी पशुकूं केसें मारे भागते पशुभी

मारणे योग्य नही कारण भागते शत्रूकूं राजपूत मारे नही तो भागते हुये जांनवरकूं केसें मारे केइ एक मांसाहारी अपणे स्वारथके वास्ते एसा कहतेहे पशुउंमें अविनासी आत्मा नही एसें कहणेवाले महामुर्ख निर्दइ उर मांसके लालचीहे ज्यांनवरका मायना सोचेतो एसा अर्थ जाहिरा मालम देताहे ज्यांन कहते जीव वर मायने प्रधान याने अच्छा जीव तो फेर अविनासी आत्मा पशुउंकी नही इसबातमें क्या प्रमाणहे खून मनुष्योकेभी शस्त्र लगणेसें निकलताहे उर खून पशुउंकेभी निकलताहे शस्त्रकी चोट लगणेसे आदमी पुकार करताहे वेसा ही जांनवर करताहे मारके डरसें मनुष्य भागताहे वेसेंही मारके डरसें पशूभी भागताहे अपणे शंतानकी रक्षा मनुष्यभी करताहे वेसेही पशुभी करतेहे मरणेपर मनुष्यभी पुत्रादिकके वियोगसें रोतेहे एसेंही पशुभी रोतेहें इत्यादिक अनेक प्रत्यक्ष प्रमाणसें मनुष्य जेसीही आत्मा पशुउंमेंहे अपणे २ कर्मोंके वश चोराशी लक्षयोनीमें जीव भटकताहे मरणा कोइभी नही चाहता सर्व मतोंमे वही धर्म श्रेष्ठहे की जिसमें सब जीवोंकी दयाहे देखो गीता अहिंसा

परमोधर्मः फेर कृष्ण द्वैपायन व्यासने अगारोंही पुराणोका एसा सार निकालकर कहाहे यत अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयं परोपकाराय पुण्याय पापायपरपीड्नं ॥ १ ॥ अर्थ–तो प्रग-टहीहे तुलसीदास नक्तिमार्गवालेने कहाहे ॥

दुहा–दयाधर्मकोमूलहे नरकमूलअनिमान॥
तुलसीदयानछोमियें जबलगघटमेंप्राण ॥१॥
तुलसीहायगरीबकी कनीननिरफलजाय ॥
मरे छागकेचामसें लोहनस्महोजाय ॥ २ ॥

मनुस्मृतिमेंनी आठ कसाइ लिखेहे जीवों-कों मारणेवाला बताणेवाला मांस लाणेवाला मांस वेचणेवाला मांस खरीदणेवाला रांधणेवाला पुरसणेवाला उंर खाणेवाला मांसका अर्थनी मनुने एसाही कीयाहे मांस अर्थात् जिसको में खाताहुं सो कहता वो जीव मुझें खायगा मांस खाणेवाला कठोर उंर क्रूर मिजाजवाला होजाताहे प्रतक्ष्य प्रमांणसें साबितहे मांस खाणेवाले जितने जांनवरहे सो सबोकों देखा जावे तो सबके सब वमे निर्घृण उंर कठोरहें वेसे घास उंर नाज फल फूल खानेवाले जांनवर दुष्टस्वनाववाले नही उंर बमे सीधे नोले होतेहे

एसाही मनुष्योंका अहवाल जांणना एसेंइ शेख सइयदनेभी फारसी भाषाकी करीमा किताबमें लिखाहे की ज्यांनके मारणेवालोकों खुदा गुनाह माफ नही करेगा इत्यादिक अनेक ग्रंथोसें साबितहे के मांस तो विगर ज्यांनवर मारे होता नही ओर मारणेवाला गुनहगारहे जो श्रुति स्मृती पुरान कुरानके वचन सचेहें तब तो जो हाल उन ग्रंथोमें लिखाहे सो जांनवर मारणेवालोकों मांस भक्षीयोकों गुनाहकी सजा मिलेहीगी ओर ये शास्त्र वगेरह नही मांनते ओर एसा कहतेहे इसभव मीठा परभव किण दीठा उन लोकोनें परभव मांननेका एक प्रत्यक्ष प्रमाण देखणा जो पापपुन्यका फल नहीहे तो अंधा लूला लंगडा कोढी निर्धन खाणेकूं न मिलणा इयतो किस कारणसेहे ओर राजा सेठ साहूकार ऐशआरामी वगेरह अनेक सुखी जीव किस कारणसें देखणेमें आते हे ये प्रतक्ष प्रमाणसें पापपुन्यका फल जांणकर अठारे पापस्थानक छोडनेका उद्यम करणा लाचारी ओर पराधीनतासें करणा बडे तोभी पापके कामकूं पापसमझणा येभी धर्मकी जडहे केइयक मूर्ख एसा कहतेहे जबसें राजालोकोने दया

धर्मधार लीया तबसें सत्रुउंसें संग्राम करणेकी शक्ति नही रहणेसें राज्य खो बेठतेहे ये कहणा मूर्ख मांसाहारीयोका हे राजा भरत ऋषभ देवके पूत्रसें लेकर विक्रमसंवत् बारेसे तक कुमारपाल सिद्धपुरपाटण प्रमुख अठारे देशके राजातक अनेक दयाधर्मी राजा असंख्यकालसें सूर्यवंसी चंद्रवंसी इस आर्यावर्त्तादि क्षेत्रोमें राज्य कर्ते भये थे शत्रुउंके दलके तोडणेवाले हुये परिशिष्टपर्वादिक ग्रंथोका इतिहास देखणेसें मालम होगा परम जैनदयाधर्मी चेटक राजा विशाला नगरीका शरणागत पिंजर बिरुद धारणेवाला जिसका नाती अशोकचंद्र इन दोनोके लडाइमे एक क्रोड अस्सीलाख मनुष्य मारे गये राज्यनीति जबही प्रमांणहे सो अपराधीका निग्रह निरपराधीकी रक्षा करे मांस नही खाणेसें राज्य जाता हे उर खाणेसें रहताहे ये वात झूट हे मुसलमीन दिल्लीके बादस्याह राज्य क्यों खो बेठे टीपू सूलतान आदि तो मांसाहारीही थे ये तो निश्चे जांणना पृथ्वी सदा कुमारीहे अनेक पति हुये अनेक होंयगें वीरभोज्या वसूंधरा इति वचनात् फेर एसाभीहे के एकसमय एसीभी आजातीहे सो मूरखी-

रोसें कुछवण, नही आता एकसमे कायरभी राजा वनबैठतेहे जेसें अकबरके वालपणेमे हेमचंद अग्रवाला वणिया बादस्याह दिल्लीका बनगयाथा ओर एकसमेका वो हालथा अर्जुननें महाभारत कीया एकसमे वोही अर्जुनसें कुछ नही बणपड्या ॥

दुहा–समेंबडीबलवानहे पुरषनहीबलवान ॥
कावांलूंटीगोपिका वहअर्जुनवहबाण ॥ १ ॥

हमारी समजसें तो राज्य जाणेका एसा वरतावा मालम देताहे राजा प्रमादी विषयलंपट होकर अन्यायसें धन जमा करे भिक्षा मांगणेवालोंसें कर लेवे दुष्ट ओर विद्यारहित मूर्खोंकों राजकाजका अधिकार सोंपें विद्यावान अकलवंत बुजरक पुरषोकी सल्लाह लेकर कांम नही करणेसें हर किसीका विश्वास करणेसें साम दाम दंड भेदसें च्यार प्रकारकी राजनीति नही जांणनेसें खजानेमें धन नहीं रहणेसें अपणे नोकरोंकी कदरदानी नहि करणेसें देव गुरु धर्मकी अपमांनता करणेसें गरीवोंकों सताणेसें वहोत मदिरा आदि नसेके पीणेसें इत्यादि कारण राज्य जाणेकेहें इत्यादि कारणोंकों विचारकर राजानें अपने अपराधी लड्केकूं

एसा हुकम दीया तूं इस राजरस्तेमें सोजा आप वो घोडा मंगाकर अपणे चाकरोंकों हुकम दीया तुम इस घोडेपर सवार होकर दोडाता हुवा इस लडकेके ऊपरसें लेजाउ रा जाका लडका विनयवानथा रस्तेमें सोगया लेकिन् नोकरोने एसा करणा मंजूर नही करा तब राजा घोडेपर आप असवार हुवा सर्व लोकोने बहोत मना कीया तोभी राजा उस गायका इनसाफ करणे घोडेकी वाग उठाइ घोडा उठा इतनेमें राज्यकी अधिष्टाइका देवी लगामपकड फूलोंकी वरसात राजापर करी उर कहा हे राजन् में तुह्मारी न्यायबुद्धिकी परीक्षा करी प्राणसेंभी प्यारा एसे लडकेकी खातरी नही करते हुये तेनें गरीबकी फरीयादी सुणके सच्चा न्याय कीया तूं धर्मराजा हे तूं वहोत कालतक निर्विघ्नपणे राज्यकर एसें न्यायकी युक्तिपर दृष्टांत कह्या अब जो राज्यके अधिकारी कामदार वो केसा होणा चाहिये जेसें अभ-यकुमार चाणाक्य प्रधानकी तरे महाबुद्धिशाली राजाका उर प्रजाका दोनोंका हित चाहणे-वाला एसा राज काज करे रूसपतखाके सच्चेकूं झूठा न करे जिस कांममें धर्मकूं विरोध नही

आवे कहाहे के फकत राजाके घरमें फायदा करणेवाला कामदार प्रजाका दुस्मन होताहे उर फकत प्रजाके घरमें फायदा करणेवाले मुत्सद्दीकूं राजा निकाल देताहे इसवास्ते दोनोकों फायदे-बंद प्रधान मिलणा मुसकिलहे वणिकप्रधान अ-थवा अश्वपतिकूं मंत्री पदमें स्थापन करणा कारण अश्वपति जातीवालोकूं राजन्यवंशता होणेसें सूरवीरता प्रमुख राज्यधर्म अभ्यासर्से तुरत आताहे कारण बीजकी तासीर उर सोबतका असर प्रायें रहताही हे दुसरे असपति लोकोमें वर्त्तमान समयमें प्रायें व्यापारी होणेसें व्यापा-रमें नफे नुकसानकूं पहलेहीसें विशेषकरके देश क्षेत्र काल भावका पूर्वापर विचारके कारण बमे विचक्षण होतेहे व्यवहारमें कोमीकाभी मुखा-यजा नही करतेहे किसी कविने कहाहे वाण्यो विणजन छोमसी जो स्वर्गापुर जाय लेखा करता रांमसें टका पेसा खाय १ इसवास्ते जिसकूं नफे नुकसानका ख-याल हो मृदुभाषी शत्रुउंसें सूरवीर संग्राम-सें नहिं हटनेवाला सर्वकला कुशल अभिमान-रहित राजाका भक्त प्रजारक्षक दया धर्म सर्वज्ञ वचनकी आस्तावाला राजाके अश्वपती जाती

वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी शंक्षाशास्त्रकी निपुणता ओर अन्य लोकोमें प्रायें थोमे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोकी देखीहे एक हिसाब अंग्रेजी पढे पुरुषकों करणा वतलावे वोही हिसाब एक पारसी पढेकूं करणा वतलावे ओर वोही हिसाब माहाराष्ट्र बंगालादि देशवालोंकों करणा वतलावे वही उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक वख-तही वतलावे तो सबसें पहिले अश्वपतादिक महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-वाला कहेगा वाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय तो पातवाण देखें वणिक तथा अश्वपतादिकके साथही असि १ मसी २ कृषी ३ कर्म संसारमें चलताहे व्यापारी वगेर अन्य वर्णका निर्वाह ओर संसारधर्म चलणा डुसवारहे व्यापारीतो ओर वर्णके सारे प्रायें नही रह सक्तेहे वाकी तो अपणे २ कर्मकर्त्ता नही होवे तो प्रलयका-लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रसें मुख्यप-णेकर च्यार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती वांधी हे राज्यकाजके दंम्पासकोका उग्रकुल संज्ञाहे ?

संसारी गृहस्थियोके षोडस संस्कार करी गृहस्थी गुरूकी भोग कुलसंज्ञाहे २ राज्यकर्त्ता-के परवारवालोकों राजन्य कुल संज्ञाहे ३ शेष सर्व प्रजा व्यवहार शिल्प कर्मादिकर्त्ताउंकों क्षत्रिय संज्ञाहे ४ इन च्यारोंही वर्ण व्यवस्थासें वर्जित सर्व मोह कंचनकामनीके त्यागी भिक्षा भोजी वो जती साधू इन च्यारोही वर्णवालो-का संसारसे उद्धार करणेवाला गुरूहे वणिक व्यापारी लोकोकों चाहीये अच्छा शुद्ध व्यापार करणा जिससें धर्मकूं विरोध नही आसके इस बातपर श्राद्धविधीमें एसी गाथा लिखीहे ॥ गाथा ॥ ववहारसुद्धिदेसाइ विरुद्धचाय उ-चियचरणेंहिं तोकुणइ अत्थचिंतं निव्वाहिंतो निअं धम्मं ॥ अर्थ–याने गृहस्थ श्रावक धन पैदा करणेसंबंधी विचार करे उसमें तीन वात-पर जरूर ध्यान रखना चाहीये एक तो धन वगेरह जमा करणेका साधन जो व्यवहार उसकी निर्दोषता रखणी रुजगार करते वखत मन वचन काया सीधा रखणा कपट नही क-रणा जिस देसमे रहता होय उस देसमें मांने हुये लोकविरुद्ध कृत्य नही करणा तीसरे उचित कृत्य जरूर करणा इन तीन वातोंका विस्तार

हम आगे करेंगे इन तीन वातोंकों दिलमें रखता हुवा धनकी चिंता करणी चोथी ये वात हे अपने जो पहले अंगीकार कीयाहे व्रत नियम सो लोभके वस उनकी खंमना न करणी भूलकेभी हरकत नही लगणे देणा संसारमें एसी चीज थोमी होगी सो धनसें न मिल सकती होय इसवास्ते बुद्धिवान पुरुषोनें सब तरेके यतनके साथ धन जमा करणा धन चिंता करणेका हुकम आगम देता नही कारण मनुष्य-मात्रोंके अनादि कालकी परिग्रह संज्ञासें अपने कर्मोंके प्रेरणासें जीव करताहे केवली कथित आगम एसे सावद्य व्यापारमें जीवोंकी प्रवृत्ति किसवास्ते करवावे पूर्वपरचित अनादि संज्ञासें करते हुयेकूं धर्ममें बाधा नही आवे एसी आज्ञा जिनागम देताहे लोक जितना लाखों उद्यमों सें रातदिन संसारी काम साधताहे उसके लाखमें हिस्से जो उद्यम धर्ममें करे तो तोक्या मिलणा बाकी रहे मनुष्यकी आजीविका १ व्यापार २ विद्या ३ खेती ४ गाय बकरा वगेरे पशुउंका पालणा ५ कलाकोशल ६ सेवा ७ उंर भिक्षा ये सात उपायसें होतीहे उसमें वणिक लोक व्यापारसें वैद्य ज्योतषी व्याक-

रणी वेदपाठी प्रमुख अपणी विद्यासें आजी-
विका करतेहें जाट कुणबी प्रमुख खेतीसें गो-
वाल धनगर राईके राठलोक गाय वगेरेके रक्ष-
णसें चितारे सुनार सुथारकूं आदि लेकर व-
होत लोक अपनी कारीगरीसें नोकर चाकर
वगेरह सेवासें उंर निक्षारी लोक निक्षासें
अपणी २ आजीविका करतेहें उसमें घी तेल
धांन कपास सूत कपमा तांबा पीतल वगेरह
धातू मोती जवाराहित रुपीया पेसा मोहर
वगेरह किरियाणेके नेदसें अनेक तरेके व्या-
पारहे तीनसे साठ नेद किरियाणेकेहे उंर
अंग्रेजी राज्यकी चीजोंनी व्यापारमें अनेक
किस्महे इसीवास्ते श्राद्धविधीकी टीकामें लिखा
हे पेटेके नेद गिणना चाहे तब तो व्यापारकी
संक्षाका पार नही आताहे व्याजवट्टानी व्या-
पारमेंही गिणा जाताहे ओषध रस रसायण
चूर्ण अंजन वास्तु शकुन निमित्त सामुद्रिक
धर्म अर्थ काम ज्योतिष तर्क प्रमुख नेदसें ना-
नाप्रकारकी विद्याउंहे इनोंमे एक तो वैद्यक
विद्या उंर अतार पसारीपणा ये दोय रुजगार
बुरा ध्यांन होणेके कारण विशेष गुणकारी पणेके
नही कोइ धनवान बेमार पमे अथवा एसानी

दुसरे प्रसंगमें पसारीकूं वैद्यकूं बहोत लाभ उर मान मिलताहे सोही बात वैद्यकमेंभी लिखताहे–रोगकाले पिता वैद्य–अर्थात् बेमारी होणेपर वैद्यबापसेंभी ज्यादा मालम देताहे रोगीका मित्र कोण वैद्य राजाका मित्र कोण हांजीहां हजूर सच्च फरमातेहे एसा कहणेवाले संसारके दुखसें भरे हुयेका मित्र कोण मुनिराज उर धन खोबेठे हुये आदमीका मित्र कोण ज्योतषी व्यापारमे व्यापार गांधी याने पसारीकाही सरसहे कारण टकेमें खरीदी हुई चीज वखत पडनेपर सोटकेमें वेचताहे वैद्यकूं पसारीकूं लाभ उर मांन बहोत मिलताहे इसवास्ते एसा कारण पाया जाताहे जिसकूं जिस रुजगारमें ज्यादे लाभ मिलताहे तो वो जीव वेसा कारण हमेसां चाहताहे सोही बात नीतीमें लिखीहे योद्धार सिपाही रणसंग्रामकी चाह रखताहे वैद्य धनवानके बिमारीके आरामीकी चाह रखताहे ब्राह्मणलोक अपणे जजमानकी मरणेकी चाह रखताहे ॥

दुहा–भोजगपूछेव्याहविरतकूं नाइपूछेसूत ॥
जैनमुनिसुखशांतापूछे ब्राह्मणपूछेमुंत ॥ १ ॥

मनमे धन जमाका जोनि केवल इच्छावाला

वैद्य धनवानकी मांदगी चाहतेहे जिनोंके पास
उंर कोइन्नी इल्म कला धन पेदा करणेकें नही
हें निकेवल वैद्यपणेकीही आजिविका जाणतेहें
उन वैद्योकी एसी बुद्धि प्रायें रहतीहे केइएक
जरे हकीम रोगोंकी वृद्धि धन लेणेकेवास्ते कर
देतेहें एसे कुकर्मकर्त्ता वैद्योकें दया दिलमें कब
होसकतीहे केइयक वैद्य निकेवल स्वार्थीयेही
होतेहे सो स्वाणेकोन्नी मोहताज साधर्मी अ-
नाथ मरणेवाला एसोंकान्नी धन लेलेतेहें जो
वैद्य मदिरा प्रमुख अन्नक्ष चीज मिली हुई द-
बाई खिला देतेहें अनेक जीवोकों दवाइके
काममें लेणेंकों मारणेवाला द्वारिका नगरीका
प्रथम धन्वंतरकी तरे नरकका पात्र होताहे
जिसके कर्त्तव्यका वयान विपाकमूत्रमेंहें एसी
वैद्यक्रिया नही करणे योग्य हे अब अठे धर्मार्थी
वैद्यके लक्षण एसें होतेहें गुरुलक्ष आर्य वैद्यक
शास्त्रका जांणकार उचित लोन्न करणेवाला
रोगीका कष्ट देखके दिलमे दया लाणेवाला
सुपात्रोकी विशेष परिचर्या करणेवाला जेसें
ऋषन्न देवका जीव जीवानंद वैद्यके न्नवमें कोढी
साधूका कोढ मिटाया एसा तेसेंही खर वैद्य
महावीर स्वामीकी कानकी शलाका निकालणे-

वाबा वैद्य पुन्यक्षेत्रकी बंदगी करणेसें ब्रह्मदेव लोक गया हिंसक ठग चोर परस्त्रीवैस्यागामी लोंभेबाज दगाबाज एसें अदम्योकों अच्छा करणेसें वो पापी जो पाप करताहे उसका हिस्सा वैद्यकूं मिलताहे पुन्यवंतका पुन्यका मिलताहे लेकिन् हमारी समजसें तो हम एसा जांणतेहे इस वैद्यकी आजीविकाकूं धिग् रहे कारण–
धिगवैद्यस्यवैद्यत्वं परदुःखेनदुःखितः ॥ जीवितो भाग्य योगेने मृतोवैद्येनमारितः ॥१॥ धिक्कार हो वैद्यकी आजीविकाकूं सो पराये दुखसें दुखीहे जीवे तब तो कहतेहे हमारी ऊमर लंबीथी मरणेसें लोक कहतेहें इय वैद्य दवा देताथा सो मार दीया १ ओर फेर एसाभीहे ॥ रोगकालेपितावैद्य मध्यकालेचमित्रवत् ॥ स्नानकालेभवेत् शत्रु वैद्यस्यत्रिविधागतिः ॥ १ ॥ रोग जिस वखत रोगीकूं शताताहे उसवखत वैद्य बापसेंभी ज्यादे मालम देताहे ओर फायदा होणेके वीचमें मित्रकी तरे स्नान रोगके अंतमे करणेके वखत वैद्य दुस्मन मालम देताहे वैद्यका तीन हालहे लेकिन् धन्वंतरि जेसे अंग्रेजी डाकटरोका यह हाल नही प्रथमतो इनोका राज्याधिकार होणेसें सबसें ज्यादे खातरी हुकमत

करतेहे दुसरे मासिक पगार राज्यसें मिलताहे
ऊषधी बणाणी नही पमती पैसाभी रईसका
लगताहे जो बुलावे फी देवे देसी वैद्योंको तो
मूर्ख लोग बदनामीभी देदेतेहे माकतरोके सां-
मने चूं नही करते वैद्यक क्रियाके संपूर्ण शास्त्र-
का जांणकार होय सो वैद्य संसारमें उत्तम
गिणा जाताहे सोही लिखाहे ॥ व्याधेः तत्व
परिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्रह ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं
नवैद्यप्रभुरायुषः ॥ १ ॥ रोगकूं जाणणा उस
रोगकूं मिटाणेवाली ऊषधीका देणा वैद्यपणेकी
इतनीही खूबीहे लेकिन् वैद्य आयु देणे समर्थ
नही रोगी जबही आराम होताहे जब च्या-
रोंही पायें पूरेही मिलतेहे जेसें रोगकी परि-
क्षाकारक वैद्य वेसीही दवाई जो कभी पुराणी
दवा चाहीये ऊर नई मिले नई चाहीये ऊर
पुराणी मिले अथवा बणाणेमें कसर रहजावे
तो दवा अमृतरूपभी जहिर होजाती हे तीसरा
रोगीका परचारक निगेंदास्तीवाला पूरा चा-
हिये कहे मुजब हिफाजत रखे चोथा रोगी
वैद्यके कहे मुजब दवा लेवे ऊर पथ्य करे तभी
दुरस्त होजाताहे इन च्यारोंमेंसें एकमेंभी क-
सर होगी तो आरामी नही होगी असाध्य जब

जाणा जावे तो उपचार वैद्यकूं करणा अंगीकार-
ही न करणा कदास रोगीके स्वजन बहोत आ-
ग्रह करे तब असाध्य दशा कहणेवाला दवा
देवे तो वैद्यकूं दोष नही रोग तीन तरेसे हो-
ताहे पूर्वकृत पापके उदयसें वो दवाइसें मिट-
नेवाला नही उसका इलाज ध्यांन जप पुन्य
सुपात्रकी भक्ति प्रमुख धर्महे १ दुसरें माबापके जो
रोग होताहे सो संतानके होताहै अथवा कुष्ट आं-
ख दुखणा खाज सीतला वोदरी सुजाक फिरं-
गादिक संसर्गी होताहे इसवास्ते नलशली संस-
र्गज कहलाताहे २ इसका इलाज संसर्गजकाहे
नलशली मिटणा मुसकिलहे ३ तीसरा कायक
तथा मानसक रोगहे मिथ्या आहार मिथ्या
विहारसे वात पित्त कफादिकसें होणेवाले तेसे
काम शोक भयसे होणेवाले जिसमें साध्यका
इलाज सहज हे कष्ट साध्यका इलाज दुखें हो-
ताहे असाध्य रोग त्याज्यहे देश क्षेत्र काल
अवस्था उंर अग्निबलकूं विचारे फेर अधर्मकूं
नही प्राप्त होणेवाला इलाज करे ज्योतप निम-
त्तादिक शास्त्रसें आजीविका करणेवाले पुरषकूं
यथार्थ फलही कहणा चाहीये जो फलित शा-
स्त्रमें लिखा होवे नास्तिकादिकोने अपणे क-

लिपत शास्त्रोंमें फलादेश ग्रहोका नही मानाहे अनेक कुयुक्तियां लगाकर फला देशकी नास्तिता सिद्ध करीहे हमने प्रत्यक्ष प्रमांणसें केइयक ज्योतषी देखेहे सो विगर प्रश्न कीये उन आये पुरषकी मनचिंता बात कहतेहे हेड्रावादमें पंच पक्षीका पढाहुवा ज्योतषी अन्नीविद्यमांनहे इस विद्याका पठन पाठन कम होणेसें ज्योतषीयोकी बात कममिलतीहे ये दोष शास्त्रोका नही पढा हुवा होवे तो सत्य कहणा मिलताहे सूर्यप्रज्ञप्ती चंद्रप्रज्ञप्ती ज्योतिष करंमादिक गणित शास्त्रहे नद्रबाहुसंहिता चूमामणि प्रमुख फलादेशके शास्त्रहे नगवान महावीर सर्वज्ञ कहतेहे हे गौतम ग्रहादिकोके शुन्न अशुन्न फल जो में कहताहूं वो मनुष्योके पूर्वकृत पापपुन्यके फल मनुष्योके जांणनेवास्ते इन ग्रहोके निमत्तसें प्रकास करताहुं शुन्नाशुन्न फल ग्रहोका नही किंतु स्वकृत कर्मोंकाहे निमित्तके आठ अंगहे दिव्य १ उत्पात २ अंतरिक्ष ३ स्वर ४ शकुन ५ स्वप्न ६ सामुद्रिकादिक न्नेद करके इन सबोंके होणेमें पांच समवाय कारणहे निमित्त कहो चाहे आदिकारण कहो सोही अनेकार्थमें लिखाहे ॥ निमित्तहेत्वायतन

प्रत्ययोत्थानकारणौ निदानमाहूपर्य्यायै प्राग्रूपं- येनलक्ष्यते ॥ १ ॥ निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण ६ निदान ७ ये सब पर्यायवाचक नांमहे जिसकरके होनेवाले अहवाल पहले मालम होवे उस निमित्तके इतने नांम एकार्थका कहणेवालाहे इन ग्रहोकी क्रूर दशा जब आवे तब अशुभ कर्मका उदय आया एसा समझके अठारे दोसरहित तीर्थं- करकी भक्ति पूजा सुसाधूकी सेवा शील व्रत तप शुभभावनायुक्त जप करे जेसा भद्रबाहू स्वामीने नवग्रह शांतिस्तोत्रमें लिखाहे उनके वर्ण जेसाही अनाथ दीन दुःखीयोकों दान करे ग्रहोके आम्नतीये वणके जो पोरषभी भिक्षा- की ठगाइ करे उनोंसें सावचेत रहे उरभी जो संसारी कार्य साधनके अनेक शास्त्रहे उसकूं सुणता उर पढता हुवा हंश जेसी तत्वबुद्धि हेय ज्ञेयपणा करे उपादेयतो सर्वथा प्रकारे आप्तका वचनरूप शास्त्रहे सोही करे नंदी सू- त्रमें लिखाहे मिथ्याश्रुत सम्यक दृष्टि वांचे तो सम्यक शास्त्र होके परिणमे उर सम्यक शास्त्र मिथ्या दृष्टी वांचे तो ॥ मिथ्यात्वमंडपरणमें यदुक्तं नीतौ ॥ उपदेशोहिमूर्खाणां प्रकोपायन

शांतये ॥ पयपानभुजंगानां केवलंविषवर्द्धनं ॥१॥ मूर्खकूं उपदेशनिश्चे करके क्रोधकेवास्ते होय शांतिकेवास्ते नही जेसें अमृतरूप दूध सांपकूं पिलाणेसे निकेवल जहरकूंहीवधावे एसा जाणना जेनोक्त शास्त्र आचार्योंके रचे सब तरेके मोजुदहे वणे जहांतक उनकाही परिचय करे तो मिथ्यात्व नही वधे सब पुरषोकी बुद्धि हंस जेसी नही जेसे कहाहे ॥ कुसंगासंगदोषेण काष्टघंटा विटंबना ॥ अगर सम्यकतत्व जिसकूं पहली प्राप्त होगयाहे एसोकी बुद्धि कुसंगसें अस्तव्यस्त नही होती हे जेसे कहाहे ॥ हीयोहोवेहाथ कुशंगीकेतामिलो चंदनभुजंगासाथ कालोना होयकिसनीया ॥ १ ॥ सुसाधू पंडित चतुरों की संगतही श्रेष्ट हे ॥ कहानहोयसत्संगसे देखोतिलउरतेल जातिवर्णसबमिटगयो पायो नाम फुलेल ॥ १ ॥ अब खेती तीन तरेकी होती हे एक तो बरसाद के जलसें होणेवाली दूसरी कूवा नदी तलाव वगेरोंके जलसें तीसरी दोनोके जलसें होणेवाली गाय भेंस ऊंठ घोडा बकरी बलद हाथी वगेरे जानवरोंके पालणेंसें जो आजीविकाकरणी सो पशुरक्षा वृत्ति कहलातीहे वो जानवर बहोत

तरेके होतेहे खेती अर पशुरक्षा वृत्तिसें आजी-
विका करणा विवेकी पुरुषोंके लायक नही
कहाहे हाथीयोंके दांतोंमें घोमोंके खुरोंमें राज्य
लक्ष्मीहे बलदोंके खंधोंपर खेमूतोकी लक्ष्मीहे
तरवारकी धारपर सुभटोकी लक्ष्मीहे सज्जे अर
शिणगारे हुये स्तनोंपर वैश्यायोंकी लक्ष्मी रहती
हे कदास कोइ उसरी आजिविका नही होय
अर खेतीही करणी पमे तो वोणेका समय
बराबर ध्यानमें रखणा तेसेंही पशुरक्षा वृत्ति
करणी पमे तो मनमें बहोत दया रखणी कहाहे
जो करषणी बीज वोणेका समय जमीनका नाग
विचार किसमें केसा पाक आवे एसा विचार
जाणे रस्तेके ऊपर खेत होय सो गेरू देवे
तब लान होताहे धनके वास्ते जो पशुरक्षण
करता होय तो दयाके परिणाम गेमणा नही
खसी करणा नाक बींधना आप जाग्रतपणे
करके अविच्छेद वर्जना अब शिल्पकला सो
जातकीहे कुंनार मुतार लुहार चित्रकार अर
वस्त्रकार इन कारीगरोके एकेक पेटेके वीस २
नेद गिणणेसें सो होतेहे अर न्यारे २ कारी-
गरोकी गिणतीसें शिल्पके अनेक नेदहे आचा-
र्यके उपदेशसें होणेवाली शिल्प कहलातीहे

मुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुकमसें चलता आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये बाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहें पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहे कर्मोका सामान्यसें चार प्रकारहे बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें बोझा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहें चंपा नगरीमें मदननांमे धनसेठका लडकाथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसों रुपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लडते होय वहां खडा रहणा नही जब मित्रोने ये वात सुणी तो मस्करी करणे लगे बापनेभी उलंभा दीया तब मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा पीछी देणेकूं गया तब बुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कबूल करे जहां दोजणे लडते होय वहां खडा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कबूल करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमे लडतेथे मदन वहां खडा रहा आ-

खिर उन दोनोनें मदनकूं गवाह वनाया उर कहा जो मेरी गवाइ नही भरेगा तो तेरी खबर लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने बापसें कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पोलिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया बापने देखा छोकरेकूं ये दुष्ट मार नाखेंगें घबराकर उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख रुपे लूंगा बचादूंगा तब सचहे मरता क्या नही करता तब वेसाही दिया उस बुद्धिवानने उसकों सिखाया तूं पागलपणा पहलेहीसे करणे लगजा एसेंही कीया करणेंसें बचगया एसाही हाल इस वखतमें बडे २ अंग्रेजी पढे हुये वाल्स्टरोका देखणे उर सुणणेसे आताहे इसकों बुद्धिका कमाणा कहतेहे इसवजे बुद्धिवानीके मुजे अनेक दृष्टांत यादहे लिखनेसें ग्रंथ वढजायगा ज्यादे देखणा होय तो अभयकुमार रोहिक वगेरोके चरित्रसें जाणना जिसमें मति ज्ञानसंबंधी च्यार बुद्धि होतीहे सो उत्पातकी १ वैनेयकी २ काम्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो अदमी वखत पडनेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहे आगूंके तो नालिक वचन एसें सुणनेंमें आतेहे अग्रिम बुद्धिवणिकजन पिछल बुद्धिविप्र सदा

सुबुद्धिसे बमा तुरतबुद्धि तुर्क १ लेकिन् कोइ अपेक्षा आछी कोइ इनोंमे किसी क्षेत्रमें होवे तो ताजबनही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम उर संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य्य उर शौर्य सर्व आछी अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें जितनीही थोमीहे एसाहे तन्नी तो नारतके तीन खंमके बादस्याह वणे हुये विजय मंका बजा रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसें खूब निश्चय मालम देताहे इस आर्यावर्त्तवालोमें ये सब बातें पाये जातीथी अगर फेरन्नी विद्याका पठन पाठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर लिखी सब बात होणी मुसकिल नही अंगरेजोने जोजो काम हासिल कीयाहे सो विद्याबुद्धिके उद्यमसेही पायाहे पारलामिन्ट सन्ना जो आज विद्यमांनमे इंगलिस देशमे लंदन राजधानीमेंहे ये बात नइ नहीहे राजा श्रेणकके राजगृही नगरीमेंन्नी पांचसे प्रधानोकी कौशलसन्ना जिसमें मुख्य मंत्री राजाका पुत्र नंदानामकी वैस्य जातकी राणीका अंगजात च्यारोंही बुद्धिका धरणेवाला अन्नय कुमारथा व्यापार तेसें शिल्पवाले लोक हाथसें कमाणेवाले जांणना हलकारे चपरासी कासीद वगेरह पगोंसे कमा-

पेत्राले जांणना बोज उठानेवाले वगेरे लोक सिरसे कमाके खातेहे अब नोकरीनी च्यार तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजोंके अमलदार लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सब जातिवालोंकी राजाकी नोकरी रातदिनपर वसता जोगणी पमणेके कारण हरकिसीसे बण आणी मुसकिलहे सोही वतलातेहे अगर नोकर बोले नही तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला जवाब देता हुवा बोलेतो बकवादी कहलावे जो नजीक बेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर बेठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते योगी लोकनी जिसकूं नही जाणसके एसा सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी वढोतरीके वास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-वास्ते प्राणनी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते दुखी होय एसे नोकरी करणेवाले आदमी जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो श्वानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसेंनी नोकरी बुरी कुत्ता तो पूंछसें खुसामंद करताहे

गुण विगर नोकर नपूंसक जांणना राजाप्रसन्न होय तो चाकरकूं मांन उंर बमाइ देताहे लेकिन चाकर तो राजाकेवास्ते अपणा प्राणभी देदेतेहे नोकरोकूं एसा विचार करणा चाहीये मनुष्य एसा चतुर उंर साहसीक होताहे सो सांप सिंघ हाथी एसे २ जांनवरोंकूं वसकर लेताहे तो राजाकूं वस करणा क्या बमी बातहे अक्लवंतोकों मालक केवांये तरफ बेठणा मालकके मूंके तरफ देखणा हाथ जोमणा मालककी तासीरकों पहचानकर काम करणा नोकरोंकों याद रखणा चाहीयेकी दरबारकी सभामें वहोत नजीक नही बेठे बहोत दूरभी न बेठे मालकके बराबर आसन नही बेठे ज्यों उंचाभी नही बेठे तेसे आगे बहोत नजीक तेसेंही पिछामीभी नही बेठे नजीक बहोत बेठे तो मालककूं बुरा लगे दूर बहोत बेठे तो बुद्धिहीन बजे अगामी नजीक बहोत बेठे तो दुसरेकूं बुरा लगे उंर पिछामी बेठे तो मालककी नजर नही पमे इसवास्ते हमने लिखा उस वजे बेठणा मालक अपना थका होय भूख प्याससें पीमित होय क्रोधमें होय कोइ कांममे रुका हुवा होय उस वखत कोइ अरज दुसरी करणी होय तो

नहि करे उसीमोकेकी बात होय उर नही अरज करणेसें आगे विगाम होणेका कांम होय तब बहोत आजीजीसाथ बात वाकब कर देवे जेसें गुमानसिंहवेद प्रधान सुगनकुवर पारवती-जी पमदायतकी लमकीका देहांत होणेसें वी-कानेरके नृपति राठोम सिरदारसिंहजी जब दसराहेकी सवारी तथा भोजन कीया नही तब वमे शोकातुरोंकों हेतुयुक्तियोसें समझाकर राज्यकार्य करवाया पीछे राजा साहिबनें उस प्रधानकी बहोत तारीफ करी अगर मुझें नही समझाता तो उर राजपूतोमें मेरी लघुताइ मालम पमती के वीकानेर महाराज पमदाय-तकी संतानवास्ते दसराहा नही कीया कारण रामचंद्रकी दिग्विजय लोकीकमें दसराहेकी मांनतेहे तबहीसे राजालोक दसराहा करणा सरू कराहे राजालोक इस दिनकूं वमा मंग-लीक गिणतेहे इसीतरे अपणे मालककूं सम-झणा चाहीये इसीतरे राजाकी माता पाटराणी कुमर मुख्य मंत्री राजाका गुरु उर द्वारपाल इनोके संगभी राजाकी तरेही वर्त्तावा रखणा जेसे कोइ अक्कलहीण एसा विचारे इस अंगा-रकूं मेने सिलगाइहे अथवा मेंही लायाहुं सो

मुझे ये बालेगी नही एसा समझके अग्निसे आ संगतपणा करे तो क्या अग्नि बालेविना छोडे तेसेंही विचारे मेनें इनको हिकमतसें राजदिलायाहे एसा समझके जो राजाकी अवज्ञा हुकम अदूली करेगा अंगली राजाके लगावेगा तो राजा विगर सजा दीये नही रहता इसवास्ते जेसें वो प्रसन्न रहे रूठे नही एसा चलणा किसी अदमीको राजा वहोत मानता होय तो दिलमें गर्व नही करणा कारण वहोत अहंकार विनासकर देताहे इसपर एसा दृष्टांतहे दिल्लीके बादशाहका बडा वजीर मनमें एसा समझणे लगाके ये रासत मेरेही आधारसें चलतीहे ये गर्वकी वात उस वजीरनें किसी उमरावके सामने करी वो वात बादशाहतक पहुची बादशाहनें उसकी वजीरायत उतारकर एक मोचीके सुप्रतकरदी वो सही करणेकी जगे लोहकी वींधणी जो मोचीयोंके जूते सीनेकी होतीहे उसकी करता मतलब राजा जिधर नजर करे उससेही काम लेकर उसकूं वधा देताहे केयोकों वधाया उर वधातेहे राजाके प्रसन्न होणेसें एश्वर्य वधना कोण बडी बातहे सांगेका खेत दरियाव अपने कुटंबका

भरण पोषण जीवोंकी प्रतिपालणा उर राजाकी महरवानी इतनी चीजें तुरत दरिद्र दूर कर देतीहै विक्रम संवत उगणीससें चोदेकी गदरमें जिनोंने बडे २ अंग्रेजोंकी ज्यान बचाइ वो अभी दलद्र त्यागके बडे २ ऋद्धिवंत विद्यमानहै सुखकी चाह करणेवाले एसे अभिमानी लोक राजा वगेरोकी नोकरीकी बेलासक निंदा करो लेकिन् राजाकी नोकरी विगर स्वजनका उद्धार उर शत्रुउंका संहार होताही नही कुमारपाल राजा भागाथा तब वो सिर ब्राह्मणने सहाय दीयाथा जब वखत पाके पीछा राजा हुवा तब उसी वखत उस ब्राह्मणकूं लाट देशका राजा वनायाथा जित शत्रु राजाका पोलिया एक वखत राजाके सांपका उपद्रव दूर कराथा उस राजाके लडका नहीथा अंतमें उस देवराज द्वारपालकूं राज्य देकर राजाने जैन दीक्षा लेकर सिद्धिपदपाया मंत्रवी नगरसेठ सेनापती वगेरोका सब काम राजाकी नोकरीमें समा जाताहै मंत्री प्रधान वजीर प्रमुखका कांम व- होत पापमईहै उर फजभी कमवाहै वणे जहां- तक श्रावककूं वर्जना चाहीये कह्याहै जिस अदमीके जो अधिकार सुमत कीया जावे उ-

समें वो चोरी कऱ्याविगर रहे नही जेसे प्रभु-
दान जोसीकूं जोधपूरके राजा मानसिंगजीने
कहा एसा कोइ आदमी ला सो काम सुप्रत करे
लेकिन् खावे नही तब अरज करी कललाऊंगा
डुसरेदिन सोनेकी म्बीयांमें सालगराम नांमका
गंम्की नदीका पत्थर मालके लेगया राजाने
कहा प्रभुदांन वो अदमी लाया या नही प्रभुदांन
बोला हाजरहे आप एकांतमे पधारें एकांतमे
लेजाके सालगराम दिखलाया राजा बोला ये
क्याहे प्रभुदांननें अरज करी गरीब परवर कल
आपने फरमायाथा खावे नही एसा कामेती-
लाणा तब मैंने वहोत तलास कीया सो पेट
सबके नजर आया जेर पेट होगा सो खाये
विगर रहेगा नही आखिरको सालगरामजी
एसे मालम दीये सो इनके सामने जो कुछ
धरा जावे कुछभी खावे नही आपके हुकम
मुजब हाजर कीया इस दृष्टांतसें एसा पाया
जाताहे सो अपणे १ कसबके सब चोरहे न्या-
यवंततो हक्क खाताहे वे हक्क नही खाताहे
हक्क खाणेसें बरकतभी वहोतहे इसवास्ते हक्क
खाणेवालाही श्रेष्ठहे लेकिन् डुनियांमें आज-
कल जूठका रुजगार फेल गया सच्च बोलणे-

वालोंके फाके पड़तेहे इसपर कबीरजुलाहेका दृष्टांतहे जेसें कबीर जुलाहा प्रायें विवहारीक झुठ कम बोलताथा पगड़ीवणाके बाजारमेवेचणेगया असलीदांम पांचरुपेकहे सबदिन फिरा किसीने तीन किसीनेसाढेतीन च्यारसें आगे नहीवढा पूंजीमेंभी घाटा पड़े जांण वेचा नही जब मकानपर आया कबीर संग्रह नही रखताथा लाता तो खाता पूंजी काय मरखताथा दूसरे दिन उस पूंजीकाही सूतलाके वेजावणता रातकूं भूखा रहा तब किसी पड़ोसणीने ये बात जांणके शिक्षादी उर कहा कबीर तेंने एनमोल क्यों बताया सात रुपे कहनेसें दुनियांमें नफेके संग पघड़ी विक जाती कबीर दुसरे दिन वेसाही कीया तब वोही पघड़ी छव रुपेमें दुसरे दिन विकगइ तब कबीरने घर आके एक दुहा कहा॥

दुहा—साचेजगपतियायनही झुठेजगपतीयाय॥
पांचरुपेकीपाघड़ी छवरुपयेविकजाय ॥१॥

इस वजेका झुठ वरतावा हमारे देसवालोंनें अपणी पत गमाणे उर ये भव उर परभव विगाड़नेकों कर रखवाहे सच्चा बोलणेका विवहार सवसें उत्तम उर वरकत करताहे इस भवसें पेल परभवमें गुनाहसें बचाणा वाले मदद

दिल्ली लखणेउ आगरा कासी जेपुर आदिके व्यापारी एक रुपेकी चीजके बूटतेही दसरुपे कहतेहें लेणेवाला कहांतक घटायगा क्या ये गुप्त पुन्य नहीहे सिरप दिलराजी करतेहे इहां वरकत नही आगूं फल खोटेहे झुठहो चाहे सचहो लेकिन् अंगरेज व्यापारीयोंकी ये सत्यता वर्मीही जारीहे सो अपणे हाफस तथा सापोंमें जिस चीजका जितना दांम कहतेहे उतनाही लेतेहे चाहेवालक जावे चाहे वृद्ध हमारे देशके व्यापारीयोकों ये अक्कल कब आवेगी श्रावककूं चाहीये सर्वथा प्रकारे राजकाज नही छोडसके तो कोटवालीका उहदा जेल अप्सरता सीमापालपणा महापापका कारण समझके निर्दई आदमीसें वणे एसाहे वंणे जहांतक इनोमें त्यागका प्रयत्न करे कारण ऊपर लिखेये हुदेदार पटेल चोधरी किसी आदमीकूं सुख कमही देता होगा अपराधीकूं सजा देणा तो राजाका धर्महे लेकिन् इन लोकोके सपाटेमें वाजे निरापराधी सुपात्रोंकीभी दुर्दसा होजातीहे जब वो कसूरदार नही होवे तब तो सजा देणेवाला केसा पापी ठहरताहे हमने कइवार सुपात्र उंर बेकसूरदारोकी

दुर्दसा देखीहे कसूरदार जिसका नाम लेवे वो निरापराधीभी इन ये हुदेदारोंके हाथ सजा-पातेहें इसवास्ते दयावंतको एसे कामोंसें वंच-णा चाहीये राजकाजके सबयहुदे ज्यादे करके फिकरकी जग्हे जो कभी राज्यका अधिकारी श्रावक होय तो जेसें वस्तपाल तेजपाल विमलमंत्री प्रथ्वीधरकी तरें दुनियामें अच्छी कीर्त्ति होय एसे काम चलाणा अभी जैपुर राज्याधिपती सवाई रामसिंगजीके सांमने वीकानेरका गोलछा माणकचंद अश्वपतिने जेसी धर्मकर्म ओर नियम निभाया साधर्मीयोको आजीविका सर लगाया इतना राज्यकार्यके कारण थोमा वखत मिलणेपरभी जिन पूजा पमावस्यक कीये विगर अन्न जल नही लेताथा जो आदमी पापमइ राज्यका-जकी हुकमत पाकर सुकृत नही संचतेहे तो वो अदमी क्या लेजायगें क्योंकी राजाकी महर-वानी नित्य वणी रहेगी एसा जाणकर किसीसे वैर विरोध करणा नही राजा अपणेकूं कोइ काम करणा सोंपे तो राजाके पास ऊपराऊ-परी मनुष्य मांगणा चाहीये वणे जहांतक स-म्यग् द्दष्टी राजा श्रावकहीकी नोकरी करणी

दृष्टियुग्मंप्रसन्नम् वदनकमलमंकः कामिनीसंग-
शून्यं करयुगमपधत्ते शस्त्रसंबंधवंध त्वमसिजग-
तदेवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ ऐसा कहकर
यतनके साथ निर्जीव जमीनपर शुद्ध जलसें स्ना-
नकर केशर चंदन कर्पूर कस्तूरी घसकर चोपमत
वस्त्रसें मुख उर नाककी वाफ बंधकर सुदर्शन
तिलककरके उत्तरासण धारकर पूजा विधीसें
पूजा करणेलगा तब उाने हलकारे जो खबर
निवेशीयोकूं राजा इस वातकी खबर लेणे भे-
जेथे उनोनें सब अहवाल हजूरमें मालम करदी
जब पीछामीसें मंत्री द्रव्य पूजा विधीसे करचू-
का तब भावस्तवमें एसें स्तुति करी ॥ त्वाम-
व्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यंब्रह्माणमीश्वरमनंतम
नंगकेतुं योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं ज्ञानस्व-
रूपममलंप्रवदंतिसंतः ॥ १ ॥ बुद्धस्त्वमेवविबुधा-
र्चितबुद्धिबोधात् त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात्
धातासिधीरशिवमार्गविधेर्विधानात् व्यक्तंत्वमे-
वभगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥ आवस्सही पाठ
कहकर मंदिरसे निकलकर राजाके पास पहुंचा
राजाने पूछा क्या तुम देवपूजा कर आये
मंत्री बोला जी हजूर राजानें पूछा कोनसे
देवकी पूजा करी हमने तो सुणी के नंगे

देवकी मंत्री पूजा कर रहा हे तब मंत्री बोला हजूर आपने कल हुकम दीयाथा देवकी पूजा कल तुम कर के आना सो हजूर जिसमें देव पनेके लक्षण मिले वहांही पूजा करी कुदेवो का नाम लेकर आपने कहा नही था तब राजा बोला तुम किस २ जगे गये क्या क्या कीया देव कुदेव क्या बात हे सो बतलावो जब मंत्री बोला स्वामी नंगा वो कहलाता हे जो की आपके स्कंदपुराणमें लिखा हे जो देव नाम धरा के ऋषीयोकी स्त्रीयोकूं देख कर काम के वस अंधा होकर नग्न होकर नाचणे लगा तब तापस लोक एसी कुचेष्टा देखकर क्रोधमें आकर श्राप दिया अरे पापिष्ट तेरा लिंग टूट पडे तब लिंग कट कर गिर पडा उस लिंगकूं जगमे स्थापन कीया हुवा निर्बुद्धि लोक केइयक गलेमें पहना करते हे केइयक पूजते हे इस्से ज्यादा नंगाफेरकोन होगा सो साक्षात्कार उघाडा नग उर लिंग कटा हुवा पूजते हे स्वामी एसी कामकुचेष्टा कारक कों कोण बुद्धि वान देव तारन कह सकता हे हे स्वामी मेनें तो जिसवीतरागकी पूजा करी सो जिसके कोइतरेका कामकुचेष्टा अथवा नग्न पनेका

दृष्टियुग्मंप्रसन्नम् वदनकमलमंकः कामि
शून्यं करयुगमपधत्ते शस्त्रसंबंधवंध
तद्देवो वीतरागस्त्वमेव ॥ १ ॥ एसा
यतनके साथ निर्जीव जमीनपर शुद्ध ज
नकर केशर चंदन कर्पूर कस्तूरी घसकर
वस्त्रसें मुख उंर नाककी वाफ बंधकर
तिलककरके उत्तरासण धारकर पू
पूजा करणेलगा तब छाने हलकारे
निवेशीयोकूं राजा इस वातकी खबर
जेथे उनोनें सब अहवाल हजूरमें
जब पीछमीसें मंत्री द्रव्य पूजा विध
का तब भावस्तवमें एसें स्तुति करी
व्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यंब्रह्माणम
नंगकेतुं योगीश्वरंविदि
रूपममलंप्रवदंतिसंतः ॥ १ ॥
र्चितबुद्धिबोधात् त्वंशंकरो
धातासिधीरशिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यनगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥
कहकर मंदिरसे निकलकर राजाके
राजाने पूछा क्या तुम देवपूजा
मंत्री बोला जी हजूर राजानें
देवकी पूजा करी हमने तो

नीतिमें लिखाहे भलाआदमी वोहीहे जोपरा यापरदा ढके इसवास्ते हेराजेंद्र पूजनीकपुरष होके एसी कुचेष्टा कर्मोंके वसकरनेलगजावे तव मेनें परदा ढकदीया पहरा इसवास्तेविठ लाया सो डर कोइ भूलके चलाजावेगा तो इनोकी लज्या जावेगी उहांसे देवीकेगृहमें गया तो उहां एसादेखनेमें आया वोचंभी किसी अदमीका खूनकीयाथा सो उसकामस्तक खून झरता हुवा हाथमें लेरखवाथा इसवास्ते स्मृती योंमेंलिखाहेकी खूनीको गिरफ्तारकरना फेरएसा हालदेखनेमेंआया एकआदमीकूं नीचापटक रक्खाथा उसआदमीका लिंग उसदेवीके भगमें लगाररखवाथा उसलिंगकी जोरसे देवीकी जीभ वाहिर निकलपडीथी सब हाथोमें नंगे शस्त्र लेर-खाहे चाणक्य नीतिशास्त्रमें लिखाहेकी ॥श्लोक॥ नदीनां च नखीनां च शृंगीणां शस्त्रपाणिनां विश्वासो नैवकर्त्तव्य स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १ ॥ इसवास्ते क्याभरोसा खुनीका डरभी किसीकूं मारनाले इसवास्ते राज्यनीतिके कायदेके माफक केदकर नंगीतलवारका पहरा लगवादिया अव हजूरके दिलमें आवे सोकरे मेंतो कायदेकी कारवाइ करणेवालाहूं उहांसे आगे गजाननके

गृहमें गया तों हाथी बेठा देखा मेने विचारा इनोंके लायक पूजा चरणेकेवास्ते सांठोकी कम बसे ज्यादे क्याभेटधरुं कारण लोकीककहना वटभीहे के देवजेसीही पूजा. लेकिन एक बमीही ताजबकीबाततो येदेखी के इतनामोटाहाथी जिसकेचढणेको चूहा येविचारा केसेंउठासकता होगा कोइकहेगाकी येचूहाभी बलवानथा तो क्या विनायकसेंभी ज्यादे बलवानथा या कम कारण प्रत्यक्षमें देखतेहे मनुष्यकूं उठानेवाले जानवर मनुष्यसें बलवानहोतेहें जब गजानन से बलवानथा तबतो उंदरसेंभी निर्बल गजानन ठहरा दूसरे हेराजेंद्र आपनें कभीगणेशपुरा णभी सुना होगा जिसमें विनायककी उत्पत्ति इसतरेसें लिखीहे पार्वती उमा एकदिन पीठी करके अंगकामैलऊतारकर एकमैलका पुतलाबना कर उसमें ज्यांन मालदी जबवो हाथजोमकहने लगा हे माता क्या हुकमहे तबपार्वतीबोली में स्नानकरतीहूं तूं पहारादे किसीकूं अंदरमतआनें देना पार्वती नग्नहोके स्नानकरनेलगी इतनेमें भांगधतूरा मद्यमें मस्त एसा महेश्वरआया उस- विनायकनें उसकूं रोका तब दोनोके आप समे युद्ध हुवा तब रुद्रने त्रिशूलसें उसका सिर काट

भाला और अंदर चलागया पार्वती लज्जितहोकर वस्त्रसे अंग ढककर क्रोधमें आके त्रटककर बोली तुम एसें अचानक एकाएक केसें आगये मेंनें पहरा बिठलायाथा उसके रहते आप केसें आये महेश्वर बोला में उसकूं मार आया सुणतें ही पार्वती हाय २ कर रोणे लगी और रुद्रकूं कहा तूं मुजे मुं मत दिखला तब लाचार रुद्र हाथ जोमके बहोत अरजी ओर आजीजीसें कहणे लगा हे सुंदरी तेरा वियोग दुःखसे में महादुःखित तेरे दासके तरफ जरा कृपाकटाक्ष-कर जो अज्ञानपणेसें अपराध हुवा सो माफ कर मेंने नही जाणा के ये तेरा पुत्रहे एसा कहकर पार्वतीकूं प्रसन्न करणेकूं नाचणे लगा तब भवानी बोली मेरे पुत्रकों जीता कर नही तो तेरेसें मेरे कांम नही तब महादेव तीन लोक ढूंढ लीया लेकिन उसके सिरका पता नही मिला तब देवीके कहणेसें किसी हाथीका कटा हुवा मस्तक लगाकर जीता कीया इति गणेशोत्पत्ति । खेर हे राजेंद्र दुक जरासी बातपर उक्त देवोंके चरित्रसें आप तो बुद्धिवांनहे क्या अद्भुत कहा-नी पूजनीक गणेश और महेश्वरकीहे लगा नाजब एक और सुणो जब पार्वतीका विवाह

पहली हुवा तब गणेशकी पूजा करीथी ये वात सिवपुराणमें लिखीहे ये गणेश कोणसा था जो कभी ये कहोगे वो आदि गणेस दुसराहे तो फिर एसें मैलके पूतलेकों दुनिया क्या समझके पूजतीहे जो महादेवके विवाहमें पूजा गया वो केसी सिकलवाला था उर उस गणेशका चरित्र केसाहे आप जांणतेहें कभी सुणाहे राजाने कहा नही खेर फेरमें रुद्रके गृहमें गया तब तो मुजें एसा आश्चर्य हुवा हजुरने मुजें पूजापेका सामांन दीयाहे सो विना गलेविना पुष्पकी माला कहां पहराउं नासिका विना सुगंध द्रव्य धूपादिक कहां उखेवुं कांन विगर गीतादिक स्तुति किसकूं सुणाउं विना पांव नमस्कार किसकूं करुं इसवास्ते हे राजेंद्र इसतरेसें देवके लक्षण विहीन कहणे मात्र देवाभास तब मेनें आप्त मीमांसासें ईश्वरकूं पहचाणकर पूजा करके हजूरका हुक्म बजाकर ताबेदारीमें हाजर हुवा राजा उसी दिनसें धर्मकी खोजमें लगा थोमेसें. दिनोंमें दृढ सम्यक्त व्रतधारी श्रावक होगया कारण बुद्धिवान उर परीक्षावंतोको असली तत्व तुरत हासिल होताहे श्रावक प्रधान चंद्रदत्त जेसा होणा सो स्वामीके हुकममें चलता

हुवा धर्मकी प्राप्ति राजाकूं करदी इसी तरे जो कभी अपणा निर्वाह किसी सम्यक् दृष्टिवंत समकितीके घर थोमेमें होता दीखे तो वणे जहांतक धर्ममें हरजाणा पोहचाणेवाला मिथ्या त्वीकी नोकरी नहि करे अब भिक्षासें आजी-विका किसतरे जीव करतेहें सो कहतेहें भिक्षा मांगणा गृहस्थीकूं किसीभी तरे योग्य नही लेकिन् आफत् काल वहोत बुरा होताहे सोही कबीरके लमकेने कहाहे ॥ भूखसें कामनी काम तज देतहे भूखसें पुरष तज देत नारी भूखसें व्याव ठर यज्ञ रहजातहे भूखसे रहे कन्याकु-मारी भूखसें पुरषका तेज घटजातहे भूखसे दंभीकी बुद्धहारी कहतकबीर कमालका वालका वेदवेदांगसे भूख न्यारी ॥ १ ॥ इसवास्ते इसके वस लाचारीसें भीख मांगणी किसी कारणसे पमनी हे प्रथम तो इस कांमकूं श्रावक आदरेही नही ये भिक्षा सोना धातु वगेरह अनाज वस्त्र इत्यादिक चीजोकी अनेक तरेकीहे वो भिक्षुक तीन तरेकेहें उसमें सर्वसंग परिग्रहके त्यागी मुनिराजकी जो भिक्षाहे सो धर्मकेवास्ते काया रक्षणार्थहे आहार १ वस्त्र २ काष्टपात्र ३ उप-धी ४ आदि भिक्षा उचितहे मुनिराजकूं ये भि-

क्षा कल्पलतासमान संसार समुद्रसें तारणे-
वालीहे इस भिक्षुककूं देव ओर नरेंद्रभी नम-
स्कार करतेहें वाकी सब तरेकी भिक्षा लघुता
उत्पन्न करणेवालीहे सोही बतलातेहे ॥ श्लोक ॥
देहीतिवाक्यं वचनेषुनिष्टं नास्तीतिवाक्यं ततः
कनिष्टं ॥ गृहाणवाक्यं वचनेषुराजा नेच्छामि
वाक्यं राजाधिराजः ॥ १ ॥ दे एसी जुबान
बहौ हलकीहे लेकिन् नही एसी जुबानसें कहणा
उससेंभी हलकाहे लीजीये एसा जो कहणाहे
सो राजा वचनहे नही चाहीये एसा जो क-
हणाहे सो राजाधिराज वचनहे १ जहांतक
संसारी मनुष्य दो एसा कहे नही उहांतक
रूप लज्या गुण ओर सत्यता कुलवंतपणा ओर
मान रहा हुवाहे दुसरी चीजोसें तृण हलकाहे
रुई उस तृणसेंभी हलकीहे लेकिन् याचक तो
रुईसेंभी हलकाहे तब किसीनें शंका करी के
रुईसेंभी हलकाहे तो याचककूं हवा क्यों नही
उडा लेजाती तब कहते हेमित्र पवनके दिलमें
इसवास्ते शंका पेदा भई के जोमें इसकूं ले
जाऊंगा तो स्यात् मेरे पाससेही कुछ मांगन
बेठे ओर शास्त्रोमें एसाभी लिखाहे बहोत दि-
नोतक विदेश रहणेवाला नित्त पराया अन्न

खाणेवाला नित्त परघर सोणेवाला इन तीनोंका जीवतव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीमें इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने बेफिकर हीया शून्य बहुत खाणेवाला आलसु उर बहोत निद्रालू तेसेंइ भिक्षावृत्तिवालेके प्राये तो धन होताइ नही जो कदास कुछ होजाय तो वो भिक्षुक उस द्रव्यका उपभोग नही ले सकता न भिक्षाके धनसें बरकतहे विद्यमानकालमें भिक्षासें द्रव्यपात्र श्रीमाल ब्राह्मन दृष्टिमें केइयक आतेहे लेकिन् ये लोक सब जन्म अपणा मांगणेसेही गमातेहें सांझतक जीमणाके नोहतेकी वाट देखा करतेहे कभी भाग्ययोग निहुंता नही आवे तो ब्राह्मणी नवन्यामतबणाके पुरसें तो कहताहे आजे तो अमे विष खाधूं छे एकदिन एक श्रीमालीब्राह्मण उर ब्राह्मणी आनंद प्रमोदमें वाते २ करते २ ब्राह्मणी पूछणे लगी जोतमे नगरीना राजा थइ जाउ तो सूं सूं करो ब्राह्मन बोला अमे राजा थइ जइये तो नूंतरो जमी २ ने वलि जमीये परंतु तमे नानानी मा राजानी राणी थइ जाउ तो सूं सूं करो ब्राह्मणी बोली अमे राजानी राणी थइ जइये तो गोबर थापी २ने बलि थापीये एसाही

हाल हमारे विद्यमान समयमें हुवा हे सो लिखतेहे जोधपुराधीस तखतसिंहजीके पास हरकरण नाजर जातिका श्रीमाल ब्राह्मणथा बहोत राजाके माननीय था उसने चाहाकी मेरे भायोंकी इज्जत वधाऊं हजूरसें अरज करणेपर राजा साहिबने उसके भाईकूं बुलाके सिरपाव देकर हुकम दीया जालोरगढकी हाकमीका फुरमांण पत्र लिख दीया जावे लिखदीया नीचे गढसें उतरकर जब फुरमांण पढा तब तो वभा-ही उदास होकर पीछाही हजूरमें गया ओर हाथ जोड़ कहणेलगा आहजूरे सूं कीधूं अमा-रो मांन तेसूं राख्यूं हजूर बोले क्या हुवा ब्रा-ह्मण बोला गजबनीवात अमारो पेटीयो या फुरमांणमें केम नही लख्यो राजा वगेरे सब सभासद हसणे लगे हरकरणकूं राजा साहबने कहा तेरा भाइ निर्भाग्यहे तब अश्वपती दिवान विजेसिंघजी बोले गरीबपरवर सिंहणीका दूध जोमुलककी हाकमीये राज्यपदस्थ कोइ अश्वपति राजन्यवंसी सांभणेका पात्र होताहे ये भिक्षुक भिक्षा सिवाय इसवातकूं क्या जाणे तब हजूरने च्यार पेटीये सरू करवा दिये इस दृष्टांतकूं देखके समझ लेणाकी निकेवल पोरपघ्नी भिक्षा

मांगणेवालोंकी बुद्धि केसी होतीहे श्रीहरिभद्रा-
चार्य पांचमें अष्टकमें तीन प्रकारकी भिक्षा लि-
खीहे सर्व शंपत्करी १ पौरषघ्नी २ और वृत्ति-
भिक्षा ३ इसतरे तीन प्रकारकी भिक्षा लिखीहे
गुरुकी आज्ञामें रहे हुयें धर्म ध्यांन वगेरे शुभ
आचरणमें प्रवृत्तमांन याने जावज्जीव सर्व आरंभसें
निवृत्ती प्राप्त हुये एसे यती साधूकी भिक्षा सर्व
शंपत्करी कहलातीहे १ अब दुसरी पोरषघ्नी
भिक्षा कहलातीहे सो ज्ञांन और व्रत शुभक्रि-
यारहित नांममात्र जती जिनोके पास शुद्ध
जतीवेषभी नही धर्मकूं कलंक लगे एसी चाल
चलणेवाले जो श्रावकका कोईभी कांम साधने
लायक नही ऐसों पुरषोकी भिक्षा पुरषार्थकूं
नाश करणेवाली पौरषघ्नी कहलातीहे इनके भेद
औरभी एसेंइ खटदर्शनी दस नांमके सामी
ढूंढी गुसांइ योगी कबीरी दादू नानकके उदासी
निर्मले गरीबदासी रूखड़ सूखड़ अनेक कि-
स्मके भेषधारी सतज्ञांन और क्रिया करकेहीन
विषयलंपट गांजा चिलम चड़स फूंकणेवाले
व्यर्थ घूमणेवाले धूणीमें लाखों जीवोका घम-
साण करके तपसी वजणेवाले जो लष्ट पुष्टपणों
भीख मांगके खातेहे वोभी पौरषघ्नी भिक्षा कह-

खातीहै नामके परमहंस परिव्राजकाचार्य व
वाले ओर परमहंसके एकभी लक्षण जिनोंमें
रसोइकराके खाणेवाले खुमताल लगे अंग्रे
बूंट पहिरणेवाले चूट्टा बीभी मद्यादिके पीणे
द्रव्य रखणेवाले अनार्य देसकी आबहवामा
खांनपांन करते हुये उपदेश देते हुये व
वागाडंबरके जालमें सरल जीवोकों सत्य स
तन धर्मसें भ्रष्ट करणेवाले ओर फसाणेवाले
दाकराके द्रव्यग्रंथी संचणेवाले एसे मिथ्या
जो धर्माचार्य नांमधराके जो भिक्षा मांगतेहै
पौरषघ्नी भिक्षाहै ब्रह्मकर्म वर्जित कारटीयोंकी
मरे मुरदेकूं पोहचेगा एसी ठगवाजी धोरे
एसा दांन लेणेवाले गृहोके आप्तीये इश्व
आप्तीये बणाकर अणपढ भोले लोकोंके भूल
लमें फसाके मुखसें अठारे वर्णोके हम राज
एसें लष्टपुष्ट होकर भीख मांगे सो पुरुष
नासिनी भिक्षाहै इसतरे इन पौरषघ्नी भिक्षाव
ने इतने फायदे मांगणेमें देखाहै माथों मुंडा
सात गुण भांगी सिरकी खाज वहिन वे
ठोभी कांचली हासल ठोम्यारात १ पहि
तो ऋण सिरपर रहता अब लेतेहै ब्याज पहि
अह्द गधोमे गिणते अब राम २ महाराज २

दुहा—रूजगारकरेतोटोटालागे गांठखायतोवीते॥
राघोचेतनयोंकहे मांगखायसोजीते ॥ १ ॥
कालकुसम्मेनांमरे वांभणवकरीऊंठ ॥
वो मांगेसबजातने वेचरजावेढूंठ ॥ २ ॥
जती २ क्या नांमगुण मतीनसोचेकोय ॥
पांचो इंद्रीवसकरे सच्चाजतीसोहोय ॥३॥
सच्चाजतीसोहोय विषयरतपामेपटीया ॥
करेपांनसिणगार रखेभोगणकूंलटियां॥४॥
कहेरामऋद्धिसार ज्ञांनविनविगमीमत्ती ॥
खायहरामीमाल नहीवेसच्चाजती ॥ ५ ॥

जंगम अरू योगी सरस रस भोगी सन्यासी समाजीवण लोकनकूं ठगेहे सिरकूं मुंम्वाय मारे किसीकोनकाजसारे पेट निजभरणकाज द्वार २ भगेहे भस्मी केइयक धरे मट्टीकेइतिलककरे जूठेकदाग्रही मिथ्यामत लगेहे ऋद्धिसारत्यागधार सुद्धजतीगुरुसंभार एसे भेखजगतमे कुमतिपंथजगेहे ॥ १ ॥

इसवास्ते जो जो मूर्ख साधूनांम धराके साधूपणाकी क्रिया करके रहित शरीरमें पुष्ट होकर दीन होकर भीख मांग पेट भरतेहे उनोका पुरषार्थ नासकूं प्राप्त होजाताहे उन एसें भेखधारीयोंकों चाहीये सो अपणे कुलकूं लंछन

नही लगे एसी लिखत पठत निमित्तादिक कला कौशलतांइसे अपणा निर्वाह गृहस्थके स्वारथ पोहचाके करे दरिद्री अंधा पांगला जो किसीभी तरे धंधा करणे समर्थ नही एसे जो लोक अपणे गुजरान करणेकूं भीख मांगतेहे वो वृत्तीभिक्षा कहलातीहे वृत्ति भिक्षामें बहोत दोष नहीहे कारण वो मंगत दरिद्री लोक धर्मकी हलकाई नही पैदा करतेहे मनमें दया लाकर लोक उनोकों भिक्षा देतेहे इसवास्ते धर्मी श्रावक मांगे नही भिक्षा मांगणेवाला गृहस्थ कितनाभी धर्मानुष्ठान करे लेकिन् जेसें दुर्जनसें दोस्ती करणेसें लोकीकमें अवज्ञा उर निंदा होतीहे एसा समजणा उर जो जीव धर्मकी निंदा कराणेवाला होय उसकूं सम्यक्तपाणाभी मुसकिल होताहे उघनिर्युक्ती सूत्रमें साधुउंकों लिखाहे सर्व छकायके जीवोंपर दया रखणेवाला साधूभी अगर आहार नीहार करते तथा गउचरी करते भिक्षा लेते जो जराभी धर्मकी निंदा पैदा करे तो उसकूं वोध बीजकी प्राप्ति होणी मुसकिल होय नी[illegible] तीका एसा कहणाहे विवहार नयसें के भिक्ष[illegible] मांगणेसें कोइकूं लक्ष्मी तथा सुख होणा मालूम नही पडता ॥ श्लोक ॥ व्यापारेवर्द्धतेलक्ष्मी

कथंचित् सानुकर्षणे आयव्ययेनृभूभ्रेहे भिक्षायां नु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेहें वो लक्ष्मी थोमी कर्षाणमेहे राजद्वारमें आवंद उंर खरच दोनोंहे उंर फेर भीखसेती कभी लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट भराइ होतीहे इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २ मृत ३ प्रमृत ४ उंर सत्यानृत ५ इतनी तरे आजिविका करणी लेकिन् नीचकी सेवा करके पेट भराइ नही करणी बजारमे विखरे हुये दाणे चुगणा सो ऋत कहलाताहे उंर विगर मांगे जो मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत भिक्षा मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी इच्छा माफक अर्पण करतेहे सचहे परमहंसवृत्तिवालेभी मांगते नहीहे सची उंर पूरी परमहंसगतितो तीर्थंकर जिन कल्पवालोकेंही छद्मस्थ भावमें होतीहे उंर मांगणेसे मिले सो मृत कहलाताहे खेतीसें जो मिलताहे सो अमृत कहलाताहे उंर व्यापारसे जो प्राप्त होवे सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-

के वक्षस्थलमें रहतीहे उंर नही कमलवनमें रहतीहे निकेवल पुरषोके उद्यमरूप समुद्रमें उस लक्ष्मीका रहणाहे विशेषकरके व्यापारसें-हीं लक्ष्मी आतीहे लेकिन् धनार्थी पुरष अपनी हिम्मत उद्यम अपणे मददगार धन उंर ताकत भाग्योदय देश काल वगेरहका विचारकर व्यापार करणा नही तो नुकसान लगणाताजब नही हम कहतेहे बुद्धि शाली अदमी अपणी शक्तिकूं विचारके काम करणा अगर नही करेगा तो कामकी सिद्धीका अभाव १ लज्या २ उंर लोकीकमें हासी उंर हीलना लक्ष्मीकी उंर बलकी हानि होगी चाणक्य कहताहे ये कोनसा देशहे १ मेरे सहाय कर्त्ता केसेहें २ काल केसाहे ३ मेरे आवंद उंर खरच कितनाहे ४ में कोण हूं ५ उंर मेरी शक्ति कितनीहें इस बातकूं हरवक्त विचारते रहणा विघ्न विगर जलदी हाथ लगणेवाला एसा बहोत साधन करणेवाले एसे जो कारणहे सो पहलेहीसें जलदी काम होणेका नतीजा मालम कर देतीहें जलदी विगर यत्न कीयेविना प्राप्त होणेवाली लक्ष्मी उंर बहोत यत्नसेंभी नही प्राप्त होणेवाली लक्ष्मी पुन्य उंर पापमें कितना अंतरहे एसा

मालम कर देतीहै व्यापारके अंदर विवहारकी शुद्धि द्रव्य १ क्षेत्र २ काल ३ और भाव इन भेदोसें च्यार प्रकारकीहै जिसमें द्रव्यसें तो पनरे कर्मादांनका कारण एसा किरियाणा सब तरेसें श्रावककूं छोडणा चाहीये धर्मकूं पीडा करणेवाला और लोकमें अपयस पैदा करणेवाला एसा जो किरियाणा बहोत मुनाफा मिलता होय तोभी पुन्यार्थी पुरषोकूं गृहण नहीं करणा चाहीये तयार कीया हुवा सूत वस्त्र नगदी सोना रत्न धातू वगैरे जो निर्दोष किरियाणाहै सो विवेकी आचरे जितना व्यापारमें आरंभ पाप कम होय तेसा हमेसां चलणा कभी काल-कुसमयमें दुसरी तरे निर्वाह नहि होता दीखे तो बहोत आरंभ एसा व्यापार तेसेंही कठोर कर्मभी करे तोभी कठोर कर्म करणेकी मनमें इच्छा नही रखणी एसाही प्रसंग आ पडे तो करणा पडे तब आत्माकी साक्षी तथा गीतार्थ गुरूके सांमने उस बातकी निंदा करणी तेसेंही मनमें लज्जा रखकरकेही एसा काम करणा सिद्धांतमें भाव श्रावकके लक्षणमें कहाहै सु-श्रावक तीव्र आरंभ वर्जे उस विगर निर्वाह नही होता होय तो मनमे तीव्र आरंभकी

इच्छा नही रखता हुवा फकत निर्वाहके वास्ते-
ही कठोर आरंभ करे लेकिन् परिग्रह ओर
आरंभरहित पुरषोकी स्तवनाभक्तिकरे धन्यहे वे
महापुरष सो सर्वज्ञकी आज्ञाकी प्रतिपाल
करतेहे कोइ जीवकूं तकलीप देते नही सर्व
पापका त्यागरूप जिनोने व्रत कीयाहे एसे
धन्य महामुनि शुद्ध आहार ग्रहण करेतेहे इस
तरे दयाका परणाम रखणा गृहस्थ विगर देखा
हुवा विगर परीक्षा हुवा किरियाणाकूं अथवा
जिसमें बहोत चीज मिलीहुइ होय एसी
चीज बहोत व्यांपारीयोकी पांतीमे लेणा चा-
हीये क्योंकी नुकशांन लगे तो सबके सामिल-
में लगे क्षेत्रसेती जहां स्वचक्रभय ओर परचक्र-
काभय नही होय मरी आदिरोगका भय किसी
किसमकी ठगाइ कष्ट नही होय ओर धर्मकी
सामग्री सब होय जिन मंदिर १ उपाश्रय २
पंडित धर्मोपदेशक यति ३ ज्ञानपुस्तकालय ४
साधर्मी ५ इत्यादिक जहां होय मुख्यपणेकर
के तो उसही जगे व्यापार करणा काल करके
बारे महीनोमें तीन अठाइ चेत भाद्रपद आ-
सोज पर्वतिथिमें व्यापार छोडणा ओर वर्षातकी
मोसममें जिन चीजोंमे जीव बहोत होजाय

वो शास्त्रोमें लिखे हुये ढोंढणा न्नावसें व्यापारके बहोत न्नेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमान्नी कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल्ल होताहे ऋर रखणा पमताहे जो देणेका व्यापार समजते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अदालत व्याजकी मिगरी रुपे सइकमेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें लेणदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके करणा शस्त्रधारी वेइमांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन छेमीये चोरस्तेमे साह रांघमकदिय न छेमिये छेम्यां होय कुराह १ श्रेष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्यापारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवालखोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जांण पमे तो तुरत वस्तु वेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

भाग्ययोगसें तोटाभी पमेतो नफाभी व्यापारमेंही मिलताहे घोमे चढे सो वाजे वखत गिरभी जाताहे उद्यम तो चोतरफसें दृष्टि देकर नफेकाही करणा लेकिन् उधारहार टांगरा रीता जब मांगे जब होय फजीता इस धंदेमे मूल पूंजीकोभी धक्का लगणाहे अंग्रेजी राज्यके कायदेमें तीन वरषसे उपरांतकी लेणदारकी सुनाइभी नहीहे सिरकार इस कायदेके वाहनेसें जतातीहे के हाथ उधार मत दो समजो नही तो सरकार क्या करे विश्वासपात्रकोंभी उधार देणा पमे तो च्यार गवाही मोतबरके सांमने देकर स्टाप कागदसें लिखाकर एक आनेके कागदमें ऋणीके हाथसें रुपे भरवायेकी रसीद करवाणा चाहीये मकान जमीन रैण रखणेपर सरकारसें रजिस्टर करवा लेणा चाहीये विशेषपणेकर नट विट कसवणोके दलाल भमवे कसवण जुआरी इन लोकोके साथ उधारका धंदा नही करणा गिरवी रखके जो रुपये देणा सो बजार भावसें ज्यादे माल रखकर देणा अपणी समजसें तो दूणा रखणा चाहीये क्योंकी रुपे दूणेसें ज्यादे मिलते नहीहे चाहे कितनीही मुद्दत क्यों नहीहो लोकीक कहणावट एसीहे दांम दूणा घी चोगुणा घास

फूसका अंत अपार गिरवीपर व्याजके रुपे ज्यादे होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस देकर जताकर मुद्दत जो नोटसमें लिखे वो वीतनेपर च्यार मोतबर गवाह रखकर वेच देणा चाहीये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये उधारमें जो नुकसाणी पोहचतीहे उसपर दृष्टांत कहतेहे जिन दत्तनांमें एक सेठ जिसके एक वे समज लमकाथा मुग्धयाने जोलाथा बापके प्रताप लीलालहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासें उस मुग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लमकेकूं इस तरेकी सीखदी हेबेटा सबजगे जीनकूं दांतोका परुदा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते रुपे उधार देणा तो पीछी उघराइ नही करणी २ बंधनमें पमी हुइ उंरतकूंही त्रास देणा ३ मीठाही जोजन करणा ५ सुखसें नींद लेणी ६ मुलक २ मे घर करणा ७ वेस्याके जाणा तो प्रजात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे शृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ए बासी नही खाणा ताजाही खाणा १० गायामेंही जाणा गायामेंही पीछा आणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन परुजाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाट्टु उंर मकराणे

की बिचकी जमीन खोदणी १३ इन वातोमे शंका पडे तो मेरा मित्र हैद्राबादमें मगनमल्ल श्रावक सेठ रहताहे उसकूं पूछणा. उस शिक्षाकूं सुणी लेकिन् वो मुग्ध समजा नही भोलापणेमे सब धनको खोबेठा आखिर दलिद्रदशा आइ पिताके हुकम मुजब हेद्राबाद जाकर पिताकी कही सिक्षा कहकर मगनमलसें परमार्थ पूछणे-लगा तब सेठने परमार्थ वतलाया सब जगे जीभकूं दांतोका पडदा रखणा सो उसका परमार्थ एसाहे जुबानमेंसें कडवा लबज बिगर विचारे बोलणा नही सबकूं हित वचन बोलणा १ किसीकूं रुपये उधार देणा सो फेर उघराइ नही करणी पडे मतलब पहलेहीसे दूणा माल रेण रखलेणा सो आपही वो रुपये व्याजसमेत देजाय कांहेकूं तकाजा करणा पडे २ वंधनमे पडी उरतकूं त्रास देणा मतलब बेटाबेटी हुये वाद स्त्रीकूं अगर त्रासत्री देवे तो वो घर छोडके जाती नहीहे उरत जात वेगमहे वि-चारहीन होणेके कारण अपघातकर लेवे या पराशक्त होके स्वच्छंदचारणी होजातीहे इस-वास्ते कामशास्त्रमें लिखाहे उरतोंसें सदा नर-माईसें काम लेणा ३ मीठा भोजन करणा सो

जहां प्रीति उंर आदर दीखे उहांही जीमणा जहां प्रीति उंर आदरहे निश्चे समझणा वोही भोजन मीठाहे ॥

दुहा—वारिवोलावणवेसणो वीभोअरुबहुमांन ॥
जीणघरपांचववानही सोघरजांणमसान॥१॥
आवनहीआदरनही नहीनयणामेनेह ॥
जिणघरकदीयनजाइये जोकंचनवरसेमेह॥२॥
आवकरेआदरकरे दिलमेधरेसनेह ॥
तिणसज्जनघरजाइये जोपत्थरवरसेमेह ॥३॥

अथवा जब भूख लगे तब भोजन करणा सो मीठा लगताहे विगर पचे खाणेंसे रोगोत्पत्ति वैद्यक वचनहे सुखसें सोणा मतलब जिस जगे किसीभीतरे कष्टउपद्रवकी शंका नही होय उहांही रहणा सो सुखसें नीद्रा आवे लोकीकमेंभी सात सुख कहतेहे पहली सुख निरोगी काया दुजा सुख घरमे हुय माया तीजासुख सुथानवासा चोथा सुख राजमे हुयपासा पांचमा सुख कुलवंती नारी छठा सुखपुत्र आज्ञाकारी सातमा सुख धर्ममे मति शास्त्र सुकृत गुरुपंक्ति यती इतना मिले स्वर्गमे वास ये सातोंही पुण्यप्रकास १ अथवा जब

निद्राका समय होय तबही लेणा दिनकूं नही सोणा खासी जुखामादिक दिनके सोणेसें नीद्रा करणेसें होताहे भोजन करके मावी करवट अन्नपाचन करणेकूं विगर नींद सयन करणा ताकत वधाणेकूं चित्त सोणा ५ गांम १ में घर करणा मतलब सब देसके वसणेवाले मोतबरोसें दोस्ती करणा सो जहां कार्यविशेषे जाणा पडे तो घरकी तरे हिफाजत सब कामोंकी वणसके अथवा घर बेठेही चीजवस्तु चहीये सो आप्तद्वारा आसके ६ वेस्याके प्रभातसमय जाणा मतलब रात्रिके कीये हुवे शृंगार सो जारपुरषोके मर्द्दनसें विभंगकूं प्राप्त हुये हुये मद्यादिकके नसे उतरे हुये महाभयानक विरूप देखणेमें आतीहे सो पुरषका चित्त किसी प्रकार वैस्यागमन नही चाहता वलके एसा स्वरुपकूं देख एसाभी अनुभव प्राप्त होताहे के अनेक जार चोर नट विट नीच पुरषोकी संसेवित वैस्याकूं कोण कुलवंत पुरषके संग भार्याका संसर्गज कर सकताहे निकेवल एक पेसेही कीयारीहे जिसके इण वैस्यायोनें चारुदत्त कयवन्ने सेठ जेसोकें वारे क्रोडसोनइये खाकर अंतमें निकाल दिया तो फेर एसी मुतलबगारी

वेस्याउंके फंदेमे कोन बुद्धिमांन जाताहे ५ जुआ खेलणा तो अपणी चित्रशालीमे खेलणा मतलब जब जुआरीलोक उहां जमा होतेहें तब वो मकानकी सजा वट देख एसआरामी देख बडे अपसोस बंद होजातेहे तब नीसासे नालणे लगजातेहे जब उनसें दुखका कारण पूछोगे तब तो एसा कहतेहें क्या कहे हमारे घरमें इससें दूनी सजा वटथी उंर पांच लाख रुपेथे सब इस जुएमें वरवाद हुवा कोइ चोगुणी उंर कोइ अठगुणी कहकर अंतमें जूआ उंर फाट-काही फकीर होणा साबित करेंगे तब तो एसा प्रत्यक्ष प्रमांण पाकर फेर कोन बुद्धिमांन जूआ उंर फाटका करेगा इस धंदेवालेके निश्चे जद तद नुकशानहे एसे धंदेवालेकी हूंडीभी साहू-कार विचारके लेतेहे एसे आदम्योंकी पतगये वाद मालसट्टे रुपे मिलणा मुसकिल होताहे सात विसनोका राजा जुआहे नल उंर पांडव जेसें इसके प्रताप दुख पाये तो आजकलके पुरषोमें कष्ट जुए फाट केसें पडणा क्या बडी बातहे हजारों विगडे उंर एकवणे एसा धंदा बुद्धिवांन नही करे धंदा हाजर माल श्रेष्टहे फाटका इज्जतका जूआहे जो करेगा फाटका

धन् जायगा गांठका थालीविके अरुवाटका घरकारहेन घाटका ए वासी नही खाणा ताजाखाना मतलब अपने वमेरोने कुछ धनमाल जमाकर गयेहें अथवा आपकी मूलपूंजी खाजाणा सो वासी खाणा कहलाताहे अथवा वासी अन्न रोगोत्पत्ति करताहे लालीया जीव गीले जोजो पाणीके संयोजी पकाये जाताहे उन चीजोके खाणेसें अनेक जीवोके संसर्गी हिंसासे परभवमें हिंसाके फल बुरेहे इसवास्तें धर्मशास्त्र विरुद्धहे ताजा खाणा सो कमाके खाणा अथवा ऋतुपथ्य धर्मपथ्य खाणा कमाके खाणेपर चार टकेमें राजा भोजका दृष्टांत जेसें राजा भोज एकदिन किसी कारण जंगलमें गया आगे रस्ता भुलगया प्याससें व्याकूल हुवा तब वृक्षकी छांहमें घोमा बांधके बेठकर प्याससें व्याकुल पाणीकी चिंतामें लगा इतनेमें एक धणागर भेम बकरीयां चराणेवाला अपणा एवमलेके चला आया राजाने पाणीकी जाय पूछी उसने जलका स्थांन बतलाया राजा तृषा मिटाकर स्वस्थ हुवा तब राजा उसकूं अपणा प्राणदाता समझके उस एवालकूं कहणेलगा तूं मेरे पास अछी चीजहोय सो मांग उसने कहा

में क्या मांगूं में भिक्षुक नही मेरे पुरषार्थसें कमाएसें में च्यार टकेमें राजा भोज हूं राजा बडे आश्चर्यमें आकर एवालसें पूछणे लगा च्यार टकेमें तूं राजा भोज किस तरेसेहे सो मुजे वतला एवाल कहणेलगा देख च्यार रुपे महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-पोषण करताहूं दूध भेर घी वलीता भेर कंवल विछानेकी टटी ये सब एवकसे मिलताहे एक रुपया स्त्री पुत्र पूत्री भेर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ धोती वरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमांन स्वजन संबंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुभेके दांन नि-मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-दिर धर्मशाला दीनदुखीयोके दांन देनेवास्ते रखताहूं वारे आणा खजानेमें जमा करताहूं इसवास्ते मेरे किसी वातकी कमी नही में क्या वातपर तेरेपाससें व्यर्थ दांन लूं तव राजा

भोज ये वात सुणके दंग होगया उर मनमें कहणे लगा क्या तारीफ करुं इस अक्लवंतके अक्कलकी असलमें इस सिक्षासें जो संसारी चले तो कभी उसका संसारी कार्यमें हरकत न पहुंचे इस सिक्षाके देणेसें ये मेरा गुरु बण-गया कारण चाणाक्य कहताहे ॥श्लोक॥ एकाक्षर प्रदातारं योगुरुनैवमन्यते श्वानयोनिशतेनैव चं-मालेष्वपिजायते ॥ १ ॥ अर्थात् एक अक्षर सिखाणेवालेकूं गुरु करके नमाने वो जीव सो जन्म कुत्तेका करके निश्चेसें चंमाल कुलमे जन्म लेताहे इसवास्ते इस शिक्षाका ये मेरे क्ला गुरुहे तब राजा कहणे लगा हे महाभाग्य एसें तो आप कुछ लेते नही लेकिन् इतना मेरा कहणा आप याद रखणा ये शिक्षा जो च्यार टकेमें राजा भोजकी आप मुजसें कही ये बात अब आप विना कोटि सो नइये विगर हरगिज कोइ पूछे तो मत कहणा सिख्या देकर जो धन आप लोगे वो दांन नहीहे किंतु उचित व्यापारहे तब उसने कहा अच्छा लेकिन् कहणे लगा इस बातका कोटि दीनार कोण देगा राजा बोला आप याद रखो क्या देताहे दरदी क्या देताहे गरजी जिसकूं गरज होगी

सो देजायगा राजा आगे शहरके तरफ आया लेकिन् वो बात राजा दममें २ याद करताहे प्रभात होतेही आम दरबार भरके अपणे मुसाहिब प्रधान हिसाब माल सायरके तमाम बगे २ यहुदेदारोसें कहणेलगा च्यार टकेमें राजा भोज लाओ सब सभा कहणेलगी क्षमा २ गरीब परवर अमोल्य रत्न जो राजा भोज सो च्यार टकेमें केसें आवे राजा बोला इस हक नाहक स्तुतिसें मैं प्रसन्न नही होता मोव्वत देताहुं सात दिनोंकी च्यार टकोंमे राजा भोज दाखल करो नही तो सर्वस्व छीनकर सबोकों विना कुटंब शहरसे निकालदूंगा दरबार बरखास्त करदिया अब वे राजाके सब मुसद्दी बगे उदास होकर अपणी अक्कलसें सोचा सब पंन्डित स्याणे ज्योतषीयोकूं पूछा लेकिन् ये बात किसीनेभी नही बताई आखिरकों सात दिन पूरे होगये राजा अपणे वादे मुजब धोती लोटादे देकर इकेलोकूं शहरसें निकाल दीया ओर कहा जिस दिन इसी बातकूं हासिल कर आओगे उसीदिन शहरमें आके मुजें मूं दिखलाणा लाचार वो फिकरवंद उसी जंगलमें जा पहूंचे उहां सब लोक खाणा पीणा कीया

इतनेमे वो जंगली अपणी वखतपर उसी जगे आया इनोंको देख पूछणेलगा तुम सबके सब बडे दिलगीर उर अच्छे घराणेके दिखतेहो तब उनोनें कहा कोइ कहणेकी वात नहीहे हमारा संकट कोइ काटणेवाला नही दिखता तब इसने कहा कहो तो सही काटणे जेसा होगा तो मनुष्य काट सकताहे तब ये कहणेलगे क्या कहें ये वात बडे २ अकलवंत उर पंडि-तोकी समझमें नही आई तो तु जंगली क्या हमारा दुख काटसकताहे जंगलीनें कहा मेरे लायक होय सो तो में कहसकताहूं इसमें पंडित उर जंगलीकी क्या वातहे वाजे काम एसेंहें सो जंगली जांणतेहे नागरिक नही जांणते एक केवली टाल सर्वज्ञ कोणहे सबगुणके उर पढकेइ हुसियार होतेहे तब उनोमेंसें किसी-ने कहा भाइ अपणे तो जो मिले उनसेंही पूछो कोइनकोइ वताही देगा नट बुद्धिसें जट बुद्धि वाजे कांममें अधक निकलतीहे जब छींक लेणा होताहे तब सूर्यके सन्मुख देखणा पडताहे तब उनोने कहां हम सब राजा भोजके ...ीहे इसतरे राजाने हमसेकहा च्यार ...जा भोजजाउं हमने तो वहोत तलास ...। क्या ...

करी लेकिन् किसीनेभी नही बतलाया तब राजानें निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे तूं कुछ जांणताहे तो बतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस बातका क्या में बतासकताहूं जन मुत्सद्दीयोनें खूब निश्चयसें पूछा सच्च बतादेगा जंगली बोला सच्च बताउंगा तिलभरका फरक नही जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा भोजथा लेकिन् अब राजाका जो हुकमहे वोही करणा चाही- ये तब मुत्सद्दीवर्ग आजीजसें पूछणेलगे बतला च्यार टकेमें राजा भोज कोणहे जंगली बोला कोटि सोइनये देउ तो राजाकूं तुमारी कही बात समझा देताहूं जब तुमारा राजा कहदेवे तब ले लेऊंगा तुम वणिक हो मुतलवी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

दुहा—वंभोपकभोवाणीयो तातोलीजेतोभ ॥
जोधीरजसूंकांमले लेवेकंठमरोभ ॥ १ ॥
वाण्यांथारीवांण कोइभीनरजाणेनही ॥
पांणीपीवेछाण सेंवूंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सांमने द्रव्य धराके फेर राजा भोज च्यार टकेमें पेस करूंगा सचहे ॥ मुतलवरी मनुहारने तजी मात्रे

चूरमो विन मुतलब मनुहार राबन पावे राजिया १
अपणी गरजसें हिस्से मुजब कोटि द्रव्य मुक-
ररकर उस एवालके संग राजाके सभामें हा-
जर हुये उसकूं देख राजा सिंहासणसें उतरके
खडा होगया मुत्सद्दी बडे आश्चर्यवंत हुये
दोनोनें दिलमें समझ लिया लेकिन् मुत्सद्दीयोकूं
कहा क्यों तुम आयेहो मुत्सद्दीबोले गरीबपर-
वर ये जंगली केताहे च्यार टकोका राज भो-
जमेंहूं राजाने कहा किसतरे कहणा चाहीये
तब जंगली बोला कोड सोनये लाउं तब वत-
लाउंगा उन सबोने हिस्से मुजब हाजर कीया
तब वो बात्त विवरेवार कह सुणाइ तब राजा
बोला सच्चा च्यार टकेका राजा भोज तूं हे उस
एवालका कुरब बढाकर शहरमें वसणेका हुकम
दीया उर राजा उन मुत्सद्दीयोकों फटकारके
बोला अरे मूर्खो तुमें कुछ होसभीहे मेरे क्रोडो
रुपये आवंदानी होकर किसीभी तरेका इंति
जाम नही ये इतनीसी आवंदानीपरभी केसा
इंतिजांम बांधरखाहे इसीतरे मेरे रासतका
वंदोवस्त करो खैर उस मुजबही कीयागया
सब तरेसे राजाकी कीर्ति भइ एसा कमाके
खरच करणा चाहीये १० छाया आणा छायामें

जाणा मतलब पहले पहरमे धर्मकृत्य करके व्याख्यान सुणके दांन देकर फेर भोजनकर दुकानपर जाणा गुमास्तोके कांमकी तदारक करणी खरच आवंदका आंकडा साफरखवाणा उधार किसी साहूकारमें होय तो वादे मुजब संगा लेणा नोकरोको नोकरी मुजब इनाम इकराम आंकडा वधणेपर देणा फेर गाया ढले जब घरपर आणा जो मालक अपणे घरका कांम नही देखता सिरप गुमास्तोके भरोसे छोड देताहे उसका घर विगड जाताहे केइ हमने विगडे देखेहे ११ मीठाइ खानेका विसन पडजाय तो हलवाईके घरपर जाके खाणा मतलब जब हलवाईके घरपर प्राणी जाताहे तो किसीभी तरे उसकी मिठाइ खाणेकूं जी नही चाहता किसीमें तो हजारों मखीयां मरी हुइ किसीमें मकोडे उर चिमटीयां मरी हुइ किसीमें ऊंदर गिलेरी आदि अनेक जीवोके रसोकूं छाणकूणके मिठाइ वणाताहे न पाणीकूं छाणताहे नवरतणोकी शुद्धिहे पोंछणें उर छा-णणेके वस्त्रभी महाअशुद्ध उर मलीन रहतेहे उर ते छोकरोके दिसा फराकतके हाथभी ज्यों त्यों योंही लगा देतीहे छोकरे योंही मूततेहे

उसी पात्रसें जल पीलेतेहे उसीसें मिठाइ काम देतीहे तो एसे अपणी आंखोंसे देखता हुवा दया शौच धर्मी वो मिठाइ बजारु केसें खास-कताहे जिसके घरमें ये सब शुद्धियां होय दया धर्मवाले हलवाई होय तो निजरसे तपा-सके मिठाइ ले आणेमें कोइ हरजाना नही दक्षिण पूर्व पंजाबसें प्राये हलवाईका काम क-रणेवाले ब्राह्मनादिकभी मांस भक्षीहे इसवास्ते उचितहे की इच्छा होय तो विवेकीके हाथसें वणवाके अपणे घरमेंही वापरणा ऋतुपथ्य ओर अपणी तासीरकों पहचानकर इहां जो मिठाइ हलवाईके घरपर जाके खाणा कहाहे सो सिरप जाके देखणेकाही सूचना करताहे विवेकी पुर-षोंकों चाहीये साधर्मीटाल ओर स्वजन मित्र-वर्ग दयाधर्मी टालके दूसरेके घर विनाकारण विशेष भोजनभी नहि करे १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाटु ओर मकराणेके बीचकी जमीन खोदनी सो अबमें तुझकों वताताहूं देखके चलणा इस सिक्षाके माफक चलणा तेरे घरमें जहां खाटुका पत्थर ओर मकराणेका प-त्थरका जमा हुवा चोकहे उहां दसलक्षकी मोहरें गमीहे सो निकाल लेकर रुजगारकर

कारण भर्तृहर राजा लिखताहे ॥ श्लोक ॥
यस्यास्तिवित्तं सनरःकुलीनः सपंन्डितः सश्रुतः वा-
न्गुणज्ञः सएववक्तासचदर्शनीयः सर्वेगुणाःकांच-
नमाश्रयंते १ मायकहे मेरापूतसपूता बहन
कहेमेराभइया घरकीजोरूलेतवलइया सबसे
बम्हारुपइया १ श्लोकका अर्थ जिसकेपास धन
हे वो अदमी कुलवान कहलाताहे वोही पंन्डित
हे वोही गुणोका जांणनेवालाहे वही कहणे-
वाला वही देखणे योग्यहे इसवास्ते सब गुण
कांचनके आश्रयमें रहतेहे १
दुहा—कंताजोक्षनराखीये जाकोनांमगरत्थ ॥
जिणदेख्यांनृपतिन्गिे तरुणीपसारेहत्थ १
इसवास्ते हे विवेकी गृहस्थ धर्ममें धनकीही
प्रधानताहे ये जन्मका सुधारणा तो प्रत्यक्षही
दिखताहे लेकिन् विवेकी इस लक्ष्मीसें परभव-
भी सुधार सकताहे जेसें सुपात्रोकी भक्ति अन्न
वस्त्र पात्र उषधि विद्याशाला दांनशाला पुस्त-
कालय पिंजरापोल जिन मंदिर पूजा साधर्मी
वात्सल्य रथयात्रा तीर्थयात्रादि अनेक सुकृतार्थ
धनसें संचकर चक्रवर्त्ति स्वर्ग तीर्थंकरादिक
पदका आयु बांधताहे एसी शिक्षा देकर विदा
किया उस शिक्षामें चलता हुवा वो मुग्ध सद

तरे सुखी हुवा ब्याजभी देशकाल देखकर एसा लेणा सो दुनियांमे लोक निंदा न करे अब देणदारकूं चाहीये सो मुद्दतकी अंदरही रकम पीछा देणा चाहीये तब तो दुनियामें वो प्रतिष्ठावंत कहलाताहे जिस जुवानका करार निभासको नही एसी जुबान मूंमेसें मत निकालो वाप और वात एकही होताहे प्रतक्षपणें देखतेहे वडे २ अंगरेज जो कुछ मूंमेसें वात निकालतेहे तो वणे जहांतक निर्वाहही करतेहे रामचंद्रके पास जब बिभीषण आया तब रामने कहा आउ लंकेश तदपीछे लक्ष्मणके शक्तिवाण लगा मृत्युके मुख पडा लक्ष्मणकूं देख राम कहणेलगा हे सुग्रीव लक्ष्मणके मरणेसें मेरा प्राण निश्चे जायगा जिसका मुझे कुछ अपसोस नही अयोध्यासें निकलणेका अपसोस नही ज्यांनकीके जाणेका एसा अपसोस मुझे नही काया नासमांनहे यह तो एकना एकदिन जायहीगी बेलासक जावे लेकिन् बडा धोखा तो यहहे की बिभीषणकों जो मेने लंकपति कहा सो निभाये विगर मरजाऊंगा बडा अपसोस तो यहहे धन्यहे एसे पुरषोत्तमकों सो इतनी आपदा पडनेपरभी अपणी जुबान निभाणेकेही

विचारमेंही रहे आखिरकों निभायही दिया पुरषोंकों चाहीये अपणी करी प्रतिज्ञा एसी निभावे किसी राजपूतके घरके अंदर नींमका दरख तथा उसके नीचे वो राजपूत जब बेठता तब एक कउआ उसपर बींटकर देता वो धनुषवांण मंगाता वो काग देखतेही उडजाता एक दिन उसने अपणी कन्यासें कहा में जब समसेरलाकहूं तब तीरकबाण लादेणा इसीवजे कउअेनें बींटकी संकेत मुजब राजपूत बोला समसेरला कउअेने विचारा समसेरसें तो में मरता नही निंचित वेठारहा जो बांणलगा त्योही राजपूत बोला अरे दुष्ट अब तो मरा तब पडते २ कउआ बोला ॥

दुहा—वचनपलट्टासोमरा कागासरामजाण ॥
नांमलियासमसेरका लाईतीरकबाण॥१॥

सो जुबान कहके पलटणेवाला मराहुआहीहे जब अपणेसे पार नही पडे तो एसा बोज उठाणाही नही कदास कोइ कारण योगसें रूपे वादेपर नही पोहचसके तो किस्त करकेभी करजा उतार देणा एसा नही करे तो फेर पत जाते रहवीहे जहांतक बणे करजदार होणाही नही कारण सुणणा आवाज देणा

मोरसें ३ तथा आलोमीसे ४ इन सवोके मूल जीवोकूं जिन जीवोका मुजलसें ये धनुषादिक वणेहे उनो जीवोकूं पाप आनेका दरवाजा जो आश्रव तत्व जिनमेंसें पच्चीस क्रियाके अंदरसे पांच क्रिया लगे एसा लिखाहे जैनधर्ममें द-याकी बहोत वारीकीका विचारहे जैनधर्मका मर्म इसीको कहतेहे ॥

दुहा—मर्मयहीजिनधर्मका पापआलोचेजाय ॥
मनसेंमिथ्यादुस्कृतं देतेदूरपलाय ॥ १ ॥

देणा नही चूकाणेसें परभवमें देणा पडताहे जिसपर दृष्टांत वलद पाडा उंट हाथीका एक वर्धमाननगरमें एक जिनदत्तनामका सेठ जिसके पास बहोत धन था उसने दो खातेकी वही बनाई एक तो इसभवमें पीछा लेकर देवे जि-सकी १ दुसरी परभवकी २ उधार लेणेवाला देणा चाहे तब तो उसमें लिखे १ नही देणा चाहे तो परभव खाते लीखे २ एसी बात सु-णके एक राजपूत उंर एक सुनार दोनो मित्र थे आपसमें विचार करणेलगे ये मूर्ख साहू-कारके धन वहोत उछलताहे चलो अपणेभी ले आवें एसा विचार सेठकेपास आये सेठसें प्रणाम करके बेठ गये तब सेठ बोला में भो-

स्नानादि कृत्य कर आताहुं तुम जितने बेठो. सेठ तो भोजन करणे गया उस वखत सेठका पाणी लाणेवाला बेल और चूनेके घरट पीसणेवाला भेसेकूंभी खानपानकी छुट्टी मिली कारण श्राव-ककूं चाहीये सो अपणे इलाकेमें जो जांनवर होवे उसके चारे पाणीकी खबर लिये विगर आप भोजन करे तो जीवघातका अतीचार लगे उस वखत वो बेल और पाडा आपसमें बातां करणेलगे वैल बोला हे मित्र अब हम तो परसूं मरजांयगे रुपे सो मेंनें देवदत्तनांमके ब्राह्मणपणेमें परभवके खातेकरके लियेथे मेरे हाथसें उसके वहीमें लिखहे वो रुपे व्याजस-मेत परशुतक पोहच जांयगे पाणी भर २ के भरती कर दिया तब भेसा बोला मित्र मेरा छुटकारा होणा मुसकिलहे कारण में वणिये महे श्वरीकेभवमें इस सेठ ओसवालसें हजार रुपे इसभवके खाते लायाथा सो मेंने एक मोदीकों दियेथे और मोदीने हजारका माल राजाके मोदीखानेमें तोल दिया राजाने पीछा दीया नही इसवास्ते में तो मरके पाडा हुवा मोदी मरके राजाके पाट हाथी हुआहे राजाके मन-चंगे माल खाताहे वो सव व्याजमें जाताहे में

सेठके व्याजमें चूना पीसताहूं लेकिन् रुपया
उतरणा मुसकिल होगया तब वेलने पूछा कोइ
उपायभीहे ऐसा बोला अगर हजार रुपेकी
सरत लगाकर राजाके हाथीसें मुझे लमावे तो
जरूर मेरे सामने हाथी भाग जायगा में तो
सेठकूं समझा नही सकता जो कोइ सेठकूं
समझा देवे तो में ऋणमुक्त होकर मरजाऊंगा
ये वात राजपूत सकुनरुत शास्त्रका जांणका
रथा सो सब समझगया के इन दोनो जीवोकों
जातीस्मरण ज्ञांन होगयाहे उसने सुनारसें
कही मित्र देणा तो परभवमेंभी छूटता नही
सिरपर वोझा उठाके परभव त्रिगाभणाहे इस
तरेका हालहे सुनारने ये वात मानी नही इत-
नेमें सेठ आया उर बोला लोभाइउ जिस कांम
आये हो वो कार्य कहो तब राजपूत निसल्य
पणेसें सब बात कह सुणाइ कारण राजपूत
प्राये जो खानदानी होतेहे सो आर्य होतेहे
किसीकी संगत उर सीखसें वेलासक कठोर
उर क्रूर कर्म करे तभी तो जैनधर्ममें राजन्य
कुलकों सबसें उत्तम लिखाहे प्रतक्ष फल देख-
कर एसा अज्ञानी नीच विरला होगा जो द-
गावाजी करे सेठ इस बातकी परिक्षा करणेकूं

तीन दिन विताया कहे मुजब वैल मरगया तब सेठ उस राजपूतकूं संग लेकर राजाकेपास जाकर नजर नोछावरकर राजाके हुकम मुजब वैठगया राजाने कुशल क्षेमकी बात पूछीऊर बोला सेठ बहोत दिनोंसें आये कुछ कार्य होय सो कहो तब सेठ बोला गरीब परवर नोकरी करके मालककी वंदगी वजाकर हक्क खाणेवाला मेरा चूना पीसणेवाला जेसा भेसा ताकतदारहे जेसा हजुरका माल मलीदा चरणेवाला वृथा पुष्ट पाट हाथीमें ताकत नही अगर लम्तके मुकावलेमें दोनोंको दंगलमें भिडाये जाय तो आपका हस्ती भाग छूटे राजा हसकर बोला क्या सेठ भंग खाईहे ये वात किसीके समझमें कब आसकतीहे सेठ बोला न मांने तो हाथोतालीका परचा देख लीजीये तब राजा बोला कुछ सरत करोगे सेठ बोला हजार रूपेकी मुकरर ठहराकर दोनोकों लाये भेसेंकूं देखतेही हाथी भाग गया तीन वखत लाये लेकिन हाथी तो तीनही वेर भागगया सेठकूं हजार रूपे दियेगये ऊर पाडा मरगया राजा बोला हाथीसें धेस्तत खाके भेंसा मरगया तब सेठने उस राजपूतसें सब वात राजासें कहलाइ राजा

बोला सच्चहे में इस मोदीके हजार रुपे मोदी खाणेके देणाथा देणा किसीतरे नही छूटता इस दृष्टांतमें वेल पाड्नेकी जो वात करणी लिखीहे सो पंचाख्यान शास्त्र मुजबही दृष्टांत जाणना उपदेशरूपहे वात करणी सर्वथा असंभवहे मुसलमीनोके धर्मकायदेमें व्याज खाणा मनालिखाहे लेकिन् हमारी समझ मुजब तो हम प्रतक्ष प्रमांण देकर कहतेहे व्याज विगर संसारका विवहार उर राज्यधर्म दोनोंनास होजाताहे जिस वातकी सवूतीकेवास्ते दृष्टांत लिखताहुं एक लक्ष्मीपूरनगरमें महा शूरवीर जयसिंह नाम राजाथा जिसके दो पुत्रथे बड़े हुसियार एकका नाम रामसिंहथा १ दुसरेका नांम धोकलसिंहथा पिताने दोनोंकों दो पंडितोंकों पढनेकों सोंपा एक तो पारसी पढे मोलवीयोंकों उर दुसरेकों शास्त्री पढे पंडितोंकों दोनों पढके इमतियान पास हुये रामसिंहकी बुद्धि हिन्दू धर्मपर ठहरी धोंकलकी कुरानपर ठहरी जब राजाने विचार कीया सच्चहे कोरे घडेमें अगर तेल डाला जावे तो तेल निकलजी जावे तो ठीकरी चिकनास नही छोडतीहे घी डालनेसें वीका सो इस धोकलसिं-

हके दिलमें जो कुरान मजहबका धर्मकायदा
बैठगयाहै सो इह व्यापारनीति तथा राजनी-
तिकूं बाधा पोहचाकर सिरफ इतना जालम-
पणा जरूर यह जांनताहै जो हजरत महं-
म्मदका हुकम नही माने उसकुफरकूं कतल
करणा इसवास्ते एसी अक्कलवाला अपणी प्र-
जाकूं अपणी हितकारणी केसें बणाकर केसें
बादस्याही करसकताहै कारण इस भरतक्षेत्रमें
तरे २ के फिरकेहै उनोमें अपणी २ मताध्यक्ष-
की बात सब मांनतेहै सिद्धांत मत तो एकहै
सो धोंकलसिंह जाणता नही एकदिन राजा
धोकलसिंहकों बुलाके कहा तुमारे हाथ खरच-
केवास्ते में ७ हजार रुपेका आवंदका खरचा
निकालदेताहूं ये लाख रुपे तुमको इसके आठ
आनीके व्याजसें ७० हजार सालीयाना होगा
तब मनमें तो कसमसाया लेकिन बापकी बे
अदबी नहि करणी तब बोला हजूर कल हु-
जूरकी खिदमतमें उस्ताद मौलवीसाहबकूं भे-
जताहूं जो फरमावे सो उनहीसें फरमां देवे
राजा समझ गया लेकिन बोला अच्छा दुसरे
दिन मोलवीसाहब आकर कहणेलगे गरीब
परवर आपने ये बडे आजाबकी बात माहाराज

कुमारकों क्या फरमाई सूतका खाणा हरामहे एसाही हेतो हजूर दश हजार सालीआनेका गांम माहाराज कुमारकों देदिये जावे तब हजूरनें विचारा इस मोलवी तथा धोंकलसिंहकूं अक्कल आजावे एसा विचारके राजा बोला मोलवीसाहब में दोनों लम्कोंकों मुलक वगेरे आधा २ देकर तीर्थोंकूं जाताहूं देखताहूं च्यार वरसमे रासतका कांम केसें चलातेहे एसा कहकर सब चीजे आधो आध वांटदिया उर कहा देखें अपणे २ पंम्डित उर पढे हुये शास्त्रोंसें केसीक रासत वधातेहो रासत सोंपके राजा तीर्थोंकूं गया अब दोनुं भाई अपणे २ पंम्डितोंद्वारा अपणे २ राज्यका काम चलाया उस वखत मोलवीसाहबके कहनेसें एसा ढंढोरा शहरमें धोकलसिंहने फिरवाया कोइ जो व्याज खायगा सो सजा पायगा तब साहूकारोनें विचार कीया इस रासतमें रहकर अब अपणे क्या करसकतेहें एसा विचार सब एकठे होकर निकलकर रामसिंहकें राजमें जा वसे रामसिंहने वहोत खातर करके वसाये साहूकारोनें सब हकीगत कह सुणाइ तब रामसिंहने अपणे सिपाहीयोसें कहदीया जो कोइ आदमी उस

रासतसें आवे उसकूं अपणे राज्यमे खातरक-
रके वसाउं पहलेही वर्षमें जब रुपे उधार
देणेवाले साहूकार नही मिले तब तो कर्षाण
लोक जमीन नही वोयसके तब तो सरकारमें
हासल वहोत कम वेठा दशलाखकी आवंद
साहूकारोके माल ताल जगात वगेरेके वेठतेथे
जिसमेंसें कुलम पैदास आठ लाखकी हुइ
खरच सिपाइयोकी तनखा घोमे हाथी वगे
रोका सब लगणेपर उधार कोइ देणेवाला नही
रहणेसें असवाव जो विका सो सब रामसिं-
हने लीया यूंकरते चोथे वर्षमें सब शस्त्र हाथी
घोमे विकणेपर सब रइयत भागके रामसिंहके
तावे हुइ लाचार मोलवीसाहव उर धोंकलसिंह
अपणी जमीन वेची सोभी रामसिंहने खरीद
करली मोलवीसाहव मक्काकूं तसरीफ लेगये
तदपीछे धोंकलसीहकूं अपणेपास रखा राजा
तीर्थोंसें पीछे आकर देखा तो रामसिंह चोगुणी
समृद्धिसें राज्यकर रहाहे धोकलसिंह लजरवा-
णा हूआ तव राजाने कहा वेटा ये क्या हुवा
तव धोकलसिंह वोला हे पूज्य मोलवीसाहिव-
के कहणेमाफक कुरानसरीफके कायदेपर चला
तोभी खुदाने मेरे तरफ कुछभी खयाल नही

कीया उंर मुझे इस दरजे पहुंचाया अजब अंधेर खुदाके घरमेंहे तब राजा बोला वेटा ये अंधेर तुमारी उंर मोलवीसाहबकी अक्कलकीहे खुदा न तो किसीकुं दुख देता न किसीकूं सुख देता मनुष्यकूं आदि ले सब जीव अपणे कीये हुवेही पुन्य पापका सुखदुख जोगताहे न तो खुदाने दुनिया वनाई उंर न कजी नास करेगा इस बाबतकी शंका दूर करणी होय तो ईश्वरतत्व निर्णय ग्रंथ वांच पढ उंर दुर्बुद्धि ग्रोड दयाधर्मके उपदेशकूं सुण जोकी सर्वज्ञ अरिहंत परमेश्वरके वचनहे जिसमें गृहस्थधर्म १ उंर साधूधर्म २ इन दोनोंको साधणेमें क्रमसें स्वर्गके सुखादि प्राप्त होकर परमेश्वर होजाताहे जन्म मरणसें बूट जाताहे वेटा व्याज वट्टेविगर संसार मर्यादा चलतीही नही तुझे समझानेकूं मेनें आधा २ धन वांटके दियाथा देख रामसिंह केसें दोनूं नीति जांणकर धर्म १ कर्म २ का विवेक करताहे वेटा ये मोलवीलोकोके कहणेमें चलणेसें एक दिल्लीके कुतबदीन वादशाहकी रासत जाणेकी तइयारी होगइथी धोकलसिंहने पूछी ये वात किसतरे हुई राजा कहताहे दिल्ली

शहरमें कुतबदीन वादशाह राज करताथा-
उसकेपास कुरान पढे हुये वहोतसे मोलवीथे
उसके बाइस लाख फोजका दलथा एकदिन
सब मोलवीयोका आम दरवारथा तब मोल-
वीयोने वयान किया जापना हकनाहक इतना
खरच फजूल क्यों रख छोडाहे कुरानसरीफमें
खुदाका हुकमहे जो आदमी आप अपणा
इमान छोडके पराये चीज लेणेका दिल कर-
ताहे तो उसकीभी चीज लेणेको दुसराभी
इमान छोडके कोसीस करताहे सो हजूरसें हम
पूछतेहे क्या आपभी अपणा इमान छोड कि-
सीकी रासत छीननेका विचार रखतेहो वादशा-
ह बोला तोबा २ में कुरानसरीफके वरखिलाफ
कभी अपणा इमान छोड कभी किसीकी रासत
लेणेका विचार नही रखता तब मोलवी बोले
यकीन रखिये आपकीभी रासितकों कोइभी नही
छीनेगा वादशाहकूं यकीनथा कुरान उर मोल-
वीयोका तव वोला आपलोग सच्च कहतेहे मुझें
पक्का भरोसाहे कोइ नही मेरी रयासत छीनेगा
तो मोलवी बोले रीतके पांचसो सातसो सिपाह
रहणे दीजीये वाकीकों रुकसत कीजीये वादशाह
वोला वजीरकों कहदूंगा फेर दरवार वरखास्त

नया वजीर जब मुजरे आया तब वजीरकूं सब वात कह सुणाई तब वजीर श्रीमाल सामतसिंह उंसवालनें विचारा वादशाहकी अक्कल मोलवीयोनें निकाल मालीहे इनोकूं समझाणा चाहीये सो एसें कहूंगा तो मानेगें नही बलके गुस्सेंमे आकर कहेगें काफिर कुरान मौलवी उंर मेरा हुकम अदूली करताहे एसा विचारके बोला जो हुकम धीरे २ सबको रुकसत करडुंगा अपणे मकानपर आके एक खतरूमके वादशाहकों लिखाके इहां दिल्लीके वादशाहने सब फोज निकालदीहे आप सुरताणहो वादशाहत लेणेकी दरकार होय तो जलदी फोज लेकर दिल्लीपर चढआइये नहीं तो एसी नाताकतरासतकों कोइभी छीनलेगा उस खतमें अपणा नाम पता नही लिखकर एक वेपारी रूमका जोकी व्यापार करणे देहली आयाथा उसका लिखदिया वादशाह रूमखत पढतेही चढाईकी वजीरने सब फोजोके अपसरोकों बुलाकर हुकम दिया अपणे २ शस्त्र लगाइके का- एकल तयार रक्खो चंददिनमें काम पडेगा अब जाणेकों वादशाह मजलोंमजल हन्दूस्थानके ये वात किस्साया सांझिये सवारोने वादशाहकों

खबरदी रूमके बादशाहकी फोज आरहीहे तब बादशाह सब मोलवियोसें कही मोलवी बोले हजूर आप क्यों डरतेहे मके सरीफको जाताहोगा वह बात वजीरने सुणी तब अपणी सब फोजको हुकम दिया तुम सब चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जब बुलाउं तभी हाजर होणा वजीरने बादशाहसें अरजकी गरीबपर हुकमकी तामील बजाइ गइ बादशाह बोला अच्छा कीया रूमका बादशाह पंजाबमें आ पहुंचा सवारोने खबरदी बादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोने कहा खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्ली-के एक मजलपर डेरा दिया डेर दिल्लीके बादशाहकूं कहला भेजा तीन दिनमें किल्ला खाली करो या मोरचे मजबूत करो ये सुणतेही बादशाहके छक्के छूटगये डेर घबराकर मोलवी-योसें कहा जूलम हुवा अब क्या करणा तब मोलवी बोले गरीब परवर क्यों घबरातेहें हम अभी समझा देतेहे एसा कहकर बगे खलीतो में कुरान सरीफको डाल रूम सुरत्राणपास पहुंचे बादशाह कुरब कायदेसें बिठलाये कुसल क्षेम-की बात चीत पूछकर पूछा हजूरका आणा केसें

हुवा वादशाहने कहाके दिल्लीमें अमल दखल करणेकूं मोलवी कुरानका सिपारा दिखलाके बोले इस किताबमें अगर आपका इकीनहै तब तो वसलोट जाइये नही तो फरमावे आप किस कायदेसें आये वादशाह चुपरहा जब उन मोलवीयोने दो तीन वखत बोले वताइये आप किस कायदेसें आये तब वादशाह म्यान-मेंसें खांडा निकालकर दिखलायाके हम इस कायदेसें आये तब तो मोलवीयोकूं कुछभी ज-वाब नही आया कुरान खलीतेमें घालके अपणे वादशाहपास पहुंचे वादशाहकूं कहा वस दि-ल्लीका किल्ला खाली करदीजीये जो काफर कुरानके वचनपर यकीन नही रखता उसका इमानगया आपकी रियासत गई दोरोटी उर सालण आप जहा रहेगें वहां खुदा देही देगा सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये खाणा उर पीणा भूलगया फिकरमें आकर फेर पूछा आप लोक फिर क्या करेंगें जो अब चैन करतेहै मोलवी बोले हम लोक इनके पास रहजायगें जो नही रखेगा तो आप क्या नही जांणतेहे मुसलमीनोके कायदाहीहे धन होणेसें अमीर भूखे फकीर मरे तो पीर जेसी आ वीतेगी

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस वजे राजाने जब वात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही राजा बोला तब मोलवीयोकी वात सुणके वादस्याह बडा फिकर वंध होकर वजीरकूं बुलाया उर आंखो-सें पाणी टपकाता हुवा मोलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या दखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रही जुदाहे जिसमें साम दाम दंड भेदादिक अनेक छल बल उर वहादुरीहे खेर इन पढत मूर्खोंकी वातपर फेर ज्यादे अमल मत-करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकूं दिलासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहहे उसहीसे लडेंगें क्या आपने नही सुणाहे रणजीतसिंह सिख पांच घोडेका सूवेदारथा सो अपणी व-हादुरीसें पंजाव हत्थेका बादस्याह होगयाथा उसीवखत रूम सूलतानकूं लिखभेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगें एक सवार फोजके तरफ भेजा आठ पहरमें फोज आकर रूमकों घेर लिया एसा हाल देख रूमनें कहला

भेजा मैं कुछ लम्णें नही आयाहुं जब मेनें एसी खबर पाई तो तुमकों नसियत देणें आयाहुं वजीरनें दोनों बादशाहोंकी मुलाखात यानें संधि कराई दिल्लीके बादशाहसें आणेजाणेका खर्च दिलाकर रूमकों रवाणें कीया इतनी बात सुणकर धोंकलसिंह जैन पंम्तितोसें धर्मशास्त्र राज्यनीति दोनों सीखके इस लोकमें ओर परलोकमें सुखी हुवा विवेकी आदमीके अगर जो नुकशांन धनका होजाय तो उदास नही होणा चाहीये उद्यममें मजबूत रहणा कारणके निश्चय सत रखणेवाला ओर चतुर परिश्रम करणेमे तकलीप सहणेवाला दावसे उद्यमकरणेवाले पुरषके लक्ष्मी कहांतक भागके जायगी जेसें आजदिन अंगेरेजोके प्रत्यक्ष प्रमाणसे लंदन राजधानी तथा अमेरीका साक्षात् सोनें किसी लंका वणरहीहे जहांसे बहोत धनकी आवंद होय उस जगे थोम्ाबहोत नुकशांनभी होय तो सहणाही पम्ताहे बीज जाट करबणी वोता हे अनाज मणो बंध होताहे लेकिन् वो वोया हुवा दाणा तो असली कभी नही मिलताहे संपदा ओर तकलीप दोनोंमें सम परिणाम रक्खे वो गृहस्थ धन्यहे

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें वेठाताथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके उर कृष्णाके ही जब नही रही तो उमाउ वेकूबोके पास कब रहसकतीहे पूर्वभवके पापके उदयसें जो कभी आगे जेसी भाग्यवानी नहि आवे तोभी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप स-मुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो उर किसके रहेगी प्रेमभी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे उर वि-षयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमे सं-तोष रखना जो कभी ज्यादा फिकर करे तो इस भवमें रोगोत्पत्ती परभवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंभी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत भाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्कडके सहारेसें लोहभी पाणीमें तिरणे लगताहे एक भाग्यवानके सघर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका वेटा निर्धन होगया तव सेठ उसकूं नोकरी रक्खे नही लेकिन कभी २ वुटकर काम करणा

लेकिन् निर्धन जांणकर सेठ उस्सें ज्यादा बात करे नही तब उसने एकदिन दो च्यार आदम्योंको गवा रखकर सेठके ठाने सेठकी वहीमें अपणे नांमे दो हजार रुपे लिखदीये एकदिन सेठने अपणी वही देखी तब उस मुनीमसे रुपे मांगे तब मूनीमके बेटेने कहा कुछ रुपे आप ऊपर सराकरोतो कमाके दूंगा सेठ अपणी अगली रकम अदा करणेकों दो हजार उर दीये उस रुपेसें उस अकलवंदने रुजगारकर बहोत रुपे कमाकर सेठके व्याज समेत रुपे देणे लगा तब सेठ बोला दो हजार आगूंके लाउं तब गवादारोकूं बुलाके सब हकीगत कह सुणाइ सेठ उसकूं बडा अकलवंत समजणेलगा मुनीमजी सेठ वणगया दरखतके आसरे वेलवढजातीहे एसा बडोका आसरा आपत्कालमें लेणा चाहीये नीच आदमीके लक्ष्मी आ जाणेपर इतनी वातें उस लक्ष्मीके संगमे रहतीहें निर्दइपणा १ अहंकार २ ज्यादा लोभ३ करडा बोलणा ४ उर नीच वस्तुपर प्रीति ५ लेकिन् ये बात सज्जन पुरषोके लक्ष्मीके संग नही रहती इसवास्ते विवेकी पुरषोंकों चाहीये सो धन होजाणेपर गरूर न लावे धन्य हे वो

पुरुष सो आपदा आणेसें दीन नही होय लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख दुखी होवे आपमें संकट पडे तो सीदावे नही उस पुरषकूं नमस्कारहे समर्थावान होकर पराया पुरषोंका कीया हुवा उपद्रवसहे धन-वान होकर गर्व नही करे पंडित होकर विनय-वान होय यह तीनों पुरुष पृथ्वीमें अलंकार समानहे विवेकी वहीहे जो कोइके संग क्लेश नही करे तथापि वडे अदम्योसें तो भूलचूक-केती कभी क्लेश नही करणा कहाहे जिसकूं खासीका विकार होय उसकूं चोरी नही करणा जिसकूं वहोत नींद आती होय वो जारी नही करणा जिसकूं रोगहे वो मीठे आदि रसऊपर आसक्त नही होणा जुवान वसररखणा पथ्यमें रहणेसें रोग मिटही जाताहे धनवान होकर किसीसें वैरविरोध नही करणा भंडारी राजा गुरु तपस्वी पक्षपाती ताकतवर क्रूर डर नीच इनोंके संग वाद विवाद नही करणा कभी किसी वडे आदमीसें धन जमीनादिकवास्ते असरचा पडगया होय तो विनय बुद्धिसें काम निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा पं-चाख्यानमे लिखाहे उत्तम पुरुषकूं आजीजीसे

लेकिन् निर्धन जांणकर सेठ उस्सें ज्यादा वात करे नही तब उसने एकदिन दो च्यार आद-म्योंकों गवा रखकर सेठके छाने सेठकी वहीमें अपणे नांमे दो हजार रुपे लिखदीये एकदिन सेठने अपणी वही देखी तब उस मुनीमसे रुपे मांगे तब मूनीमके बेटेने कहा कुछ रुपे आप ऊपर सराकरोतो कमाके दूंगा सेठ अपणी अगली रकम अदा करणेकों दो हजार उर दीये उस रुपेसें उस अकलवंदने रुजगारकर बहोत रुपे कमाकर सेठके व्याज समेत रुपे देणे लगा तब सेठ बोला दो हजार आगूंके लाउ तब गवादारोकूं बुलाके सब हकीगत कह सुणाइ सेठ उसकूं बमा अकलवंत समझणेलगा मुनीमजी सेठ वणगया दरखतके आसरे वेल-वढजातीहे एसा बमोका आसरा आपत्कालमें लेणा चाहीये नीच आदमीके लक्ष्मी आ जा-णेपर इतनी वातें उस लक्ष्मीके संगमे रहतीहे निर्दइपणा १ अहंकार २ ज्यादा लोभ३ करमा बोलणा ४ उर नीच वस्तुपर प्रीति ५ लेकिन् ये वात सज्जन पुरषोके लक्ष्मीके संग नही रहती इसवास्ते विवेकी पुरषोंकों चाहीये सो धन होजाणेपर गरूर न लावे धन्य हे वो

पुरुष सो आपदा आणेसें दीन नही होय लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख दुखी होवे आपमें संकट पडे तो सीदावे नही उस पुरषकूं नमस्कारहे समर्थावान होकर पराया पुरषोंका कीया हुवा उपद्रवसहे धन-वान होकर गर्व नही करे पंडित होकर विनय-वान होय यह तीनों पुरुष पृथ्वीमें अलंकार समानहे विवेकी वहीहे जो कोइके संग क्लेश नही करे तथापि बडे अदम्योसें तो भूलचूक-केभी कभी क्लेश नही करणा कहाहे जिसकूं खासीका विकार होय उसकूं चोरी नही करणा जिसकूं बहोत नींद आती होय वो जारी नही करणा जिसकूं रोगहे वो मीठे आदि रसऊपर आसक्त नही होणा जुवान वसरखणा पथ्यमें रहणेसें रोग मिटही जाताहे धनवान होकर किसीसें वैरविरोध नही करणा भंडारी राजा गुरु तपस्वी पक्षपाती ताकतवर क्रूर उर नीच इनोंके संग वाद विवाद नही करणा कभी किसी बडे आदमीसें धन जमीनादिकवास्ते असरचा पडगया होय तो विनय बुद्धिसें काम निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा पं-चाख्यानमे लिखाहे उत्तम पुरुषकूं आजीर्ण

वस करणा सूरवीरकूं बलसें वस करणा नीच पुरषकूं अल्प द्रव्यादिक देणेसें वस करणा ओर अपणे बराबरीवालेकों अपणी ताकत देखाकर वस करणा धनके गरजीकूं तथा धनवानकूं विशेषकर गम रखणा चाहीये क्योंके क्षमा रखणेसें धनकी वढोतरी ओर रक्षा होतीहे ब्राह्मणका बल होम मंत्र राजाका बल नीतिशास्त्र अनाथ गरीब प्रजाका बल राजा ओर वणिक् पुत्रका बल क्षमाहे मीठा वचन ओर क्षमा ये दोनोंही धनका मूलहे धन शरीर योवनअवस्था ये तीन काम्नाका कारणहे दांन दया ओर इंद्री-योका जीतणा ये तीन धर्मका कारणहे ओर सर्वसंग परित्याग करणा मोक्षका कारणहे जुवानका क्लेश सब ठिकाणे वर्जणा दारिद्र संवाद ग्रंथमें कहाहे लक्ष्मीजी इंद्रकूं कहतीहे हे इंद्र जिस जगे गुणवांन बडे आदमीकी पूजा होतीहे न्यायसें धन पेदा करतेहें ओर जेरात्री वचनसें क्लेश नही करता उस जगे में रहतीहूं तव दारिद्र कहताहे हे इंद्र जो हमेशां जुआ खेलतेहे स्वजनकेसाथ द्वेष रखतेहे कि-सीकी चोरीसें धनकी चाह रखतेहे सदा आलसु धन होनेका नास तथा खरचकी तरफ खयाल नही

रखणेवाले एसे आदम्योंके पास में हमेसां रह-
ताहुं विवेकी आदमी उधारकी उगराइ पण
कोमलता राखकर करणा दुनियामें निंदा नही
होय जेसे करणा एसा नही करे तो देणदार-
की चतुराइ लाज वगेरेका लोप होय उस्सें
अपणा धर्म तथा धनकी प्रतिष्टाकी नुकसाणी
होणा संभवहे इसवास्ते लंघन वगेरे न करणा
नही कराणा लंघन करणे उर कराणेवाला अं
गरेजी राज्यके कायदेसें सजावार हे जो कि-
सीकों भोजनादिकमे अंतराय देगा वो जीव
कृष्णके कुमर ढंढण ऋषिकी तरे भोजनकी
अंतराय पावे सर्व पुरषोंकूं तथा वणियेकूं चा-
हिये सो संप तथा च्यारजनोकी सलाहसें
काम करणा चाहीये सब काम साधनके साम
दाम दंम भेद एसे च्यार भेदहे जिसमेंभी सा-
मसें सर्वत्र कार्यसिद्धीहे बाकी उपाय सामके
जोमेके नहीहे करमा उर कठूर अदमीभी
मीठी जुवानसें वस होजाताहे लेणदेणमें भूलसें
जो कभी झगमा पमजावे तो निकम्मा विवाद
नही करणा तब पांच पंच चतुर लोकीकमें
प्रतिष्टावंत जो कहे सो मंजूर करणा उन पं-
चोका कहा न माने तो झगमा मिटे नही अं-

ग्रेज सरकारभी बहोत कायदेसें पंचोकी राह
भाल रखतीहे सगेभाइ भायोकेभी अगरचे
असरचा पमजाय तो उसकूं उसरेही समझ-
दार मिटा सकतेहे क्योंके आपसमें उलझे हुये
वालोंकों कंगाही जुदा करताहे न्याय करणे-
वाले पुरषोंकों चाहीये सो पक्षपात गेमकर
मध्यस्थ वृत्तिसेंही न्याय करणा वोभी सजनका
अथवा साधर्मीका काम होय तो सब तरेसें
विचारकरकेही न्याय करणा हरकिसीजगे न्याय
करणे नही बेठणा किसीभी तरेका लोभ नहि
रखकर न्याय करणेमें आवे तो बमाइ मिलतीहे
नहीतो बमा दोष पेदा होताहे वाजे वखत स-
च्चेका जूठा झुठेका सच्चा करणेमें आताहे इसपर
एक एसा दृष्टांतहे एक धनवान सेठ लोकीकमें
बहोत विख्यात था वो आप वमप्पन चाहता
हुवा जगे २ न्याय करणेकूं जाया करताथा
उसकी बालविधवा एक समझदार लमकीथी
वो बापकूं हमेशां मनाकीया करे हे पिताजी
आप एसी चोधरायत मतकीया करो लेकिन्
सेठ बेटीका कहा मांने नही उस लमकीनें
बापकूं समझाने एक झगमा खमा कीया हे
पिताजी मेरे जमा कीये हुये तुमारेमें दो हजार

रुपयाहै सो मेरे पीछे दो तोमें जोजन करूं एसा कहकर बापपर धरणा देके बेठगइ किसीजी तरे माने नही लोकोंसें कहणेलगी बुढाहो गया मेरा बाप तोजी मेरा धन पीछा देता नही इत्यादिक वेजा बोलणेलगी तब सेठ लज्यावंत होके च्यार समजदारोंकों बुलाया उर बोला इस बातका इनसाफ करो मेरेमें ये कुछ नही मांगतीहे तब लोकोनें विचार कीया सेठकी लम्कीहै बालविधवाहै इसवास्ते इसपर दया रखणी चाहिये एसा समजकर पंचोनें सेठपास दो हजार रुपे दिलवाये ये हाल देख सेठने दिलमे विचारा इस लम्कीनें मेरी हकनाहक आबरू खोकर दो हजार रुपे लेलिये बहोत फिकर करणेलगा तब बेटी आकर सामने रुपे धरकर बोली देखा पिताजी केसा इनसाफ पंच चोधरी करतेहै एसाही इनसाफ आप करते होंगे आपका जी केसा डुख पाया एसा समज लीजीये पंचोकी पंचायते एसें बहोत ठिकाणे हुया करतीहे उसी दिनसें सेठने पंचायत करणी छोमदी इसवास्ते इन्साफ करणेवालोंकों चाहीये सो हरकिसीकी पंचायत नही करणा साधर्मीका संघका कोइ

बमा उपगारका काम होय अथवा कोइ करणे योग्यही इन्साफ होय तो पंचायती करणी चाहिये तेसें किसी जीवके संग मगरूरीभी नहि करणा धनप्राप्ति कर्माधीनहे इसवास्ते निकम्मा अभिमान करणेसें क्या फायदा दोनोंभवमें डुखदाईहे चिंतेपर तो पमे घर डुसरेका धन देखके कभी ईर्षा नहि करणा धानका रुजगारमें काल विचारें पसारीके रुजगारमें रोगकी बढोतरी चाहे इत्यादिक दिलमें बुरे विचार न करे काल स्वभावसें पमजाय तो अथवा किसीमें संकट पमजावे तो अछा हुवा एसी दिलमें खुसी नहि करणा कारण मन मलीन होणा पापका मूलहे जेसें दो वणिक् मित्रथे एक तो ढूंढक साधोका परम भक्तथा उर डुसरा सात विसनोका सेवणेवाला वैस्या लंपटथा एकदिन सांजकूं वैस्यागामी बोला चलो मित्र तुमकों नाच रंग नसा पत्ता एसविलास करालावे डुसरा बोला चल ढूंढक साधोंके सो मूं बांधकर सत्रूजी कांबल बिछाकर रातका पोसा करेंगें सा-स[illegible]ी जोरू गावेंगे फजरसें दया पालेंगें सो बापकूं [illegible]जाइ कुछ नहि करणा पमेगा साधर्मीपिताजी मे[illegible]नसन मरणांत समयका पुन्यखाते

कीया एसा द्रव्य जो निरवद्य उसकी मिठाइ नुजीये सीधा ले आवेगा सो बेठके खावेंगे साधोंके उपदेशसें बडे लाभ होगा स्नान करणे-का मंदिर करवाणेका मूर्त्तिपूजामें एकांत पापहे इसवास्ते इस बातका जावज्जीव त्याग साध कराय देगा अपणेको धर्मी जाणके बडे आदमी जो ढूंढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो वणिक् तो वेस्याके गया उर ढूंढक पंथी ऋषि-जीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे लिखाहे दया दान उर पूजादिक विषय कषा-यादिक इन दोनोंका एक खेत्रहे इन दोनोंके मन परणाम आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-कसीहे कारण ज्ञानीको भोग सोतो निर्जराका हेतुहे अज्ञानीको भोग सोतो बंध फल देतुहे ये अचरिजकी बात हिये नहि आवे पूछे कोइ-यक शिष्य गुरु समझावे १ अब वो वेस्याके गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सा में सब जन्म इनही कुकर्मोके करणेसें खोया धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-सा विरक्त भावना भावता हुवा वेस्याके संग रातभर रहकर प्रभातसमें निकला रस्तेमें संवे-गधर्मी स्वेतांबरी साधू मिले जिनके मुखसें

धर्मोपदेश सुण सम्यक्तमूल बारे व्रत लेकर परमेश्वरकी मूर्तिकूं साक्षात् परमेश्वररूप मांन-कर सत्तर भेदादिक पूजा करता हुवा समाधि मरणसें मरा अब इसके परिणाम शुद्ध होने-करके थोडे भवोमे मुक्ती जायगा एसा अनुमान होताहे उर दुसरा जो थांनक गया उसने विचारा मे मूर्ख हकनाहक यहां आया उसके संग जाता तो भोग विलास नाच रंगकी मोज लूंटता इत्यादि अशुभ ध्यांन धरता हुवा ढूंढक वचनोकी द्रव्य दया पालन करता हुवा संसार बहुल उपार्जन कीया इसवास्ते मति जेसी गतीहे लेकिन् एसें अशुभ व्यवहारमें विरलेकों एसी भावना आतीहे व्याजकी रकम दुणी अनाजकी वृद्धी तिगुणी किरियाणामें जितना मुनाफा मिले व्यापार सबसें एसी मुजब जि-तना मिले उतनाही लेणा तेसेंइ किसीकी गिरी नाहुइ चीज पराइ समझकर उठाणी नही ममइ बोवगेरे मुलकमें बहोतसे आदमी इस पराइ चीज जेउठाणेके फंदेमें ठगोके हाथ ठगाये जातेहे खोटा वट खोटी तराजु रखणा नही ज्यादा लेणा वा नही धोखेसे कम देणा नही पुराणी भेल सं-पि भेल करणा नही इस वातोसें दोनुं भव विगडे-

ताहे निरख तोलकर वे सुमार मोल वधायकर अयोग्यरीते व्याज वधायकर रूसपत देकर अथवा लेकर जूठा मासूल कर्पणोंसें धोखा-बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पैसा देकर कोइ खरीदता होय अथवा वेचता होय उसका भंग करके पराया ग्राहकोकूं भरमाय कर नमूना एक बतावे माल दुसरा देणा नही जहां लेणेवालेकूं वरावर दीखे नही एसी जगे कपडा वेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा नही इत्यादिक ठगाइ धोखावाजी कभी करणा नही इस भवमें सरकारसे दंड परभवमें स्वर्ग मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख एसा कहतेहे कूड कपटविना कमाइ होती नही आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-हार शुद्ध रखवे तो उलटे ग्राहक ज्यादे आवे मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक सुंदरपुर नगरमें हेलानामका सेठ रहताथा उसके चार लडका हुवा उरभी उसके परिवार ज्यादाथा तव वो सेठ ग्राहक जव आता तव लडकोंकूं समझा रखाथा उसवास्ते गाली देणेके वहाणेसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर एसा शब्द कहकर खोटी तराजु वट वापरकर लोकोंकूं ठगताथा

उसके छोटे लम्केकी बहू बहोत समजवारथी उसनें सुसरेकूं छाने समजाया तब सेठ बोला एसा नही करें तो पेट भराइ केसे होय बहू शास्त्रोंमे लिखाहे भूखा आदमी कोणसा पाप नही करे तब बहू बोली हे पूज्य हक्कमें वरकत हे धर्ममें चलणेवाले आदमीके सब काम सिद्ध होताहे इस बातकी परीक्षा करणी होय तो छ महीनेतक शुद्ध व्यवहार करके देखो इतनेमें परतीत आ जावे तो आगेभी एसा करते रहणा अब सेठ इस बातकी परिक्षा करणेकूं एसाही करणेलगा अनुक्रमें ग्राहक बहोत आणे लगा आजीविका अछी तरे चलणे लगी उपर च्यार तोला सोना खरचवरच जाके बचा तब वेटेकी बहू इनकूं प्रतीति उपजाणेकूं बोली हे तात हक्कके कमाइमें कितनी वरकतहे न्यायोपार्जित धन अगर खोया जाय तोभी फेर पीछा आताहे एसा कहकर एक लोहपर सोना मंढाया उसका अपणे नामका कांठला वणाया उसकूं छ महीने पहरकर एक पाणीके द्रहमें नाख दीया उसकूं एक मछली निगलगइ धीवर उस मच्छीकूं पकमी उसके पेटमेसें कांठला निकला सेठका नांम लिखाहुवा देखकर

सेठकूं लायकर कांठला दीया एसा देखकर सेठकूं हक्क कमाणेपर आस्ता आई शुद्ध व्यापार करता हुवा सेठ बडा धनवांन होगया श्रावक धर्ममें अगवाणी भया उसका नांम लेणेसें सब विघ्न टलगया तब जिद्दाजोके चलावणेवालोकूं आदि ले सब मनुष्य हेलाहेलो नाम पुकारणे लगा विचारवानोकूं सब पापोके काम छोडणा उसमेंभी अपणा मालक दोस्त अपणेपर विश्वा-स रखणेवाला देव गुरु वृद्ध तथा बालक इनोके संग वेर विरोध करणा नही इनोकी घरवट खाणी नही जमाखाणा उनोकी हत्या करणे जेसीहे झूठी गवा देणेवाला बहोत दि-नोतक गुस्सा रखणेवाला विश्वासघाती और कीये उपगारीका उपगार लोपणेवाला कृतघ्न ए च्यारोही कर्मचंडाल और पांचमा जातिचंडाल जाणना विश्वासघातपर विसेमिराका दृष्टांत है विसाला नगरीमें नंदराजा भानुमती राणी उनोका पुत्र विजयपाल और बहुश्रुतनामे मं-त्रीथा नंदराजा भानुमती राणीपर आसक्त होणेसें सभामेंभी राणीकूं पासही रखताथा शास्त्रोमें लिखाहे राजाका वैद्य और गुरु तथा मंत्री ये लोक राजाकूं प्रसन्न रखणेकूं मीठी ए

वातेंही बनाया करतेहे राजा रूस जायगा एसा समझ सच्ची बातभी नही कहतेहे तब राजाके शरीरका ऊर धनका ऊर धर्मका इनती नोका नास होताहे एसा नीतिशास्त्रका वचन हे इसवास्ते राजाकूं सच्च बातही कहणा चाहीये इसपर एक भट्ट पोराणिक कथा व्यासका दृष्टांतहे एक रत्नपुर नगरमें रत्नसिंह राजा बमा मांसाहारमें रक्तथा लेकिन् ठाकुरकी पूजा विप्रोका दानेश्वरीथा उस राजाके कथा व्यासथा सो उस्सें राजा हमेसां प्रभातसमे कथा सुणता फेर दांन देकर ठाकुरकूं पूज तुलशी चरणामृत लेकर वाद भोजन करताथा उस व्यासका दो रुपे रोज ऊर दो पक्का पेटीयाथा ऊरभी सइकमों रुपे दान पुन्यमें पाताथा उस व्यासका लमका एक जती साधूके पास पढाथा सो बमा धर्मात्मा शांतशील षट्शास्त्री बमा पंमित तत्वज्ञथा पुराणादिक शास्त्रोंकों आजीविका शास्त्र समजताथा एकदिन व्यासजीकूं किसी ग्रामांतर जाणेका काम पमा तब राजासें रजा मांगके बोला हजूर मेरा लमका कथा वांचणे आया करेगा राजाने कहा अच्छा व्यासजी गये वाद इनका पुत्र पेट निर्वाहार्थ कथा

राजाके सामने हमेसां वांचे जो वाक्य यथार्थ
आवे उसका विस्तार करे वाकी अवशेशकूं क-
विताका दखल मांनता हुवा वांचके सुणावे
एकदिन कथामें मांस खाणेका निषेध अधि-
कार सात्वकी आया व्यास बोला यःपुमान्
तिलतुष प्रमाणं पललंभुंक्ते साधो अवन्यां कुंभी-
पाके पचति अर्थात् जो तिल तुसजर मांस
खाताहै वो मनुष्य कुंभीपाक नर्क नीचेकी पृ-
थ्वीमें पकताहै ये बात सुणके राजा चमक
उठा एसी व्याख्या राजाने कभी वर्मे व्याससें
नही सुणीथी राजा बोला अहो व्यासजीके
पुत्र एसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ झूठाहै
क्या व्यासजीसें आप ज्यादे पंडितहो अगर
आपका कहा अर्थ सच्चाहै तब तो वेदमे जो
यज्ञोमें नानातरेके पशुउंकों होमके मांस
खाणेकी विधी लिखीहै उस मुजब असंख्य
जीवोका पुरोडासा अर्थात् यज्ञ कीये बाद बचा
जो मांस सो तुमारा वगेरा तथा अनेक राजा-
उनें खाया उर खातेहैं क्या वो सब नरक
गये होयगे वेदके वचन कभी झूठे होसक्तेहै
जोंकी भगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहै जिस
यज्ञोकी तारीफ वेद व्यासजीने पुराणोमें गा-

ईहे ये बातमें आपकी सरासर जूठ समजताहूं
व्यासपुत्र बोला हे राजेंद्र अहिंसा परमोधर्मः
ये वातभी तो व्यासजीने कहीहे उर नारदा-
दिक मुनिभी इस बातकूं त्यागे सोही उच्च
गति पाताहे एसा कहतेहें में तो पुराणमें
लिखा वेसाही वांचताहूं राजा बोला इतनां
दांन पुन्य ब्रह्मभोज गंगास्नानादिक करताहूं
सो क्या में मांस खाणेकरके नर्क जाऊंगा
गंगास्नान करणेसें सब पाप छूट जाताहे एसा
व्यासजी हरिवंस सुणाया तब मेनें सुणाथा
व्यासपुत्र बोला हे राजेंद्र भागवतमें प्राचीन
वर्हि राजाने यज्ञ करणेपर हजारों पशु मारेथे
अंतमे नारदजीने प्रतक्ष नर्क दिखाकर हिंसक
यज्ञ छुमाया भागवत क्या व्यासजीका आप
नही मांनतेहे राजा बोला हम तो तुमारी वात
नही माने नही कथा सुणे व्यासपुत्र बोला
इकत्यार आपका सुणे चाहे नही सुणे खूनका
भीगा कपमा खूनमें धोणेसें हे राजन् कभी
साफ नही होता एसी हिंसा करणेवाले पशु
जीवघाती जीव हित्याकरके फेर पाप उतारे
चाहतेहे वो पुरुष कोटों सोनइया हमेसां
ब्राह्मणोंकों दान देवे अथवा हमेसां प्रथ्वी-

दांन करे उर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं
वचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा
बराबर कोइ धर्म नही राजा स्वार्थीये सच्च
मार्ग कभी नही वतासकतेहे एसा कह व्यास
घरकूं आया राजाने पेटीये उर रुपये बंधकर
लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यास-
ण रोणेलगी व्यासने पूछा क्या भया व्यास-
णने सब हकीगत कह सुणाइ व्यासका लम्का
बोला आप केसी कथा हमेसा वांचतेहे सो
राजा सच्चे अर्थकूं जूठा कहणेलगा व्यास बोला
कलसुबे राज महलमे आजाणा देख केसाक
राजाकूं समझाताहूं खेर फजर होतेही व्या-
सजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा
नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे
व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी
सु निजरसेंही रहसकतीहे राजा बोला महा-
राज कथा इतनेतक तो आपके पुत्रसें सुणी
लेकिन लोकोमें मेने एसा सुणाथाके व्यास-
जीका पुत्र बमा पंम्तिहे सो तो कुछ नही
व्यास बोला गरीबपर पंम्ताईका घर दूरहे
कलियुगके पंम्तहे आप तो कल्पवृक्ष कामधेनु
साक्षात ईश्वररूपहो एसा सुणाकर राजा प्रसन्न

होकर कथा वांचणेका हुकम दीया इतनेमें व्यासपुत्रजी आ पहूंचा व्यासजी वोही तिल-तुसञ्जर मांस खानेवाला नर्क जाताहे एसा अर्थ करा राजा बोला क्या में नर्क जाउंगा व्यास बोला आप तो स्वर्ग वेकुंठ पधारोगे राजा बोला में मांस खाताहूं व्यास बोले धर्मावतार पुराणका रहस्य आप विचारो जो तिलतुसञ्जर मांस खावे सो नर्क जावे आप क्या तिलतुसञ्जर खातेहें राजा बोला नही २ सेर अधसेर नित्त तब व्यास बोले हे धर्ममूर्त्ति आप तो शिवलोक सिधावेंगें क्योंकी व्यासजी महाराजने तो तिलतुसञ्जर खाणेवालेकूं नर्क लिखाहे सेर अधसेरवालेकूं कुछ नही लिखा राजा प्रसन्न होकर च्यार रुपे नित्त उर च्यार पेटीये सरु करवा दिये राजा व्यासजीके लड़-केकूं बोला देखा छोटे व्यासजी पंडिताइ इसकूं कहतेहै तुम पूरे पढे नही जब व्यासजी जेसी कथा वांचोगे तबही मेरे कथा व्यास होवोगे तब व्यासपुत्र स्वार्थीयापणा दोनोका समजके एक श्लोक बोला ॥ समुष्ट्राणांविवाहेषु गीनंगार्यं-तिरासभा परस्परं प्रशंसंति अहोरूप महो-ध्वनि ॥ १ ॥ राजा संस्कृत पढा नहीथा

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी उंर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लमकेका हाथ पकमके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बमा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपनें स्वर्ग जाणा केसे वतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या उंर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगम जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहा करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य वताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे

वो वैद्य निषेधितहे चाहीये वैद्यकों सो देश काल अवस्था ताकत रोगकी रोगीकी तथा उषधीके अनुयाईही पथ्य वतलावे, राजा इस बातकी परिक्षा करणेकूं वैद्यसें पूछी वैद्यजी मुजे सब सागोमें वेंगणका साग अच्छा मालम देताहे वैद्य बोला हां हजूर सचहे भोजन वागविलास ग्रंथमे लिखाहे वृतांकं सागनायकं अर्थात् वेंगणहे सो सब सागोका मालकहे बमा रुचिकर वात कफ कर्त्ता होणेसे वृंहणहे स्वा-दुहे बमा लज्जितदार होणेसें दोय रोटी खाणे-वाला च्यार खाजाताहे मारु वेंगण परुदायत व्यभिचारणी स्त्रियोकूं बमा प्याराहे श्रीकृष्ण नारायणकूं जब ये बहोत अच्छा लगा तब प्रसन्न होवो अपणा मुकुट उर वदन छबिकी स्यामता वेंगणकूं इनायतकी तबहीसे वेंगण मनोहर लगणेलगा इसवास्ते वेंगणकी जितनी तारीफ करी जावे इतनीही थोमीहे गरम म-सालेदार निहायत ऊमदा वणताहे तब राजा वोला कुछ यक गरमी तो करताहे वैद्यजी बोले जी हजूर वेंगण बमी खराब चीजहे गरमी सुजाक भगंदर गंठिया नासूर श्लीपदादिक अनेक रोगोका करणेवालाहे सूका वेंगण मरा

चूर्ण्ये जेसा बना विदरूप दीखताहे म्लेच्छ अ-
नार्योंका खांणापीनाहे इस वेंगणकूं बहुत बीज
होणेसें जैनधर्मवाले अनक्ष कहतेहे ओर पुरा-
णोमें व्यासजीनें लिखाहे जो प्राणी वेंगण
खायाहे ओर ७ महीनेमें आदमी मरजावे अगर
एक बीजभी जो पेटमें रहजावे तो प्राणी नर्क
जाताहे तब राजा बोला वैद्यजी हमने जब
वेंगणकूं अच्छा कहा तब तो आपनेभी अच्छा
काहा ओर मेनें बुरा कहा तब बुरा कहा ये क्या
हालहे तब वैद्य बोला गरीबपरवर नोकर आ-
पके क्या वेंगण चंदजीके बापके आप राजी
रहो हमकूं तो वेसाही कहणा जरूरहे ॥
दुहा—जाटकहेसुणजाटनी इसीगांवमेंरहणा ॥
ऊंठविलाइलेगया हांजी २ कहणा ॥१॥
सो हमकूं तो वेसा कहणा जरूरहे एसा
खुसामंदीया वैद्य राजाके रोगका वढाणेवाला
होताहे एसा विचार मंत्री राजाकूं कहणेलगा
महाराज सभामें राणीसाहिबकूं पास रखणा
वाजिवनही क्योंके नीतिमे लिखाहे अति नि-
कट विनाशाय अतिदूरेतिनिष्फलः सेव्यतांमध्य
भागेन राजावन्हिगुरौस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥
राजा अग्नि गुरु ओर स्त्री ए च्यार बहोत न-

जीक होय तो विनाश कर्त्ताहै ओर बहोत दूर रहे तो बराबर फल देते नहीहै इसवास्ते मध्यमे इनोसें काम लेणा चाहीये इसवास्ते राणीकी एक तसबीर चित्रायकर पासमें रखिये तब नंदराजा एक तसबीर चित्रायकर सारदानंदननामें आपणे गुरुकूं दिखलाई तब शारदानंदन अपणे पंम्तिाइ दिखाणेकूं बोला हे राजन् राणीके मावी जांघपर तिलहै सो इसमें कीया नही राजा गुरुका वचन सुणकर राणीके शीलमे शंशय आया तब राजा मंत्रीकूं हुकम दीयाके शारदानंदनकूं मारमालो तब मंत्रीने विचार करा एकाएक विगर विचारा कांम नही करणा पीछे पछताणा पम्ताहै फेर उपाय क्या करसकताहूं तब बोला जो हुकम एसा कहकर प्रच्छन्नपणे पंम्तिकूं अपणे घरमे रख्का एक वखत नंदराजाका लम्का सूअरके पिछामी लगके दूर गया आखिरकों सांझ पम्ने आई तब राजकुमार एक सरोवरमें जल पीकर नाहरके मरसें एक दरखतपर चढा उस दरखतपर एक देवाधिष्ठित बंदर रहताथा उस बंदरनें कुमरसें कहा हे कुमार इस जंगलमें एक बमा चतुर सिंह रहताहे सो वो अनेक दीन ताप-

रोकर आदमीका दिल पिघलाकर दगाबाजीसें मनुष्योंका प्राण लेताहे इसवास्ते पेस्तर तूं मेरी गोदमें सोजा पीछली रात्रिकों में सोउंगा तब राजकुमार उस बंदरकी गोदमें सो रहा वाघने अनेक छलबल कीये लेकिन् बंदरने राजकुमार-कूं नीचे नाला नही जब पिछली रात्री आइ तब राजपुत्रकी गोदमे बंदर सूता बहोत स-मजाया हे कुमार देख एसा नही होजाय जो वाघकी दया लाके मुजे तूं नीचे पटकदे में तेरे सरणागतहूं मेरे प्रांण तेरे हाथहे एसा समजकर कुमरके गोदमें वानर सोरहा इतनेमें वाघ आकर बहोत आजीजी करणेलगा हे कुमर में बहोत भूखाहूं तुजें बमा पुन्य होगा ये बंदर तेरे क्या लगताहे उर इसकूं तुं मुजे देदेगा तो तेरेभी प्राण बचजायगें तब कुमर अपनी ज्यांनकी रक्षावास्ते बंदरकूं नीचे नाल-दिया तब बंदर वाघके मूंमे गिराये स्वरूप देख के वाघ हसणे लगा तब बंदर वाघके मूंमेसें निकलकर रोणे लगा तब वाघ बंदरकूं रोणेका कारण पूछा तब बंदर बोला जो कोइ आदमी अपनी जाती छोमकर पराइ जातिपर आसक्त होतेहे उण मूर्खोंकी क्या गती हो-

यगी एसा कहकर शरमिंद राजकुमरकूं पाग-
लकर दिया तब राजपुत्र विसे मिरा २ एसा
पुकारणे लगा एसा हुये बाद नंदराजा पिछाडी
खबर करणेकूं असवार भेजा आगे घोडा इकेला
फिरता देखा उसके पगोके खोजसें फिरते २
कूमर दिवाना हुवा मिला राजाने बहोत उ-
पाय कराया लेकिन् कुमर अच्छा हुवा नहीं
तब राजाकूं शारदानंदन याद आया जो इस
वखत वो होय तो बिलकुल अच्छा करदेवे ले-
किन् अब उसकूं कहासे लाउं एसा अपसोस
बंद होकर रोणेलगा तब प्रधान बोला गरीब
परवर मेरी बेटीहेसो कुछ एक उपाय जाणतीहे
एसा सुण नंदराजा अपणे पुत्रसमेत मंत्रीके घर
गया तब पडदेके अंदर बेटी भया हुवा शारदा-
नंदन बोला विश्वास रखणेवालेकूं ठगाणा इसमें
क्या चतुराइहे अपणे गोदमे सूतेकों मारणा
इसमे क्या ताकतपणाहे शारदानंदनका एसा
वचन सुणकर कुमर बि छेडके से मिरा २
कहणे लगा सेतु रामने बंधाइ उसकी पाल दे-
खणेसें गंगा सागरका संगमकूं देखकर स्नान
करणेसें ब्रह्महत्याके पापसें जीव छूटताहे ले-
किन् मित्रकूं मारणेवाला सेतुकी पाल तथा सं-

गम स्नानके पापसें छूटता नही एसा सुणकर दुसरा अक्षर से ओरुदीया मित्रकूं मारणेवाला कृतघ्नी इच्छा करणेवाला कृतघ्नी ओर विश्वासघाती चोर ये च्यारोंही जहांतक सूर्य चंद्रमाहे वहांतक नर्कमें रहेगें तब कुमर तीसरा अक्षर मि कहणा ओरु दीया राजन् तूं अपणे लम्केका कल्याण चाहताहे तो सुपात्रोंकों दांन दे कारण गृहस्थ दांन देणेसें शुद्ध होताहे एसा वचन सुण कुंवर चोथा अक्षर रा ओरुदिया तब अछा होकर कुंवर वाघ ओर बंदरका सर्व वृतांत सुणाया तब राजा पम्देमें रहा शारदानंदनकूं पूछणेलगा हे बाला वनमे जो वीती बात सो तुजे क्या खबर सो तेने सब हकीगत श्लोकोमे बनाकर कहकर मेरे पुत्रकूं अच्छा करदिया तब पंम्ति बोला हे राजन् जिनेश्वर देव सद्गुरूके प्रतापसें मेरे जीव्हाग्रपर सरस्वतीहे जिस्सें जेसें मेने जानुमती राणीके जांघका तिल जाण्या तेसेंइ यह बातजी जाणताहूं तब पीछे दोनोंकी मुलाखांत जइ दोनोंके आनंद जया इसवास्ते विश्वासघात करणा नही इस लोकमे पाप दो प्रकारकाहे एक तो गुप्त ओर दुसरा जाहिर वो छानेका पापजी दो

तरेकाहे एक छोटा ओर एक बमा खोटी तराजु वट माप वगेरह रखणा ये छोटा गुप्त पाप ओर विश्वासघात करणा यह गुप्त महापापहे प्रगट पापका दो प्रकारहे एक तो कुलाचारसें करणा सो दुसरा लोकीक लाज छोमके करणा सो गृहस्थलोक कुलाचारसें आरंभ समारंभ करतेहें तेसें म्लेच्छ लोक कुलाचारसें हिंसा करतेहें वो जाहिरा छोटा पाप जांणना तेसेंही साधूका वेष पहरकर निर्लज्जपणेसें हिंसा प्रमुख करतेहें वो प्रगट महापाप जांणना लज्या छोमके महापाप करणेसें अनंत संसारीपणा होताहे क्योंके प्रगट महापाप करणेसें जैन शासनका उमाह होणेसें महापापहे कुलाचारसें प्रगट लघु पाप करे तो थोमा कर्मबंध होताहे ओर जो गुप्त छोटा पाप करे तो तीव्र कर्मबंध होताहे जो कोइ आदमी पराये अवगुण छिद्र ओर मर्म उघामकर स्वार्थ साधनकी उन्नती करतेहें वो कभी होती नही जेसे अरटकी घमनाल खाली ओर भरी होजातीहे कोइ एसी शंका करतेहे की न्यायवान ओर सदाधर्ममें चलणेवाले दुखी देखणेमें आतेहे ओर अन्याइ अधर्मी लोक सुखी देखणेमें आतेहे जिसका

समाधान एसाहे जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखतेहे उर धर्मी दुखी दिखतेहे ये सब पूर्व-कृत पुन्यपापका फलहे इस भवका उनोके नहि जांणना श्रीधर्म घोषसूरजीने कहाहे पुण्यानु बंधिपुन्य १ पापानु बंधिपुन्य २ पुण्यानु बंधि-पाप ३ पापानु बंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखदुखके च्यार भेदहे जो जीव जैन धर्मकी विराधना नही करतेहे वो जीव भरत-चक्रवर्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहे वो जीव पुण्यानुबंधवाले कहातेहे जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्ट करे वो जीव कोणिक राजाकी तरे बहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहे पापकर केभी धर्म करे नही उर पापकर्मसें रक्त होय वो पापानुबंधिपुन्य जांणना जो जीव पापके उद-यसें दलद्री उर दुखीहो करकेभी लेसमात्र दयाधर्म होणेसें द्रमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाताहे वो पुण्यानुबंधिपाप जाणना ३ उर जो जीव काल शोकरिकश्वंमाल कसाईकी तरे क्रूर-कर्म करणेवाला अधर्मी निर्दइ करे हुये पापका पछतावा नही करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो पापानुबंधि पाप कहलाताहे पुन्यानुबंधिपुन्यसें

बाहरकी शुद्धि उंर अंतरंग शुद्धिभी पातेहे दोनोंमेंसें एकभी शुद्धि जिसने नहि पाइ उस मनुष्यजन्मकों धिकारहे जो जीव पहली अछे परिणामसे धर्मकाम सुरू करे उंर पीछेसें शुभ परिणाम उतर जाणेसें पूरा धर्म करे नही वो जीव परभवमें आपदा संयुक्त संपदा पावे इसतरे कोइ जीवकूं पापानुबंधी पुन्यके उदय-सें इस लोकमें दुखकष्ट जतावे नही तोभी उसकूं अगले भवमें परिणामसें निश्चें पापकर्म-का फल मिलेगा इसमें शंका नही कहाहे के द्रव्य पैदा करणेकी बहोत इच्छासें अंधा हुवा मनुष्य पापकर्मकरके जो धन पातेहे वो धन मांसमें पोये हुये लोहके कांटेकी तरे उस अ-दमीका नास करे विगर पचता नही इसवास्ते जिसमें स्वामीद्रोह होय एसा मासूलकी चो-री वगेरे सर्वथा छोमणा उस्सें इसलोकमें उंर परलोकमें अनर्थ उत्पन्न होताहे जिसवातसें किसीकों थोमीभी तकलीप पैदा होवे वो व्य-वहार तथा घर दुकान करावते तथा लेणेमें तथा रहणेमें जो कुछ होय सो वर्जणा क्योंके किसीकों तकलीप देणेसें अपणे सुखकी उंर धनकी वढोतरी नहि होती कहाहे के जो कोइ

आदमी मूर्खताइसें मित्रकूं कपटसें धर्मकूं सुखसे विद्याकूं क्रूर ओर कठोरताइसें स्त्रीकूं वस करणा चाहे तेसेंइ दुसरेकूं तकलीप देकर आप सुखकी चाह करे उसकूं मूर्ख जांणना विवेकी लोकोंको चाहीये सो ज्यों अपणेपर लोक प्रीति करे तेसें चलणा क्योंके इंद्रीयां जीतनेसें विनयगुण पैदा होताहे ओर विनयसें अछे २ गुण पैदा होतेहे तब सब लोक उस गुणोंके पिछाडी प्रीति रखतेहे ओर लोकोंके अनुरागसें सर्व संपत्ति पैदा होतीहे चतुर पुरषकों चाहिये अपणे घरके धनका नफा नुकसांन कीया हुवा संग्रह वगेरह बात कोइके आगे नही कहणी क्योंके चतुर आदमी स्त्री आहार पुण्य धन गुण दुराचार मर्म ओर मंत्र ये आठ चीज अपणी छीपाके रखणी कोइ अजाण अदमी ऊपर लिखी आठ वातोंमेसें पूछे तो झूठ तो नही बोलणा लेकिन् एसा कहणा तुमारे इस बातसें क्या मतलब हे एसा उत्तर भाषासुमतिसें देणा राजा गुरु वगेरे बडे आदमी इनमेंकी बात पूछे तो सच्च २ जेसा होय वेसा कहदेणा क्योंके मित्रोंके साथ सच्च बोलणा ओरतके साथ मीठा बोलणा दुस्मन साथ झूठ

लेकिन् मीठा बोलणा ओर अपणे मालकके साथ उनोकों अच्छा लगे एसा सच्च बोलणा सच्च बोलणा ये मनुष्यकूं बमा आधारहे कारणके सच्च बोलणेसें विश्वास पेदा होताहे इसपर एक दृष्टांतहे दिल्ली शहरमें एक मोहनसिंहनामका पारख रहताथा वो बमा सत्यवादीथा एसी उसकी कीर्त्ति फेल रहीथी बादशाह एकदिन उसकी परिक्षा करणेकूं उस मोहनसिंधकूं पूछा तुमारे पास कितनाएक धनहे मोहनसिंह बोला में अपणा वहीखाता संभालके कहूंगा उसनें अपणा वहीखाता संभालकर अरज करी गरीबपर मेरेपास आसरे चोरासी लाख रुपया होगा बादशाह बोला में थोमा सुणाथा लेकिन् इसने तो बहुत कहा बादशाह प्रसन्न होकर उसकूं पारखपद देकर अपणा निज खजाना सोंप दीया विवेकी पुरुषकूं चाहीये सो कष्ट आपदामें साहाय करे इसवास्ते एक मित्र करणा वो धर्मसें तथा धनसें प्रतिष्टासें तथा ओरभी अच्छे गुणोसें अपणी बराबरीका बुद्धवान ओर निर्लोभी होय रघुवंशकाव्यमें लिखाहे राजाका मित्र बिलकुल शक्तिरहित होय तो राजाके वखतपर काम

पमणेसें राजापर उपगार नहि करसके उंर राजाका दोस्त राजासें ज्यादा शक्तिवांन होय तो वो राजासें इर्षासे वैर विरोधकर बेठताहे इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाला होणा चाहीये मित्र एसा होताहे सो आपदा-कू दूर कर विषमवखतपर सहाय करताहे जिस वखतमें सगा ज्ञाइ उंर बाप उंर कोइज्ञी स्वजन कांम नही देसकताहे रामचंद्रजी क-हतेहे हे लक्ष्मण अपणेसें बमा उंर समर्थकी साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण उसके घर जब आप जावे तब तो अपणा कुछ आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपणे मकानपर आवे तब उसकी सब तरेसें हाजरी ज्ञरणी पमे उंर धन खरच करणा पमे एसाहे तथापि जब कोइ बमा कांम आय पमे तो, बमे अदमी विगर सुधरताज्ञी नही उंरज्ञी हरतरेके फायदेहे क्योंके यातो आप समर्थावान होणा या समर्थकूं हाथमें रखणा नही तो कार्य सा-धनका डुसरा रस्ता नहीहे बमे आदम्योकों चाहीये सो हलके आदमीके संगज्ञी दोस्ती करणा कोइ काम एसा आय गिरताहे सो ह-लका आदमीसेंही निकलणेका होताहे पंचा-

ख्यानमें लिखाहे जंगलमें बंधनमे परे हुये कबुतरोके बंधन उंदरने छुडाये सुईका काम तलवारसें बणे नही मित्रोकूं शुद्ध मनसें भाइ-बंधवोंको सन्मानसें स्त्रीउंकों प्रेमसें नोकर चाकरकूं दांनसें डुसरे लोकोकूं चतुराईसें वस करणा कोइ वखतपर डुष्ट अदमीकोंभी अग-वाणी करणा पडताहे अपणां मतलब सिद्ध करणेकूं रसकूं चाखणेवाली जीभ लडाइ कर-णेकी वखत एसी चतुरहे सो दांतोकों आगे कर-के अपणा काम साधतीहे कांटाहे सो प्रायें डु-खदाइहे लेकिन उस विगर निर्वाह होता नही देखो खेत गाम घर बगीचोंकी रक्षावास्ते प्रायें कांटोंकी वाड लगाइ जातीहे जहां प्रीती मोह-बत होय वहां लेणदेण करणा नही जिस अ-दमीसें मैत्री नही करणी होय उहांही लेणदेण करणा उंर जहां अपणी इज्जत जाणेका डर होय उहां खडा नही रहणा सोमनीतिमें लि-खाहे जहां लेणदेण उंर सामल रहणा होय वहां लडाइ हुये विगर रहे नही अपणे दोस्त-कोंभी कोइ चीज सोपणी होय तो गवाही रखे विगर नहीं सोपणी तेसेंइ कोइ चीजवस्त किसीकों भेजणी होय तो मित्रके साथ भेजणी

नही अगर विश्वास रक्खे तो धनकी हानी नही रक्खे तो अनर्थ होय विश्वासवाला या अविश्वासवालाहो लेकिन् एसा मित्र विरला होगा सो अपणी छुपाकर सोंपी चीजपर लोभ नही करे बडे २ सेठ साहूकारोंकी बुद्धि अस्त-विस्त होजातीहे पराइ जमा जब अपणे घरमें आपडे तो मनमें कहतेहें हे इष्टदेव ये घरवट धरणेवाला मरजावे तो तुझें प्रसाद चढाउंगा जरूरसें धन अनर्थकी जडहे लेकिन् जेसें अग्नि विगर तेसें धन विगर गृहस्थका काम चलता नही इसवास्ते चतुर पुरषोंकों चाहीये सो अ-ग्निकी तरे धनका जाबता करे एक धनेश्वर सेठ अपणा सब धन माल वेचकर आठ रत्न एक क्रोडमें खरीद कीया किसीकूं खबर नही पडे इसतरेसें अपणे मित्रकूं सोंप दीया पीछे आप धन कमाणेकूं परदेश गया वहां बहोत दिन रहा अंतमें बेमारीके वस मरणे लगा तब लो-कोनें पूछा कुछ समाचार अपणे बेटोसें कहणा होय तो कहदो तब सेठ बोला इहां जो मेनें बहोत धन कमाया सो तो लोकोमें उधार लेणाहे सो तो पुत्रोंकों मिलणा मुसकिलहे ले-किन् एक क्रोडके आठ रत्न मेरे मित्रके पासहे

सो पुत्रोंसें कहणा के लेलेवे एसा कहकर सेठ मरगया सच्चहे बंदेका चिंता कुछ नही होता वाद लोकोने धनेश्वरसेठके पुत्रोंकों ये बात कही तब उनोने बापके मित्रकूं विनयसें प्रेमसें बहुमांनसें मकानपर बुलाके अनयदांन होगा एसी बहोत युक्तिसें रत्न मांग्या तोभी लोभमें पड्या हुवा वो मित्र बोला मेरेकों कब सोंपाथा आखिरको सिरकार दरबार चढे लेकिन् खत-पत्र उर गवासायदी न होणेसें हाकिम कुछभी पूरावा नही मिलणेसें मुकद्दमा खारज कीया गया एसा समज मोगम विश्वास मित्रकाभी नहि करणा गवाही रखणेसें एक उंसवालका धन चोरोकूं दीया हुवा पीछा आयाथा एक धनवान साहूकार बड्या धूर्त्तथा परदेशसें पीछा आते रस्तेमें चोरोंकी धाड पडी चोरोनें जुहार कर सेठपास धन मांग्या तब सेठ बोला देखो भाइयो मारणेका कांम नहीहे लेकिन् ह्मारे साहूकारोकी रीतहे सो गवाही सायदी रक्खे विगर माल देते नही तब चोरोने विचारा ये बणिया पागलहे अपणे तो धनसे कांम तब चोर बोले या लोकडी जंगली विलाव गवाहे ल्यावो दो सेठ बोला पीछा कब दोगे चोर बोला

पासमें होगा जब चोर माल लेकर चले गये सेठ अपणी वस्तीमें आया एकदिन वे सब चोर बहोतसा मालताल लेकर आये तब सेठ उन चोरोकूं बोला हमारे रुपये लाउ चोर बोले हमने कब रुपे लीयेथे आखिरकों लम्ते २ सरकारमें गये हाकम पूछणे लगा कोइ गवा साक्षीहे सेठ बोला एक मीन्नीहे चोर बोले सरकार वणीया सरासर जूठाहे जंगलकी लोंकमीकों मीन्नी वतलाताहे इतना सुणतेही हाकिम समजगया के वणिया सच्चाहे लेकिन् बमा धूर्त्तहे उसी वखत सेठके सब रुपे दिलवा दिये गवाही एसा काम देताहे किसीमें जमा विगर गवा धरदी गइहो उर वो बदलगया होय तो धरवट निकालणेकी चतुराइ वेस्या जेसी करणी वो दृष्टांत एसाहे एक पारीक ब्राह्मनके पास दस हजार मोहरेंथी वो किसीका विश्वास करे नही उस गांवके बाहिर एक जोगीकी झूंपमीथी वो बावा वमानेक उर पेसा नही रखताथा किसीने रोटी लायदी तो खायली नही तो किसीके घर जाता नहीथा अलख २ जपताथा न किसीके पाससें कुछ मांगता कोइ रुपया देता तो लेता नहीथा एक

लंगोटी उर तूंबा चिमटा रखताथा उस ब्राह्म-
णकों तीर्थ जाणेकी जरूरी नइ मनमें विचारणे
लगा वणियोकूं सौं पूगा तो खाजायगें कारण
व्याजके लालचसें पहली तो धरणेवाला मांगे
नही देवाला निकाले वाद वणिया देता नही
इय वात डुनियांमे मसहूरहे ॥
दुहा—कंताकबहुनकीजिये वणिकपुत्रविसवास ॥
धीरजादेकेधनहरे रहेदासकोदास ॥ १ ॥
दुसरे भेषधारी षट्दर्शनवालेकी जमातो
बहोतही राजीपेकेसाथ हजम करताहे निहूंता
देदेके चंगेमाल खिलाताहे उस लालचमें ब्राह्म-
ण उर भेषधारीकी जमा जाते रहतीहे एसा
विचार करते बरू त्यागी वेरागी जोगी फक्कड़
याद आया मनमें विचारा ये बावा कोमीनी
नही लीपताहे एसा विचार बावेजीके पास
एकांतमे जाके बोला बाबा साहिब बडी मह-
रबानी होगी में आपकी कृपासे च्यारों धाम
फिर आउं अगर ये आपके पास धरलो तो ये
बडा आसान होगा आप तो परमार्थ साधते
हो दुसरे लोभी साहूकारोका मुझे भरोसा
नही आता आप निस्पृही इस सोनेको धूल
मट्टी समजतेहो तव योगी बोला चल २ इहांसे

में क्या करुं इसके लालचसें कोइ मुजें मार जायगा इस बखेडेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्राह्मण बहोतही नम्रतासे पांव पकडके आजीजी करणेलगा दुनियामें आडे हाथही घी गिरताहे तब जोगी बोला उस आलेमें इस थेलीकों रखके तालाबंध करके कूंची तेरेपास लेजा किसीसें कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस होकर इसी तरेसें धरके चलधरा थोडे दिनवाद योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २ मोहरके अगर पच्चीस २ रुपे वटेगे तो अढाइ लाख होगा होते धन तकलीप पाणा ये वे अक्कलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हेनही यह धन तो मेरा हो चूका एसा विचारकर जोगी अब गृहस्थोसें कहणेलगा बाबा एक जोगी यानी लटका हासिल कीयाहे पतवाके तो देखें उन लोकोकें पाससें एक झाडसाही पेसा मंगाके बावाजी कुछ जंगलकी पत्तीमें घरके अंगीठीमें पहले मोंहर धर दीया करे ठंडा हुये वाद वो मोहर निकालकर उन गृहस्थोके हाथ विकवाणा सरू करा बावा बोले लो बच्चा एक मठ तो बनवा डाले नांम रहजायगा अब तो बावेकूं रसाणी किमीयागर जांण-

के हजारों लोकोंकी भीड़ मचणेलगी बड़ी सायेदार हवेली झुकाली गद्दी तकीये पलंग वगेरोसें दुसरे जाणो साहूकारही बण बेठा इधर तो रेणमाल रखणा गुमास्ते ओर सीपाही अ- छीपोसाक अतर पांन फूल चंगे मलीदे उड़णे- लगे बड़े २ साहूकारोका आम दरबार जूड़णे- लगा बावेजीके पासमें रुजगार व्यापारमें पांच सात लाखका धन जमा होगया तब बावेजीने विचारा कुछ धन पासमें खजानेमे रखणा जोगीनें अपणे गुमास्तोसें दस हजार उसही सिक्केकी मोहर मंगाकर उस ब्राह्मणकी थेलीमें डालकर अपणे पासमें रख छोड़ा मनमें विचा- रणे लगा अड़े बड़े काम आवेगा सोनेकी ते- जीमें वेचके व्याजभी पैदा करलूंगा यूंकरते पांच छ वर्षवीतें वाद ज्यारोंही धामकर ब्राह्मण पीछा आके देखे तो बावेजीकी झोंपड़ी नहि देखी बड़ी अंबारत देखके पूछणेलगा लोकोसें इहां बावा जोगी रहतेथे सो कहां गये लोकोने कहा ये मकान उनहीकातोहे तब ब्राह्मनके धसका पड़ा कुछ दालमें कालाहे खेर विचारा अंदर गया तो बावेजीके जरीतास मुखमली पोसाख देखके पहचाणा नही लेकिन जोगीने पहचाण

लिया लोकोसें पूछा जोगीबावा कहा लोकोनें इसारेसें बतलाया तब नजीक जाकर धीरेसें बोला महाराज अछे हो जोगी बोला तुम कोणहो कहांसे आये क्यां नांमहे उर क्या कामहे तब ब्राह्मन बोला महाराज में वो ब्राह्मनहूं जोकी दश हजार मोहरे धरगयाथा ये बात सुणतेही बावेजी बोले अरे इस मूरख ब्राह्मनकों सेर आटा देकर बाहर निकालो एसे भिक्षुकोकों मेरेतक अंदर केसें आणे देतेहो एसा कहता उठके अंदर चलागया इतनेमें नोकर आके ब्राह्मनकूं बोला लेजा सेर आटा हुकमहे बावेजीका ब्राह्मन तो मूर्च्छा खाके जमीनपर गिरगया नोकरोनें उठाकर बाहिर चोकीपर धरदिया जब जाग्रत हुवा तब हाय मोहरें २ करता फिरणेलगा मनमें विचारणेलगा गवा साक्षी विगर सिरकारभी तो सुणेगी नही दुसरे सब लोक मुजें जूठा कहेगें मेरी कोण सुणेगा क्या करूं कहां जाउं हा विधाता मेरी वे अक्कलीका फल मुजकों मिला एसा वो ब्राह्मन निरास दिवानेकी तरे भोलणेलगा एसे फिरतेकूं एक वेस्याने देखा तब उस ब्राह्मनकूं बुलाके बहोत धीरज उर दिलासा देकर पूछा

तब उसने सब हकीगत कही वेस्या बोली मत घबराउ मैं मोहरें पीछी दिला देतीहूं लेकिन् में जिसवखत उहां जाके बेठूं उस वखत तुम उस योगीसें मोहरें मांग लेणा फोरन् देदेगा एसा कह वो वेस्या पांचसात संदूकोमें पत्थरोकों भालके कुलफ लगाकर बंधकर उसका वीजक कोड़ क्रोड़ रुपे आसरेका बनाया उंर जमाउ गहणा मोहरे रुपया वगेरे एसी नगदायतकी एक संडुक अलग रक्खी आप एक सेठाणीका वेष बनाकर पांच सात बभारणोकों संग लेकर रथमें सवार हो वो संडुकोकूं संग ले बावेजीके पास पोहची बभारणे पेस्तर जाके खबरदी बावासाहिब सेठाणीजी आपके दरसणकरणे आतीहे सो आप सब आदम्योकों बाहिर भेज देवें बावाजीनें एसाही कीया वेस्या आयके पांच मोहरे भेटकर पांवोमें गिरके रोणे लगी बावाजी दिलासा देकर बोले क्यों बच्चा क्यों इतना घभरातीहे क्या हालहे सो कह पातर बोली क्या कहूं स्वामीजी वारे वर्ष हुये सादी करके सेठसाहिव परदेस गयेथे सो अबतक मेनें राह देखी लेकिन् अब में उनकेपास जातीहूं लेकिन् इहां मुझें किसीकाभी भरोसा

नही ग्रर आपकी नेकनांमी दुनियामें मसहूरहे सो भरोसा जांणके ये क्रोड़ रुपयेका सामान तो इस संदुकोमेंहे सो सबमें खोल २ के दिखातीहूं एसा कहकर पेसतर लाख दस एकका जो सामानकी गहणोकी संदूक खोलके दिखाणे लगी देखतेही बावाजी तो दंग होगये ग्रर मनमें विचारणे लगे ग्रछी दिनदसा जागी ग्रब इस मालमेंभी मेरे बहोत सामाल हाथ लगेगा कीमती नग निकालकर हलके जड़वा दूंगा कमसेकम वीस लाखका इसटेट तो मेरा होचूका इतनेमें तो वो ब्राह्मन ग्राकर बोला बावाजी ग्राजके ठ वर्ष पेस्तर जो मेनें झोपड़ीमें दस हजार मोहरे ग्रापकेपास रक्खीथी सो दीजीये बावाजीने विचारा जो में नासुकर जाउंगा तो ये सेठको धनमें मनचिंता केसें पेस होगा तब बोला हां भाइ लेजा झट ऊठके वो थेली दस हजारकी लाके देदी ग्रर बोला ले भाइ तेरी संभाल ले ब्राह्मण गिणकर थेली कबजे करी इतनेमें तो दोड़ती २ ग्रायकर दासी बोली वधायजे २ सेठाणीजी साहिब सेठसाहिबकी सवारी घरपर ग्रायगइ इतना सुणतेही वेस्या एकदम हसती २ झपकेसें वो

पांचों मोहर उठाके उठी तब ब्राह्मणकूं हसी आइ ये तमासा देख योगीकूं हसी आगइ तब दासीने एक चोपाइ पढी ब्राह्मन हस्यो गयो धन पायो सेठाणी हसी सेठ घर आयो तूं क्यों हस्योरे नरमा भेखी जोगी बोला एक कलामे अध कीसीखी सों जिस अदमीकी चतुराइ लायक तारीफकेहे सो गया धन पीछा लावे किसीने धरवट जमा धरीहे अगर वो मालक मरजावे तो उसके पुत्रादिक परवारको देदेणा चाहिये कदास वारिस कोइ नही होय तो संघके सांमने धर्मखाते लगादेणा इतने कांममें आलस नही करणा गांठमे धन रखते चीजकी परिक्षा करते गिणतीके वखत गुप्त रखणेमें खरच करणेमें उर नामाठामा हिसाबकी वखत अगर रखेगा तो नुकशानी पायगा क्योंकें विगर लिखे मूंसे वात याद रहणी मुसकिलहे उर भूलणेसें वृथा कर्मबंध होताहे अपणे निर्वाहकेवास्ते चंद्रमा जेसें रविके पिछाडी चलताहे तेसेंइ राजा उर प्रधानोके अनुयाइ चलणा नही तो वखतपर अनादर होजाताहे राजाके आश्रयसें अनेक कार्य सिद्ध होताहे तेसेंइ सहज काममें जेमें तेमें सोगण नही खाणी

विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ओर यक्षणीकी गुफामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो अदमी मंदिरकी धर्मकी सच्ची या झूठी सोगन खातेहे उसका बोधवीज जाते रहताहे ओर अनंत शंशार रुलताहे किसीकी जमानत नही देणी कारण जमानतभी एक आपदाहे ये पांच चीज आपदाका कारणहे घरमें दलद्री होकर दो ओरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही भरणी ओर दो तरेकी खेती विवेक पुरषोंकों चाहीये सो वणे जहांतक जहां रहता होय उहांही व्यापार करणा जिस्सें स्वजनोसें विछोहा नही होवे धर्मभी अछी तरेसें वण आताहे जो आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस जाणेकी तकलीप उठावे कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन दलद्री रोगी मूर्ख मुसाफर ओर हमेसां पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेभी मरे जेसेहें एसा समझणा जो परदेस जांणेकी जरूरी होय तो आप अथवा अपणे लडकोंसें परदेसमें व्यापार नही करवाणा अपणे परीक्षावंत खातरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कोइ कारण योगसें परदेस जाणा पडे तो अच्छे

सकुन मुहूर्त्त स्वर देखकर देव गुरु वंदन करके अच्छा साथ देखकर विदा होणा रस्तेमें नींद प्रमाद विश्वास करणा नही भाग्यवानका साथ होय तो बहोत अच्छाहे किसीमें जमा या लेणदेण बाने होय तो अपणे स्वजनोकूं वाकब करदेणा स्वजनोकूं सीखामण देकर सबके संग राजीपेसें बात चीतकरके विदा होणा अपणे पूज्य पुरषका अपमानकर अपणी स्त्रीसें लभाइ कभवे वचन कहकर किसीकूं मार पीटकरके बालककूं रोवाय करके परदेस नही जाणा विदा होणेके दिनोमें कोइ पर्वया उच्छव नजीक आगया होय तो करके जाणा जन्मका उर मरणके सूतकमें अपणी स्त्री रजस्वला होय तब तथा उर कोइ मंगलीक कामभी छोभके नहि जाणा दूध खाय करके उरतसें भोगकरके स्नान करके उलटी करके थूकके किसी अदमीके कहे हुये करभे वचन सुणकरके हजामत कराय करके आंखोमेंसे आंसु भालकरके तथा अपशकुन होता होय इतने कारण करके परदेश नही जाणा जिधरका श्वर चलता होय वोही पांव देहलीमें बाहिर धरणे करके जाणेसें सर्व काम सिद्ध होताहे जाना हुयें सामने रोगी बुढा

ब्राह्मण अंधा गाय पूज्य गुरु आदि राजा गर्भवंती स्त्री ढंर सिरपर बोझा उठाया हुवा आदमी इतनोकों पहली रस्ता देकर पीछे आप जाणा कच्चा अन्न पक्का अन्न पूजणेयोग्य मंत्रका मंडल नांख दीया गया एसा उबटणा स्नानका पांणी खून ढंर मराहुवा कलेवर थूक श्लेष्म विष्टा मूत जलती हुइ अग्नि साप मनुष्य शस्त्र इतनी चीजों कोइ वखतभी उल्लांघणी नही विवेकी पुरुष नदीके किनारे तक गाय बांधनेके ठिकाणेतक वड वगेरेके दरखततक तलाव सरोवर कूआ वगीचा वगेरे आवे उहांतक मित्रादिकोकों पोहचाणे जाणा चाहीये अपणा भला चाहणेवाले अदमीकों रातकूं दरखतके नीचे रहणा नही अजाण अदमीके संग अथवा गोलेके दासके संग रस्ते चलणा नही दो पहरका तथा आधी रातका रस्ते चलणा नही लेकिन् रेल तथा अग्निवोट टालकर क्रूर अदमी रखवाली करणेवाला चुगल सिल्पी अर्थात् कारीगर अयोग्य मित्र इनोकेसंग बहोत वातचीत नहि करणी वे वखत इनोके संग आणा जाणाभी नही रस्ते चलते चाहे जितना थकेला चढजाय तोभी भेसा गधा गाय इनोपर नहि चढणा हा-

थीसे हजार हाथ गाम्डीसे पांच हाथ सींग मारणेवाले पशु तथा घोम्डेसें दस हाथ दूर चलणा विगर जातासंग लिये विगर रस्ते च- लणा नही मुकाम करणा उहांजी ज्यादे नींद नही लेणा सङ्कम्डोंइ काम आपम्डे तोजी एके- ला नहि जाणा एकेला किसीके घरमेंजी नहि घुसणा कोइके मकानमें आम्डे रस्तेजी नही घुसणा पुराणी नांवमें नही बेठणा एकेला नदी- में नही घुसणा उर सगेजाइके संगजी एका- एक विचारकर धनपासमें लेके चलणा नही जल या थलमें विगर जावते पग धरणा नही जो अदमी क्रोधी सुखके चाहणेवाले उर कं- जुस होय वो लोक अपना स्वार्थ खो वेठतेहे जिस समुदायमें सब लोक मालकपणेका अजि- मांन धरातेहे उर सब लोक मनमें पंम्डिताइ मांनतेहे उर वम्डपन चाहतेहे वो समुदाय ख- राब अवस्थामें जागिरताहे जहांपर केदी लोक रहते होय अथवा जहां जनमकेदी अथवा जिनोकों फासी लगणीहे एसे अदमी जहां रहते होय जहां जूआ चलता होय जहां अपणा अनादर होता होय तथा किसीके ख- जानेमें अंते उरमे जाणा नही उगंगा नफ-

रत आणेकी जगह मसाण सूनवाड़ बजार अ-
थवा ठिलका या सूका घास विखरा होय
जहां जाते हुये बहोत तकलीप होय जहां
कचरा डालते होय अकूरड़ा खारी जमीन दर-
खतके शिखरपर पहाड़की टूंकपर नदी और
कूवेके कांठेपर जहां राख कोयला बाल खोपरी
वगेरे पड़ी होय इतना ठिकाणोमें ज्यादे खड़ा
नही रहणा बहोत महनतभी होय तोभी जो-
काम करणा होय सो करणाही अगर तकली-
पसें डरेगा तो पुरुषार्थका फल जो धर्म अर्थ-
काम ये तीनोंही मिलसकता नही जो अदमी
आडंबर रहित होताहे उसका अनादर हो-
ताहे इसवास्ते बुद्धिवानोंकूं जरूर आडंबर र-
खणा परदेस जाणेसें अपनी इज्जत माफक
आडंबर अपणे धर्मकी नेष्टा रखणी इस वातोंसें
बडाइ बहुमान और मनमें विचारे हुये कामकी
सिद्धी परदेसमें बहोत लाभ होय तोभी ज्यादे
नही रहणा कारण पिछाडी मकानकी व्यवस्था
विगड़ जातीहे काम सिद्धीकेवास्ते पंचपरमेष्टीका
ध्यांन तथा गौतमका नांम लेणा कितनेक चीजे
देव गुरु तथा ज्ञांनकेवास्ते काम आवे एसी
तरेकी रखणी क्योंके धर्ममें धन लगाणेसें ध-

नकी सफलता होतीहै धर्मके सात क्षेत्रोमें धन
लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पेदा करते
आरंभ करणा पडे उसकी निवृत्तिके वास्ते वि-
वेकी आदमीकों चाहिये सो नित्त वडे २ मनो-
रथ करता रहे कारण मनुष्यकी बुद्धि जेसी
अपणी तकदीर होय उसही तरेकी काम कर-
णेका यत्न करताहै धन काम उर यश ये ती:
नोका कीया हुवा यत्न वाजेवखत निष्फल
होताहै लेकिन धर्म कांम करणेके मनोरथ
खाली नही जातेहै जीर्ण सेठकी तरे जब
धनकी वृद्धि होय तब धर्मकामकेवास्ते पहली
कीया हुवा मनोरथ सफल करणा चाहीये
क्योंके उद्यमका फल धन धनका फल सुपा-
त्रोकों दान देणा जो अगर सुपात्र दांन नही
करे तो लक्ष्मी उर उद्यम दोनों दुर्गतिका का-
रण होताहै सुपात्रोके दानसें धर्म धन कहला-
ताहै धर्ममें लगाइ जाय सो धर्म ऋद्धि जोगमें
लगाइ जाय सो जोग ऋद्धि उर जो इन दो-
नोंके काममें नही लगे उर अनर्थ पेदा करे वो
पापऋद्धि कहलातीहै पूर्वभवके करे पापसें अ-
थवा आगूं होणेवाले पापसें पाप ऋद्धिजी
पाताहै इसपर दृष्टांतहै वसंतपुर नगरमें ए

ब्राह्मण एक रजपूत एक वणिया एक सुनार ए च्यारजणे आपसमे दोस्तथे वो च्यारोंही धन कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा लटकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब तीनोंनें तो उसका लालच छोड दिया लेकिन् सुनार बोला नीचे गिर तब स्वर्णपुरष नीचे गिरा तब सुनार उसकी अंगली काटली बाकीके स्वर्णपोरसेंको खड्डेमें डालदिया पीछे उन च्यारजणोंमेंसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें गये अंर दोजणे बाहिर रहे तब गांममें गये सो जहर मिलाके खांनपांन लाये मनमें विचारा वो दोनों इसके खाणेसें मरजायगें तब पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा उधर उन दोनोने विचार कीया वो जब सहरमेंसें आवेगें तब उनोकों तलवारसें मारडालेगें तब ये पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दोनोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया अंर वो दोजणोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो वोभी दोनुं मरगये ये पापऋद्धि कहलातीहे इसवास्ते हमेसां देव अरिहंतका पूजन अन्नदान वगेरह

पुण्य तथा कोइ वखत पर संघ पूजा साधर्मी वात्सल्य वगेरह धर्मकाम करके लक्ष्मीकूं सुकृतार्थमें लगाणा हमेसा थोमा २ पुन्य करणाही चहीये थोमा होय तो थोमेमेसें थोमाही लगाणा धर्मके काममें ढील नही करणी भाग्यवानकी इर्ष्या न करणी द्रव्य पैदा करणेका उद्यम हमेसा करणा वणिया वेश्या कवि भट्ट चोर ठग ब्राह्मण इतने अदमी जिसदिन कुछ नही मिले वो दिन निष्फल मांनतेहे थोमी आवंदमें उद्यम ठोमणा नही माघ काव्यमें लिखाहे जो अदमी थोमीसी संपदा मिलणेसेंही अपणी अच्छी दशा मां न लेवे उसका देवभी अपणा कर्त्तव्य कीया हुवा जाणके संपदा वधाता नहीहे ज्यादा लोभभी नहि करणा क्योंके अति लोभके वस सागरसेठ समुद्रमें मूबके मरगया हदविना तृष्णाका धन तो मिलणाहे नही कंगाल अदमी अगर चक्रवर्त्तिपद चाहे तो क्या मिलसकताहे भोजन वस्त्र वगेरह तो मिलभी सकताहे जेसी अपणी योग्यता होय वेसीही इच्छा करणी क्योंके अपणी तकदीरकों पे सतर पिछाण लेवे लोभ एसी बुरी बलायहे सो ज्यों ज्यों लाभ होता जाताहे त्यों त्यों बढ-

ताही जाताहे जीवण मल नाहटेके अफीमके फाटकेमें नगद असी हजार रुपे पासमें होगये तब सोहनलाल गोलछेने कहा अब जीवणमल फाटकेका सट्टा छोडकर जेपुरमें सराफी दुकान करले सो लखपती जेसा रुजगार खरच चलता रहेगा जीवणमल बोला लाख रुपया होणेसें फाटका छोडूंगा आखिरकों यह हाल हुवा सो वो सब धन वरबाद होकर हजारो रुपेका करजदार होकर आखिरकों वरबाद होगया ये बात मेनें प्रतक्ष देखीहे जो अदमी आस्याका दास भया वो जगतका दास होजाताहे अर जिसनें तृष्णा आसा जीतली उसनें जगत् जीतलिया गृहस्थोंकों चाहीये सो धर्म अर्थ काम इन तीनोंकों आपसमें बाधा नही पोहचे एसा सेवन करणा अपणे २ वखतपर सब करणा निकेवल विषयसुखमें मग्न एसा कोण आदमीहे सो आपदामें नही पडताहे विषय मग्न आदमीके धनकी धर्मकी शरीरकी लोक लाजकी नुकशानी होतीहे धर्म अर काम दोनोकों छोडके जो कष्ट करके धन पैदा करतेहें वो धन दुसरेही भोगतेहें जेसे सिंह हाथीकूं मारकर फकत पापकाही भागी होताहे अर्थ

ओर काम इन दोनोंकों छोमके जो फकत धर्म-
ही सेवन करतेहें वो साधू मुनिराजकाही
धर्महे गृहस्थका नही गृहस्थोकूंनी चाहीये
सो धर्मकूं बाधा उपजायकर अर्थकूं ओर कामकूं
सेवन नही करणा जेसे खेत वोणेकूं रखे हुये
बीजोकों जो जाट खाजाताहे एसें अधर्मी
पुरषका अंतमें कल्याण नही होताहे जो अद-
मी परलोक नही विगामे ओर इस लोकका
सुख नोगे वोही सुखी कहलाताहे तेसेंइ धनकूं
विगामकर धर्मकूं ओर कामकूं सेवन करताहे वो
करजदार होजाताहे तेसेंइ कामकूं बाधा पो-
हचायकर धर्मकूं ओर धनकूं सेवन करताहे उ-
सके सुखका लान नही होताहे इस मुजब
क्षणिक थोमी देरके विषयसुखके विषे आसक
हुये मनुष्य ओर मूलकूं खानेवाला ओर कंजूस
इन तीनोके धर्म अर्थ काममें बाधा पहूंचतीहे
जो अदमी कुछनी जमा नही करे जो कुछ मिले
वोही विषयके उलफतमें खरच देवे वो क्षणिक
विषयसुखी कहलाताहे जो आदमी अपने बा-
पदादेका कमाया धन अन्यायसें खाजाय वो
वीज अर्थात् वो मूल नक्षक कहलाताहे ओर
जो अदमी अपने जीवकूं कडूंवेको नोकर चाक-

रकूं दुख देकर धन जमा करे वो कंजूस कृपण कहलाताहे योग्य ठिकाणे खरच नही करे वोभी कृपण कहलाताहे इसमें क्षणिक विषयासुखमें आसक्त ओर मूल भक्षक ये दोनोंही धन खोणेवालेहे इय दोनोंही पीछे पछतातेहे कृपणकी जमा पराइ कहलातीहे राजा भाइबंध या जमीन या चोर वगेरे लोक कंजूसका धन खातेहें उसका धन धर्ममें अथवा काममें लगता नहीहे जिसके धनके भाइबंध मालक होय चोर लूंटे किसीभी बलसें राजा ले लेवे अंगारमें जल जावे जलमें डूबजाय जमीनमें रहजाय खोटी चाल चलणमें उमादेवे एसा जो धन बहोतोके ताबेमें रहेहुयेकूं धिकार हो जेसें माल जादी ओरत अपणे पुत्रकों लाम लमावते हुये पतिकूं हसतीहे तेसें मोत शरीरके रक्षककूं हसतीहे जमीनहे सो धनके रक्षककूं हसतीहे कीम्डियोका जमा कीया हुवा धान मखीयोका जमा कीया हुवा सहत कंजूसका जमा कीया हुवा धन ये तीनोही पराये काममें आतेहे इसवास्ते गृहस्थकूं चाहीये सो धर्म अर्थ ओर कांम इन तीनोंको बाधा नही पोहचावे जो कर्मयोगमें बाधा पडे तो इस मुजब हिफाजत

करणा कामकी जो गवाइ नही मिले तो धर्म-
की ओर धनकी रक्षा करणी कारण इन दोनो-
की रक्षा करणेवालोकूं विषयसुख मिलभी सक-
ताहे तेसेंइ अर्थ ओर कांम दोनोंकी जोगवाइ
नही मिले तो धर्म तो जरूरही करणा कारण
धनकी जरू धर्महे ठीकरेसें भीख मांगकरकेभी
अपणी आजीविका चलाता होय ओर धर्म क-
रता जाय तो मनमें विचारणाके में धनवानहूं
जो मनुष्य जन्म पायकरके इन तीनोका सा-
धन नही करताहे उसकी ऊमर पशुकी तरे
निकम्मी जातीहे जितनी धनकी आवंद होय
उसमें एक भाग जमा करणा दुसरा ओर चोथा
हिस्सा व्यापार ओर व्याजमें लगाणा तीजे भाग
चोथे भाग अपणे उपभोगमें तथा धर्मकाममें
खरचणा चोथेका चोथा हिस्सा कुटंब पोषणमें
लगाणा केइयक कहतेहे पेदासका ज्यादा
हिस्सा आधेसें धर्ममें खरचणा ओर बाकी जो
पेदास बचे उसमें शंसारके सब काम चलाणा
केइयक कहतेहे ऊपर लिखी पहली बाबत
गरीब गृहस्थकेवास्तेहे दुसरी कलम धनवान
वगेके वास्तेहे लेकिन धर्मके आगे सब काम
तुच्छहे जीवत ओर लक्ष्मी किसकूं वल्लभ नहीहे

लेकिन् वखत पडनेपर सत्पुरष दोनोंकों तिनखे बराबर गिणतेहे १ यशका फेलाव करणा होय २ दोस्ती करणी होय ३ अपणी प्यारी स्त्रीके वास्ते कुछ कांम होय ४ अपणे निर्धनभाइबंधुउंकों सहाय करणा होय ५ धर्मकाम करणा होय ६ विवाह करणा होय ७ दुस्मनका क्षय करणा होय ८ अथवा कोइ संकट आगया होय इत्यादिक कांममें स्याणे आदमी धन खरच करणेकी गिणती रखते नहीहे चतुर आदमीका एक छदामभी अगर खोटे रस्ते चला जाय तो हजार रूपया गया एसा समजतेहे वो अदमी अच्छे रस्ते आतेहे एसा आदमी अगर क्रोडो रुपया खुल्ले हाथसें खरच करे तोभी धन खूटता नही इसपर एक दृष्टांतहे एक सेठके बेटेकी बहू नइ परणी हुईथी उसनें एकदिन अपणे सुसरेकूं चराकके अंदरसें नीचे गिरे हुये तेलके बुंदसें अपणी जूती चुपडते देखकर दिलमें विचारणे लगीके मेरा सुसरा कंजूसहे यह बडी कसरहे तब उसने पारख करणेकूं एसा बाहना कीया के मेरा सिर दुखताहे एसा कहती हुइ रोणे लगी तब सेठ बहोतही इलाज करवाया लेकिन जांणकर करे

जिसका फायदा केसें होय तब बहु बोली ऐसें मेरा सिर बहोतसीवेर दुखा करेहे आखिरकों वधिया मोतीयोंकों पीसके लेप करणेसें मिट-जाताहे ये बात सुणतेही सेठ बमा प्रसन्न हो-कर वेसे वधिया मोती मंगाकर पीसणेकी तया-री करी इतनेमें वधू बोली धन्य हे सेठसाहिब वसकीजीये मेनें तो परिक्षा करीथी सब बात कही तब सेठ बोला बहू निकाम कोइभी चीज नही खोइ जातीहे वाजब खरच चाहे लाख लगे धर्मरस्ते खरचणा यह लक्ष्मीका वशी क-रणाहे देणेसें धन जाताहे एसा मत समजो उलटी वृद्धि होतीहे कूआ बगीचा गाय यह ज्यो ज्यों देतेहे त्यों त्यों बढतेहे इसपर दृष्टां-तहे विद्या पतिनामे एक श्रेष्ठथा वो बमा धन-वानथा स्वप्नेमें लक्ष्मी देवी बोली अहो सेठ में आजके दसमे दिन तेरे घरसें जाती रहूंगी तब सेठ सब धन सात क्षेत्र धर्मके उसमें लगाया उर गुरुके पाससे परिग्रहका प्रमांण व्रत लीया प्रभातसमें देखे तो घरमें पहिले माफकही दे-खणेमें आया तब उसने फेर धर्ममें लगाया इस तरेसें नवदिन वीतगया दसमे दिन स्वप्नेमें लक्ष्मी आयके बोली हे सेठ अब में तेरे पुन्यसें

थिर होगइ लक्ष्मीकी एसी बात सुणके सेठने विचार कीया कदास मेरा व्रतमें भंग न पडे एसें डरसें नगर छोड बाहिर चलागया इतनेमें विना पुत्र नगरीका राजा मरगया उसके पिछाडी मंत्रीयोने पाट हस्तीकी शुंडमे अभिषेक कलस दीया जिसपर डाले वोही राजा आखिरकों उसनें विद्यापति सेठका अभिषेक कीया तब देवतोंने आकासवाणी करी हे सेठ यह राज्य तो तुझें करणाही होगा तब सेठ राज्य सिंहासणपर ऋषभ देव अरिहंतकी मूर्तिकूं बेठायकर आप राजकाज चलाया अनुक्रमसें पांचमें भव मोक्ष गया न्यायसें धन कमाणेवालेका कोइ सक नही रखताहे जगे २ तारीफ होतीहे प्राये करके नुकशांन नही होताहे सुख समाधि दिन २ बढते जातीहे इसवास्ते न्यायवंतपणेका धन दोनों भवमें सुखदाईहे धर्मी पुरष शुद्ध चलणसें धीरजसें वर्त्तावा करतेहे लेकिन् पापी अदमी कुकर्मी होणेसें सब जगे शंकासें वर्त्तावा रखताहे इसपर दृष्टांतहे देव और यश ये दोय नांमके सेठ वहुत प्रीतिसें साथ २ फिरतेथे कोइ सहरमें रस्तेमें पडा हुवा रत्नसें जडा हुवा कुंडल उन दोनोनें देखा देव तो

श्रावकथा इसवास्ते पराया धन लेणेका नियम होणेसें पीछा फिरा यशजी उसके संग पीछा फिरा लेकिन् मनमें विचारणे लगा पर्मी चीज ठगनेमें क्या दोषहे तब देव सेठकी नजर चुकायकर कुंम्ल ठगा लीया फेर मनमें विचारणे लगा मेरा मित्र देव हे सो धन्यहे जिसमें केसीक निर्लोभता गुणहे लेकिन् केइयक दिन ठहरेवाद इनमें उसकूं आधीपत्ती देउंगा एसा विचार यससेठ उस कूंम्लके धनसें बहोत किरीयाणा खरीद किया अनुक्रमसें दोनुं अपणे सहरमें आये पांती करतीवखत ज्यादा किरियाणा देखके देवसेठ इसका कारण पूछा तब उस यशने सब हकीगत कही तब देव सेठ बोला अन्यायसें पेदा कीयां हुवा ये धन मेरे कुछ कामका नही जेसें खट्टी कांजीसें दूधका नांस होय तेसें इसके संग अच्छा धनजी जाते रहताहे एसा कहकर ज्यादा किरियाणा दूरकर अपणे हक्कका किरियाणा उसमेंसें लेलिया यस वो सब किरियाणा ले जाकर अपणी दुकानमें रखा रातकूं चोर वो सब किरियाणा लूंटके लेगये प्रभात सहरके व्यापारी आये किरियाणा नही बजारमें इसवास्ते इतनी

तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लाभ होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेभी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनभी लीया जाय तो लेणेवालेके बहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं बहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीयें तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन् हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसकिलहे तेसेंइ सुद्धमनवाला उर योग्य उर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो बहोतही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें वेष बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों नहुंता देणे मंत्रीकूं भेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोभके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पडके दुखी होय राजाका दांन सहतमें जहर मिला जेसा हे वख-

त्पर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन् राजापास दांन नहि लेणा चक्रवर्त्तपास दांन लेणा दस हिंसा समान ध्वजकेपास दांन लेणा हजार हिंसा समान राजापास दांन लेणा सो दश हजार हिंसा समान एसा स्मृतियोंका तथा पुराणोका वचनहे इसवास्ते मैं राजदांन नही लेउंगा तब मंत्री बोला हे साक्षात् ब्रह्ममूर्ति आपकूं निजन्यायसें पेदा किया धनका दांन देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोष नही इत्यादिक वचनोसें समझायकर मंत्री राजाकेपास लाया राजा उसकूं निजासन दीया पगधोकर विनयसें पूजा करी वो आठ मोहर दक्षिणा तरीके कोइ नही देखे इस मुजब मूठीमें दांन दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं देख मनमें गुस्से हुये राजाने इसकूं कोइ सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा बहोतसा धन दुसरे ब्राह्मनोकों देदेकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोडे दिनोमें खूट गया सब ब्राह्मनोके लेकिन् वो आठ मोंहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखूट होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्यायसें पेदा कीया धन उर सुपात्र दांन इसके

चार भंग होतेहैं जिसमें पहला भेद एसें है
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें उत्कृष्ट
देवतापणा युगलियोमें मनुष्यजन्म ओर सम्यक्त
वगेरेका लाभ होताहै अंतमें मोक्षसुख होताहै
जेसे धन्नासार्थवाहने घीका दांन देणेसें साधू
ओंको तेरमे भवमें ऋषभदेव तीर्थंकर हुवा शा-
लिभद्र क्षीरके दांनसें हुवा २ न्यायसें पेदा
कीया धन ओर कुपात्रोंको देणा ये दूसरा भंगहै
यह पुण्यानुबंधि पुण्यका कारण होणेसें इससें
कोइ २ भवमें देवता लाभ विषयसुखका हो-
ताहै तोभी अंतमें फल कम्वे लगतेहैं इस जगे
लाख ब्राह्मनोकों जीमाणेवाले ब्राह्मनकी तरे वो
दृष्टांत एसाहै एक ब्राह्मन हमेसां ब्राह्मनोकों
जीमाते २ लाख ब्राह्मन जीमाया ओर विषय-
सुख भोगता हुवा मरके भद्रजातीका सेचनक
नामका हाथी हुवा ओर उसही जगे ब्राह्मणो-
कों जीमाये वाद जो अन्न वचता सो एक ग-
रीब दलद्री ब्राह्मन सुपात्रोंकों दान देदेता वो
गरीब ब्राह्मन उहांसें मरके सो धर्म देवलोक
गया उहांका सुख भोगके आयुष्य पूर्णकर श्रे-
णिक राजाके नंदिखेण नामका पूत्र हुवा उसकूं
देख सेचनक हाथीकूं जातिस्मरण ज्ञांन हुवा

तोभी अंतमे मरके पहली नरकगया इसवास्ते सुपात्र दांनही श्रेष्ठहे ३ अन्यायसें पेदा कीया हुवा धन ओर सुपात्र दांन इस मुजब तीसरा भंग होताहे अछे क्षेत्रमें हलका बीज वोणेसें जेसा अंकूरा पेदा होताहे लेकिन अनाज पेदा होता नही तिसतरे इससें सुखका संबंध होताहे जिसकरके राजा व्यापारी ओर बहोत आरंभसे धन पैदा करणेवाले लोकोके वो माननें योग्य होताहे यह लक्ष्मीका सघासकी लक्मीकी तरे सार विगरकी ओर रस विगरकी होकरके शात क्षेत्रोमें वोयकरके ऊखके जेसी बणाइ जेसें खलगायकूं देणेसें दूधरूप होजाताहे ओर दूध सापकूं पिलाणेसें जहर होजाताहे इसीतरे सुपात्र कुपात्रके न्यारे २ फल होतेहे स्वातिनक्षत्रका जल सांपके मूंमें गिरणेसें जहर होताहे ओर सीपमें गिरणेसें मोती केलेमें कपूर अब बुद्धिमान विचार लेवे वोही स्वातिनक्षत्र ओर वोही जल लेकिन् पात्रके फेरफारसें कितना तफावतहे इस विषयपर खरतर गच्छी श्रीवर्द्धमानसूरिका उपदेशित आबू पहाडपर विमलमंत्री राजकाजसें धन कमाकर चोखूंटे कोसों रुपया देकर अचलगढकी जमीन ब्राह्मणो-

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको उरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी को-रणीकी रमन्नक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो बूटगया उर कहणेलगा अय परवर दिगार में इस अइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले उर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बके २ अंगरेज उस मंदिरकी छिव देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोनी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ बणासकता तो अनेक पापारं-नसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस नवमें अपयश उर परनवमें नरक पमणा होताहे जिसपर म-म्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन उर कुपात्र दांन यह चोथा नंगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर छोमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कउअेकूं पोषणा जेसें अन्यायके क-माये धनसें श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल निल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमांनकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु

गद्दी घरके मरणेपर उनके मतके उस बाल हजारो रुपे जमाकरके ढेढ थोरी भंगीयोंकों देतेहे उछालकर २ के उर मनमें सुपात्रोंकी भक्ति समझके फूलतेंहे जेपुरमें जीतमलके पिछाम्री वीस हजार लगाये सिरदार सहरमें मघराज- के पिछाम्री वीस हजार लगाये उर सात क्षेत्र जो उचित महापुन्यरूपहे उसमें एक पेसाभी नहि लगातेहें पुन्यनिखेधतेहे धन्यहे इस समझकूं जिन मंदिरोकी कुभ्भी सार संभाल नहि करतेहे न्यायसें उपार्जन कीया धन सु- पात्रोकों दान दे तो कल्याण होताहे लेकिन् अन्यायसें कमाये धनसें कल्याण चाहतेहे सो कभी होणा नही वो कालकूट जहर खाणे जे- साहे अन्यायसें धन कमाणेवाले गृहस्थ अ- न्याई लभाइखोर अहंकारी उर पापकर्मी हो- ताहे जेसे विक्रम संवत तीनसेमें रांका सेठका होणेकी कथा श्राद्धविधीमें लिखीहे वेसा अ- न्यायसें धन जमा कीया अंतमे दुखदाइ हो- ताहे साधुउंका आहार विहार व्यवहार उर वचन ये च्यारोंही शुद्ध होताहे सो दुनिया देखतीहे लेकिन् गृहस्थका तो एक व्यवहारही शुद्ध देखतेहे व्यवहार शुद्ध होय तो सब धर्म

काम सफल होताहै श्राद्धदिनकरमेंभी लिखाहै व्यवहार शुद्धधर्मका मूलहै कारण व्यवहार शुद्ध होय तब कमाया धन शुद्ध होताहै और धन शुद्ध होय तब आहार शुद्ध होय अहार शुद्ध होय तब देह शुद्ध होताहै और देह शुद्ध होय तब धर्मके योग्य होताहै और धर्मकृत्य सफल होताहै व्यवहार शुद्ध विना सब निर्फलहै व्यवहार शुद्ध नही रखे वो अदमी धर्मकी निंदा करातेहैं और धर्मकूं निंदा कराणेवाला दुर्लभ बोधि होताहै इसवास्ते एसे यत्नसें एसा काम करणा जिस्सें मूर्खलोक निंदा नही करसके आहार माफक शरीरकी प्रकृति वंधतीहै जेसें बालक ऊमरमें घोमा भैंसका दूध पीताहै वो तो जलमे अच्छी तरेसें पमे रहतेहै और गायका दूध पीणेवाले जलसें घोमे दूर रहतेहै तेसेंइ बालक जेसा आहार करताहै वेसाही उसकी प्रकृति होतीहै इसवास्ते विवहार शुद्ध रखणा तेसेंही देसविरुद्ध कामकूं छोमणा जेसें सिंघदेसमे खेती करणी देश विरुद्धहै तेसेंइ लाट जो भरु अच्छका प्रांत देस जिसमें दारू सराप निपजाणाभी देसविरुद्धहै इस मुजव औरभी अनेक देशोंमें अनेक वात-

का रुजगार देसविरुद्ध जो श्रेष्ठ लोकोनें मना कीयाहे सो नहि करणा जातिकुलवालोंमें जो रीत बंधीहे उससें विरुद्ध नहि करणा जेसें ब्राह्मण होकर मद्य नहि पीणा तिल लूंण वगेरे- का रुजगार नहि करणा उनोके शास्त्रमें तिल- का रुजगार करणेवाले ब्राह्मणकूं नीच उंर शुद्र लिखाहे परन्तवमें घाणीमें पिली जताहे कुलकी मरजादा मुजब शोलंकी राजपूतोके तथा सीसो दिया राणाके मदरा पीणा मनाहे परदेसवाले लोकोके सामने उनके देसकी निंदा करणी वोभी देसविरुद्धहे अब काल विरुद्ध नहि करणा सो लिखतेहे ठंडकालेमें हिमालय पर्वतके आसपास जहां बहोत ठंड पडती होय जहां गरमीकी मोसममें मारवाड बीकानेर आदि प्रांत देशोमें जहां बिलकुल जल नही उंर वर्षातकी मोसममें मालवा दक्षण प्रमुख देशोंमें जहां बहोत कादा बहोत पाणी दरियावके कांठे कोकण देशमें विना अपणी अच्छी शक्ती विगर किसीके सहाय विगर नही जाणा जहां बहोतकाल होय कालकावासाप्रायें इन देशोंमें रहताहे ॥

दुहा—पगपूगलधडमेडते वासोवीकानेर ॥
भूलोचकोमालवे ठावोजेसलमेर ॥ १ ॥

दोय राजाउंके आपसमें तकरार चालती होय उहां धाम वगेरे पमणेसें रस्ता बंध होय अथवा पार नही पमे एसे बमे जंगलमें समी सांझ वगेरह नयंकर वखतमें विना सहाय अथवा विनाताकत जांणेसें प्राणकी अथवा धनकी हानि होय अथवा डुसरा कोइ अनर्थ सांमने आवे सो काल विरुद्ध कहलाताहे अथवा फागण महीनेवाद तिल पीलणा तिलका व्यापार करणा अथवा तिल खाणा वर्षातकी मोसममे चंदलीया वगेरे पत्तोंका साग खाणा जहां बहोत जीवाकुल जमीन होय उसरस्ते गामी गामा असवारी चलाणा एसा बमे जुलम करणा सो काल विरुद्ध कहलाताहे राजविरुद्ध नहि करणा सो इस तरेसें राजा प्रधानादिकोका ऊगुण निकालणा राजमाने एसा मंत्री वगेरेका आदर सत्कार नहि करणा राजासें वे मुख एसें आदमीकी सोहवत करणी वैरि डुस्मनोके ठिकाणे लोनसें जाणा वैरि डुस्मनोके ठिकाणेसें आये हुये अदमीके संग वर्त्ताव रखणा राजाकी महरवानीहे एसा समज राजाके करे हुये कांममें फेरफार करणा सहरमें आगेवान जो लोक होवे उनोंसें विपरीत चलणा

अपणे मालकके साथ निमक हरामी करणी यह सब बाते राजविरुद्ध कहलातीहे इसके फल बहोत बुरेहे जेसें भुवनभानूकेवलीका जीव पूर्वभवमे रोहणीथी वो बभी विचारवाली नेष्टावाली ओर पढी हुईथी लेकिन् राजाकी राणीका वृथा कुशील कलंक बोलणेसें राजा उस साहूकारकी बेटी रोहणीकी जीभ काटकर देससें निकालदी दुखी होकर रोहणी अनेक भवोमें जीभ कटानेका दुख पाया इसवास्ते राजविरुद्ध कांम नही करणा लोककी तेसेंइ विशेष करके गुणीजणोकी निंदा करणी ओर आपणे मूंसे अपणी तारीफ करणी ये दोनोंही लोकविरुद्ध कहलाताहे खरा या खोटा पराया ओगुण निकालणेसें धनका ओर यशका लाभ हो-ता नही इतनाही नही लेकिन् जिसके ओगुण प्रकास करे वो एकनया दुस्मन पैदा होताहे अपणी तारीफ पराइ निंदा वस नही रखी हुइ जुवान ४ ओर अच्छे कपडे ५ ओर क्रोधादि कषाय ए पांच चीज संयम पालणेकूं अच्छे उ-द्यम करणेवाले मुनिराजकूंभी हरजाना करताहे जिस अदमीमें अच्छे २ गुण हे तो विगर कहेभी जाहिर हुयेविगर रहेगा नही नही जब झूंठी

बमाईमें क्या फायदाहे आप अपणे मूंसे तारी-
फ करे उसके मित्र उसकूं हसतेहे जाइ निंदा
करे एसे आदमीकों बमे आदमीपास नही
विठलाते उर उसके मावापजी उसकूं बहोत
मानते नही अपणी तारीफ उर परनिंदा जवो-
जवमें नीच गोत्र कर्मवंधताहे वो कर्म क्रोमों जव
होणेसेंजी बूटणा मुसक्लि होताहे पराइ निंदा
करणी यह बमा पापहे कारण बहोत खेदकी
बातहे विगर कीये पापजी पराइ निंदा करणे-
वालेकूं खड्डेमें गिराताहे इसपर एक दृष्टांतहे
सुग्राम गाममें सुंदर नांमका एक सेठथा वो
बमा धर्मीथा सो मुसाफर वगेरह लोकोकूं जो-
जन वस्त्र रहणेका ठिकाणा वगेरह देकर उनके
ऊपर उपगार करताथा उसके पमोसमें एक
ब्राह्मणी रहतीथी वो सेठकी हमेसां निंदा कीया
करे लोकोकूं कहा करे यह सेठ मुसाफर लोक
परदेसी मरजाताहे उसकी जमा हजम कर-
णेकूं यह वणिया एसा करताहे एकदिन एक
कार्पटि अर्थात् सामी प्यासकरके व्याकुल आ-
या तव सेठ अहीरणके पाससें गाठ मोल लेकर
उसकूं पिलाइ उसके पीणेसें वो गुसाइ मरग-
या कारण उस अहीरणने गाठका वरतण उ-

घाला रख गेमाथा उसमें चीलक सापकूं ले-
जातीथी उसमें गरल गिरगईथी एसा हाल
देखकर वो ब्राह्मणी कहणेलगी देखाक केसाक
धर्म सेठने कीया इसवखत वो हत्या आकासमें
खमी विचार करणेलगी के सेठका कुछ कसूर
नही उंर सापसो अज्ञानी तेसेंइ चीलखके मूंमे
होणेसें परवसथा उंर चीलकका जातिस्वभाव
सापकूं खाणेकाहे अहीरण इस बातकी अजां-
णहे अबमें किसके पिछामी चिपुं अंतमे वो
हत्या उस निंद्याखोर ब्राह्मणीके लगी उस
करके काली कुरूप कोढणी होगइ इस मु-
जब निंदकका हाल होताहे जो कोइ अण-
हूंता अछता दोष चढावे अब सच्चा उंगुण
जाहिर करे उसपर दृष्टांत एसाहे किसी राजा-
आगे कोइ परदेसी तीन खोपरी लाया उसकी
पंमितोने परिक्षा करी वो इस मुजब एक खोपरी-
के कांनमे मोरा माला सो मूंमेमेंसें बाहिर
निकलगया तब पंमत लोक बोले अरे इसने
जो जो बात कांनोसें सुणा सो सब मूंमेसें
बकदीया करतीथी इसवास्ते इस खोपरीकी की-
मत फूटी कोमीहे दूसरी खोपरीके कांनमें मोरा
माला वो मोरा दूसरे कांनमेंसें बाहिर निकल

गया तब पंम्ति बोले तेनें इस कांननसें बात सुणी उर दुसरेके आगे बाहर निकाल देताथा इसवास्ते इस खोपरीकी किम्मत लाख मोहरकीहे तीसरी खोपरीके कानमें मोरा माला सो गलेमें उतरगया इसके जीवने जो कुछ बात सुणी सो पेटमेही रखी इसवास्ते इसकी कीमत हम नही करसकते इसतरे छती बात कहतेहें उनोकी अमोल कीमतहे सीधा सरल आदमीकी मस्करी नहि करणी गुणवान आदम्योंसें द्वेषभाव नहि करणा कृतघ्नी नहि होणा बहोत लोकोके संग वैर विरोध रखणेवालोंकी सोहबत नहि करणी लोकोमें पूजा प्रतिष्टा पाये हुये अदमीका मांनभंग नहि करणा अच्छी चालचलणके आदमीमें कोइ तरेका संकट आ पमे तो दिलमें खुस नहि होणा अपणेमें शक्ति होय उर भले अदमीमें संकट आपमे तो जरूर मदत करणी रीत मर्याद कुलकी तथा देसकी छोमणी नही अपणे घरकी हेसियतसे ज्यादे वधिया तथा ज्यादे घटीया वेषभी नहि पहरणा चाहिये यह सब बातें लोकविरूद्ध कहलातीहे इस बातोसें इस लोकमें अपयश होताहे वाचक श्रीउमास्वाति सर्वं

शिरोमणीने लिखाहे के सर्वधर्मी लोकोंकों लो-
कही आधारभूतहे इसवास्ते जो बात लोक-
विरुद्ध अथवा धर्मविरुद्ध होय वो सर्वथा नहि
करणी ये दोनों विरुद्ध छोमणेसें लोकोंकी अ-
पणे ऊपर प्रीति होतीहे स्वधर्म साचवणेमें
आताहे ओर सुखसें निर्वाह होताहे लोकप्रिय
आदमी सम्यक्त वृक्षके बीजभूतहे अब धर्मवि-
रुद्ध कहतेहे मिथ्यात्वका काम करणा मनमें
दया नहि रखता हुवा बलद वगेरोकों मारणा
बांधणे आदि तकलीपका देणा जूंमांकमोकों
धूपमें मालणा सिरके बाल बमी बारीक कांग-
सीसे सन्नारणा लीखोंकों फोमणा गरमीकी
मोसममें गलणे मजबूतसें तीन वेर ओर मो-
सममें दो वेर जीवोंकी सार शंभाल नहि रख-
कर पांणीका छाणनेका उपयोग नहि रखणा
अनाज इंधन गोवरी शाग खाणेके साग पान
फल फूल तपासणेमें अच्छी तरे उपयोग नहि
रखणा सावत सोपारी खारक खजूर बुहारा
वालोल फली वगेरे सावित यूंकी यूं मूंमें माल-
णी नाला वगेरह धाराका जल पीणा चालते
बेठते सोते सिनान करते कोइ चीज रखते
अथवा लेते रांधते कूटते दलते घसते ओर मल-

मूत्र खंखार थूंकते कुरला करते जल तथा पांनका पीक नालते बराबर जतना राखणी धर्म करणीका आदर करणा देवगुरु तथा साधर्मी इनोके संग द्वेष नहि करणा देवके द्रव्यकूं अपणे कांममें नहि लाणा अधर्मी अदमीकी सोहबत नहि करणी धर्मी अदमीकी मस्करी नहि करणी कषायका उदय बहोत नहि रखणा बहोत पापकारी चीज लेणी या वेचणी नही कठोर खरकर्म तथा पापमइ अधिकार इत्यादिकमें नहि प्रवर्त्तणा ये सब बाबतें धर्मविरुद्ध कहलातीहे यह जो ऊपर लिखी बावत मिथ्यात्व वगेरेका वयान अर्थ दीपकामें कीयाहे धर्मी लोक देसविरुद्ध कालविरुद्ध राजविरुद्ध अथवा लोकविरुद्ध आचरण करे तो धर्मकी निंदा होतीहे इसवास्ते इन सब बातोंकों धर्मविरुद्धही समजणा अब हितोपदेशमालामें नव प्रकारका उचित आचरण लिखाहे वो आचरण केसा कहेके सब मनुष्य तो देह इंद्रीयों धराणेवाले एकसेहीहे उनोमें केइयक आदमी इस शंशारमें स्याणे विचक्षण होकर यशवंत कहलातेहें वो सब उचित आचरणकीही महिमाहे वो इस मुजबहे अपणे पिता संबंधी १ मातासंबंधी

२ जाइसंबंधी ३ स्त्रीसंबंधी ४ पुत्रपुत्रीसंबंधी ५ सगेस्वजनसंबंधी ६ बमे लोक संबंधी ७ सहरके रहणेवाले लोक संबंधी ८ तेसेंइ अन्य दर्शनीसंबंधी ए ये नव उचिताचरणा सब मनुष्योंकोंकरणा वा जिव हे पिताकी नक्ति मनवचन कायासें करणी चाहिये बापकी शरीर शेवा चाकरकी तरे आप करणी उनोका पग धोणा दाबणा वृद्ध अवस्थामें उठाणा बेठाणा देश उर कालके माफिक उनोंकों जोजन कराणा बिछावणा वस्त्र गहणा वगेरे वस्तु देणा कोइके कहणेसें तिरस्कार अपमांन नही करणा पुत्र अपणे बापके सामने बेठा जेसा शोजापाताहे वेसी शोजाका सो माहिस्सा उंचे सिंहासण बेठणेसें कजी मिलणेका नही बापके वचन मूंमेंसें निकल तेही उठा लेणा चाहिये जेसें राजतिलक बेठणेके वखत रामचंद्रजीनें पिताका वचन पालणेकूं वनवास पधार गये वेसें सपूतोंकों करणा चाहीये जी हजूर जो हुकम अजी करताहूं एसी मुजबही कबूल करणा लेकिन आनाकानी सिर धूणना अथवा बहोत देर लगायकरके काम करणा अथवा अधूरा कांम छोमदेणा इत्यादिक अवज्ञा नहि करणी उनोकों पसंद पमे

एसें सब कांम करणा अपणी अक्कलसें कोइ कांम निश्चेंही करणा विचारया होय तोन्नी उनके जचे तन्नी करणा बुद्धिका पहला गुण यहीहेकी माबापकी टेहल करणी जब वो प्रसन्न होतेहें तब गुप्त रहस्य सब बतादेतेहें ज्ञानकरके जो बमेहे उनकी बंदगी नहि करणेसें चाहे कितनेही पुराण उंर आगम पढो चाहे कितनीही अपणी बुद्धिसें कल्पना करो लेकिन्न ज्यादे बुद्धिकी प्रबलता होती नही एक स्थविर जो बातें जाणताहे सो लाखों जुवान नही जांणतेहे देखो राजाकूं लात मारणेवाला अदमी वृद्धोके वचनसें पूजाताहे वृद्धोकें वचन सुणने कांम पमनेपर बहुश्रुत वृद्धकोंही पूबणा सम्यक्त कोमुदीमें लिखाहे हंसका टोला वंधनमे पमे हुयेकूं वृद्ध वचनोने बुमाया तेसेंही मनका अन्निप्राय पिताके आगे प्रकटपणे कहणा जो काम मना करे सो नही करणा कोइ कसूर होणेसें पिता करमी जुवान कहे तो तोन्नी विनीतपणा नहि बोमणा मर्यादा बोमकर बेतरेका उत्तर नहि करणा जेसें अन्नयकुमार श्रेणि कराजा उंर चेलणा माताका मनोरथ पूर्ण कीया तेसें साधारण मनुष्यन्नी अपनी शक्ति माफक

मनोरथ पूर्ण करणा उसमेंज्ञी देवपूजा गुरुजक्ती धर्म सुणना व्रत पच्चखान करणा ७ आवस्य-कमें प्रवर्त्तणा सात क्षेत्रोमें धन लगाणा तीर्थ-यात्रा करणी ज़र दीन डुखी अनाथोकूं परवरि-स करणा ये धर्म मनोरथ पिताके अच्छे उमं-गसें पूरा करवाणा कोइज्ञी तरे मातापिताके उपगारका जार पूत्र नही उतार सकता लेकिन् अपने बमेरे गुरु लोकोंकों केवलीका कहा स-द्धर्म्मके विषे जोमे विगर ज़र उपाय उनके बदला उतारणेका नही ठाणांग सूत्रमें लिखाहे तीन अदमीका उपगार ऊतर नही शके एसाहे मावापका १ धणीका २ ज़र धर्माचार्यका ३ कोइ अदमी जावज्जीवतक प्रजातसमें अपने मावापकूं शतपाक सहस्रपाक तेलसेती मालिस करे सुगंध पीठीमसले गंधोदक गरम पाणी ठंमा पाणीसें स्नान करावे गहणे पहरावे सुशोजित करे जोजन शास्त्र मुजब रांधकर अठारे जातिके शागयुक्त मन माफक अन्नादिक जीमावे ज़र यावज्जीव खंधे उठाये फिरे तोज्ञी मावापके उपगारका बदला पूत्र नहि ऊतार सके लेकिन् जब वो पुरष केवली जाषित धर्म सुणायकर मनमें बराबर ऊतरायकर धर्मका मूलजेद ज़र

उत्तरनेदकरके प्ररूपणाकरके उस धर्ममें स्थापन करदेवे तब तो मावापके उपगारका बदला उतर सक्ताहे इसी तरे कोइ बमा धनवान अदमी एकाध दलद्रीकूं धन वगेरे देकरके अच्छी अवस्था बणादेवे उर वो नाग्यवानही बणा रहे तदपीछे वो देणेवाला कर्मयोगसें दलद्री होजाय उसकूं वो अपणा सर्व धनमाल देदेवे तोनी अपणेकूं नाग्यवान बनानेवाले मालकका बदला नही उतारसके लेकिन् जो उस मालककूं केवली कथित जिन धर्ममें दृढ करदेवे तनी उस मालकका बदला उतरशके कोइ पुरष सिद्धांतमे कहे मुजब श्रमणमाहण धर्माचार्यके पाससें धर्मका एक उत्तम वचन सुणकर मनमें उसका विचार करे मरणकी वखत तदपीछे देवलोकमे देवता होकरके अपणे धर्माचार्यकूं काल पमे हुये मुलकसें सुकालके देसमें लेजाकरके रक्खे बमा विकराल जंगलमेंसें पार उतारे अथवा बहोत दिनोंके वेमारीकों मिटावे तोनी उस धर्माचार्यके उपगारका बदला नहि उतरे लेकिन् जब धर्माचार्य केवलि प्ररूपित धर्मसें भ्रष्ट होजाय उसकूं केवलि कथित धर्ममें पीछा दृढ करे तनी बदला उतरसके मातापिताकी

सेवा श्रवणकी तरे करणी केवलि कथित धर्ममें थिरकरके दीक्षा देणेवाले माबापोकूं आर्यरक्षतसूरजीका दृष्टांत जांणना उर केवल ज्ञान उत्पन्न हुया पीछे माबापकूं प्रतिबोध करणेकूं निरवद्य वृत्तिसे रहे हुये मकानपर कूर्मापूत्रका दृष्टांत जाणना अपणा मालक मिथ्यात्वी सेठकूं प्रतिबोध देणेवाला उसका मूनीम जिणदास सेठका दृष्टांत जांणना अपणा धर्माचार्यकूं धर्मसें भ्रष्ट हुयेकूं फेर धर्ममें स्थापन करणेपर शेलकाचार्यकूं पंथक शिष्यका दृष्टांत जांणना इत्यादिक पितासंबंधी उचिताचरण कहाहे १ इसी तरेही मातासबंधी उचिताचरणहे लेकिन जो कुछ विशेषहे सो लिखतेहे माता जातकी स्त्री होतीहे उर स्त्रीका मीजाज एसा होताहे थोमीसी निकम्मी बाबतमें वो अपणा अपमांन मांनलेतीहे इसवास्ते उसका दिल नही दूखे सपूतोकों चाहीये सो उनकी मरजीमाफक चले बापसेंभी ज्यादा मन माका रखणा जरूर हे क्योंके बापसें मा ज्यादे पूजनीकहे सो बात इसतरे जांणना उपाध्याय जो सूत्र अर्थ पढावे उससें दशगुण ज्यादे आचार्यहे उर आचार्यसें सो गुणा अधिक बापहे उर बापसें

हजार गुण अधिक माताहे जांनवर जहांतक दूध पीणा होय उहांतकही मां मांनतेहे अधम पुरष जहांतक स्त्री नहि मिले उहांतकही मा मानतेहे मध्यम पुरष घरका कामकाज उस माताके हाथसें चलता होय उहांतकही माकूं मांनतेहे उंर उत्तम पुरष तो यावज्जीव मांनतेहे जांनवरोकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोष पातीहे मध्यम पुरषोकी माता पूत्रकी कमाईसें सुखी होतीहे उत्तम पुरषोंकी माता पूत्रका सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहे उंर धर्मात्मा पुरषोंकी माता पूत्रका उत्तम आचरणसें खुस होतीहे २ अब भाइ संबंधी उचिताचरण कहतेहे अपणे सगेभाईकूं अपणी मांफक जाणना छोटे भाईकूं बडे भाईमाफक गिणना क्योंके बडा भाइ बाप बराबर होताहे जेसें श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा तेसेंइ शोक माका अथवा सगीमाके भायोंके संग वर्त्तावा रखणा भायोकी मरजीमाफक चलाणा भायोंकी स्त्री पूत्र वगेरे लोकोंनेभी उचित आचरण ध्यांनमें रखणा जुदा भाव नही दिखावे मनका अभिप्राय कहे पूछे उनोकूं व्यापारमें लगावे भायोंसें थोडाभी धन व्यापारमें

छूपाके रखे नही जिसकरके ठगोसें ठगावे नही मनमें दगा रखके धन नही छिपावे लेकिन् संकटमें काम आवे इसवास्ते कोइ वखत काम आवेगा एसा समझके छिपाके रखणेमें कुछ दोष नही २ अगर खराब संगतसें अपणा भाइ धीठ होय तो उसकों उसका दोस्त होय जिस्सें समझावे आप एकांतमें समझावे अथ-वा दुसरेके मिषसें समझावे काका मामा सु-सरा साला वगेरे लोकोंसें सीखामण दिरावे आप ज्यादा तिरस्कार भाईका करे नही क्योंके कदास बेसरम होकर मर्यादा न छोडदेवे हृद-यमें प्रीति होय तोभी बहारसें उसकूं अपणा स्वरूप क्रोधी जेसा देखावे उर जब वो भाइ विनयवान होजावे तब उसके संग पूरे प्रेमसें बात करे इत्यादिक उपरके लिखे मुजब उपाय करणेसेंभी जब सुधरे नहि तो इसका स्वभा-वही एसाहे एसा तत्वविचारकर उसकी उपेक्षा करे ३ भाईकी स्त्री पूत्र वगेरोके देणे लेणेमें समान दृष्टि रखणी अपणे स्त्री पूत्रकी तरे आ-दर रखकर भरण पोषण करणा उर सोकेल-माके भाईके स्त्री पूत्र वगेरोका मांन पांन उप-चार अपणे स्त्री पूत्रसेंभी ज्यादे रखणा कारण

उन लोकोंकें थोमीसी बातमें दिलमें फरक आताहे उंर लोकोंमें अपकीर्ति होतीहे इसीतरे उंर लोकोंसेंनी उचिताचरण जिसके जेसा योग्य होय वेसा ध्यांनमें रखणा जेसेंके पेदा करणेवाला १ पालणेवाला २ विद्याका सिखा-णेवाला ३ अन्न वस्त्र देणेवाला ४ उंर अपणे जीवकूं बचाणेवाला ५ ये पांच पिता कहला-तेहे राजाकी स्त्री १ गुरुकी स्त्री २ सासू ३ उंर जन्मदेणेवाली ४ उंर धाय माता ५ ये पांच माता कहलातीहे सगा नाई १ संगमे पढणे-वाला २ मित्र ३ मांदगीमें बंदगी करणेवाला ४ उंर रस्तेमें बातचीत करणेसें हुवा सो मित्र ५ ये पांच नाइ कहलातेहे नाइयोकों चाहीयें सो एक एककूं अच्छी तरेसें धर्म करणी याद कराणा चाहीये जो पुरष प्रमादरूप अग्निसें सिलगे हुये शंशाररूप घरमें मोहरूप नींदमेंसें सूतेंकूं जगावे वो उसका परम बंधु क्हाताहे नायोंकी आपसमें प्रीतिपर नरतका दूत आणेसें ऋषन्न देवके अठाणवे पूत्र नगवानकूं पूछणेगये उनोका दृष्टांत जांणना इसतरे नाईका उचिताचरण जांणना ३ अब नार्याके संग उचिताचरण लि-खतेहे मनुष्यकूं चहीये सो स्त्रीका अच्छीतरे

लाज रखताहुवा प्रेमवचनसें बतलावे अपणे काममें उसकी उमंग वधावे क्योंके पतिका प्रीतिवचन यही एक संजीवनी विद्याहे उसकरके सर्व प्रीति सजीव होतीहे मोंकेपर प्रीतिवचन कहणेमें आवे तो देणेंसेंभी वखतपर ज्यादे दोस्ती पैदा होतीहे क्योंके मीठे वचन जेसा वशीकरण नही कला कौशल जेसा दुसरा धन नही दया जेसा धर्म नही संतोष जेसा सुख नहीं अपणी स्त्रीके हाथसें स्नान करणा पगचंपी करवाणी इत्यादिक अपणी काय सेवामें प्रवर्त्तावे देस काल अपणा कुटुंब धन वगेरेका विचार करके उसके योग्य एसें वस्त्र गहणा वगेरे करवावे तथा नाटक मेला यात्रा विष्णुमंदिरोका रात्री जागरण वगेरोमें जातां अटकावे क्योंके स्त्रीयोंके बिगडणेके इतने ठिकाणेहे ॥

दुहा—केमिलापनदीतीरपर केहरिमंदिरहोय ॥
केविवाहकेजागरेंस केयात्राकीसोय ॥ १ ॥

प्राये करके इण ठिकाणेसें दुराचारी स्त्रीपुरषोका समागम होताहे अपणी शरीरकी टहल बंदकी कराणेसें उरतका अपणेपर विश्वास रहताहे प्रेम वढताहे इण बंदगीकें कराणेसें कोइ वखतभी वो पतिके उपरांठी नही चलतीहे उर

तका अच्छा वस्त्र अच्छा गहना वगैरेहे सो घरकी शोभा और लक्ष्मीकूं वधातीहे क्योंके लक्ष्मी मंगलीक कांम करणेसें वढतीहे और चतुराईसें जन्ममूलरूप थिर होकर रहतीहे और इंद्रीजीतणेसे वसमें रहसकतीहे नाटक और कांमदेव पेदा करणेवाले चित्र तथा गायन सुणणेसें प्रायें औरतें व्यभिचारणीयां होजातीहे जेसें वरसातकी हवासे अच्छे एनेकी आव विगमतीहे एसें औरतें विगमतीहे रातकूं औरतकूं बहार राजरस्तेमें अथवा किसीके घर नजाणे देवे कुटनी स्त्री वगेरे कुशीलकी संगत नही करणे देवे देणालेणा सगासंबंधीयोका आदर सत्कार करणा रसोइका कांम करणा इत्यादिक घरके कांम जरूर करके उनके हवाले करे अपणेसे अलग एकेली नही रहणे देवे मुनिराजकी तरे कुलवंती औरतोंकों वाहिर फिरणा वाजब नही कोइ धर्मसंवंधी कांमकेवास्ते भेजणी होय तो मा वहिन वगेरे सूशील स्त्रीउंके संगमें जाणेका हुकम देणा औरतोके घरके काम इस तरेकेहे विछोना वगेरे विछाना समेटणा झाडू देकर मकान साफ करणा पाणी छाणणा चूला वरतण वगेरे साफ करणा अनाज साफ

करणा चुणना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र सीणा कसीदा निकालणा कलाबतू कनारी गोटे वगेरोके गोखरू अलमास चंपा लमी नामा कसणा बणाणा गहाणा पोणा गाय दूहणी दही जमाणा विलोणा करणा भोजन पाक वगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकूं जेसा लायक एसा पुरसारा करणा भाग्यवानकी स्त्री-यां अगर आप नही करे तो नोकरणी दासी अथवा सूर्पकारादिकसें निगें दास्तीसें करवाणा अपणे लायक होय सो आप करणा सासू सुसरा भर्त्तार नणद जेठ देवर वगेरेका विनय साचवणा इस वजेसें अनेक किसम कुलबहूउं-का कृत्य जांणना जो घरका पति इनकामोमें स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदा-स रहतीहे उर स्त्रीके उदास रहणेसें घरका काम बिगमताहे डुसरे उरतका स्वभाव चपल होताहे सों निकम्मी रहणेसें विगमतीहे स्त्रीकूं देखणेसें वातचीत करणेसें उसके गुणकी तारी-फ करणेसें उसके मनमानी चीजोके देणेसें उर मनमुजब चलणेसें पुरपके ऊपर मजबुत प्रेम जमताहे एसा श्री उमास्वातिवाचक प्रशमरति ग्रंथमे लिखतेहे पुरपोंकूं चाहीये सो पिसाचका

आख्यान सुणके कुलस्त्रीका रक्षण करणा ओर अपणी आत्मासंयमके योगसें हमेसां उद्यममें रखणा स्त्रीकूं अपणेसें दूर नहि रखणा स्त्रीकी सार शंभाल नहि लेणेसें बहोत निगेदास्ती करणेंसें जब आपसमें सामल होय तब नहि बोलणेसें अहंकारसें ओर अपमांनसें इन पांच कारणोसें प्रेम घटताहे पुरष हमेसां मुसाफरी करता रहे तो स्त्रीका मन उस ऊपरसें उतर जाताहे विभचारणीभी होजातीहे स्त्रीकूं क्रोधमें आकर एसा विनाकारण कभी नहि कहणाके में तेरेपर दूसरी परणूंगा कोइ कसूर स्त्रीनें कीया होय तो एकांतमे एसी हितशिक्षा देवें सो फेर एसा कांम नही करे बहोत गुस्सेंमें भरगइ होय तो उसकूं समझावे धनका फायदा हुवा होय या नुकसान हुवा होय तो स्त्रीके सांमने बात नहि करणी तेसेंइ घरकी गुप्त मसलत उसके सांमने नहि कहे दोय ओरतवाले पुरषकूं चैन नही रातदिन लमाइमें वीतताहे बभी आपदाका कारणहे राजा या बभा भाग्यवानोके दो स्त्री फेरभी निभसक्तीहे एक स्त्रीका पतीका प्रेम रामचंद्र जेसा होताहे बहोत स्त्रीयोंका पतीका प्रेम कृष्ण जेसा होताहे

कोइ कारण योगसें दो स्त्री परणे तो दोनोंके पूत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका बारा खंभित नही करणा जो स्त्री अपणी शोकका बारा खंभित करके मैथुन सेवे उसके चोथे व्रतमें अतीचार लगे उरतोसें हमेसां नरमायस रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्राण घाततक कर बेठती हे उर विना नरमायस कार्यमें हरजाणा करती हे जो कभी घरकी स्त्री निर्गुणीभी मिलजाय तो बहोतही समझदारीके साथ घरका कांम चलाणा देहमें जीवहे उहांतक मजबूत वेभी लगी समझणा गृहणीहे सोही घरहे नफा कहणेसें स्त्री खुल्ले हाथोसें धन खरचणें लगजातीहे स्त्रीके पेटमें बात टिकती नही इसवास्ते नुकसानी वगेरे कोइभी गुप्त बात उसके सांमने कहदेणेंसें लोकोमें कहकर आबरू खोदेतीहे राजसंबंधी बातोकें कहणेसें राजदंभभी होजाताहे जिसपर एसा दृष्टांतहे रूमके बादशाहने दिल्लीके बादशाहसें च्यार चीजें मंगवाइ गादीका गधा सराइ कुत्ता असलकी कमअसल कमअसलकी असल वह दृष्टांतसे जांणना अर्थात् सब उरतें उ गुणगारी नही होती प्रायें होतीहीहे अच्छे

कुलकी उंर पढी हुइ चतुर उंर रूपवंत पद्मनी या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहै समजु- वार उंरत तो घरमें मुकत्यारी करे तो फेरभी केइ बातोसें डुरस्तभीहै लेकिन् जिस घरमें प्रायें उंरतोका चलण होताहै वो घर मट्टी मिलजाताहै सरकारी दंडभी होताहै इसवास्ते चतुरोंकों चाहीये सो विगर विचारे घरमें उंर- तोकों मुख्य नही करे जिसपर एसा दृष्टांतहै एक जुलाहै कपडे वूणनेवालेके घरमें स्त्री मु- कत्यारथी वो जुलाहा एकदिन वस्त्र वूणनेके उंजारकेवास्ते लकडी लाणेकूं जंगलमे गया एक सीसमके दरखतकूं काटणेलगा उसका अधि- ष्टायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोभी जुला- हा डरा नही साहसकर काटणेलगा तब इस- का सत्व देखके भूत प्रसन्न होकर बोला वरमां- ग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुलाहा स्त्री लंपट- था बोला मेरी उंरतसें पूछके वर मांगूगा खेर स्त्रीकूं जाके पूछा तव वो उंरत तुच्छ स्वभावकी- थी इसवास्ते उसके यादमें एसी बात आइ ॥

श्लोक ॥ प्रवर्द्धमानपुरुष स्त्रयाणामुपघातकृत् पूर्वोपार्जितमित्राणां दाराणामथवेस्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—जव पुरषकूं लक्ष्मी वहोत मिलजाती

हे तब पुरष पुराणे दोस्तकूं उंरतकूं उंर पुराणे घरकूं छोमदेताहे एसा विचार करके खाविंदसें कहा हे पति बमा डुखदाइ राज्य लेकर क्या करोगे एसा वर मांगों सो दो हाथोके च्यार तो हाथ हो जावे उंर दो सिर होजावे पेट एकही रहे अगर जब च्यार हाथ होयगा तब डुप्पट मजूरी कमाउंगें इतनेमेंही अपणा घर तो धनसें नरजायगा अहो २ स्त्रीकी स्वार्थता व्यर्थ सर्वस्व खोणेका उपाय बताया उसने वेसाही वर मांगा नूतने वेसाही बणादिया गांमके लोकोने उसका एसा विचित्र रूप देखकर राक्षस जांणके लठी उंर पच्छरोंसे मारमाला जिसमें अपणी अक्कल होय नहि स्याणे मित्रका कहा माने नहि उंर अक्कलहीन स्त्रीके वसमे रहे वो इस जुलाहेकी तरे नास होय इस मुजब दृष्टांत कोइयक ठिकाणेही वण आताहे बुद्धमांन स्त्री होय तो उसकी सल्ला जरूर लेणा फायदा होताहे इसपर अनुपम देवी उंर वस्तुपालका दृष्टांत जांणना अच्छे कुलकी पक्की ऊमरकी कपट करके रहित धर्म करणी करणेमें तत्पर अपणे साधर्मणी उंर अपणे स्वजनसंबंधीयोके घरकी बेटी बहू होय

एसी स्त्रीके संग अपणी स्त्रीके प्रीति करावणी
ऊरत बेमार पमे तो उसकी दवा दारु पथ्य
वगेरे करे लेकिन् उसकूं सूगाके वे वजे छोमणा
नही तपस्या ऊजमणा दांन देवपूजा तीर्थ
यात्रा वगेरे धर्मकृत्यमें उमंग वधाकर धनकी
मदत देकर सहाय करणा लेकिन् अंतराय
नहि करणा कारण स्त्रीके पुन्यमें पुरुषका हिस्सा
प्रतक्ष प्रमांणसेहे धर्मकृत्य कराणा यही परम
उपगारहे ऊर जव उपगारहे तव तो पुन्यमें
नाग निश्चेहे ४ अव पूत्रके संवंधमे पिता सं-
वंधी उचिताचरण कहतेहे पिताकूं चाहीये सो
पुष्टिकारक अन्नादिक ऋतुपथ्य मुजव खिलावे
वालकके मनमाफक फिरावे धिरावे तरे २ के
खिलोणे देकर कलाकुशल करे वालकपणेमें जो
शंका करके दूवला सरीर रहे तो योजवानीमें-
नी कमजोर होताहे चाणक्य कहताहे पुत्र
पांचवर्षका होय जहांतक लाम लमाणा तदपीछे
धमकीसें पढाणा खाणे पहरणेका लाम रखणा
एवं दसवर्ष वाद मारपीटके साथनी हितशिक्षा
ऊर विद्याभ्यास कुलाचार सिखाणा सोले वर्ष
वाद मित्रकी तरे पिताकूं वर्त्ताव पुत्रसें करणा
देव गुरु धर्म सुखी स्वजन इनोके संग हमेसां

परिचय कराणा कारण अच्छे मनुष्योंके संग दोस्ती कराणेसें वल्कलचीरीकीतरे हमेसां धर्मकी वासना बणी रहतीहे उत्तम जातिके कुलवंत सुशीलके संग दोस्ती करणेसें कदास धन नही मिले भाग्ययोगसें लेकिन् आवता हुवा अनर्थ तो जरूरही टलजाताहे क्योंके अनार्य देशमें पेदा हुये हुये आर्द्र कुमारके अभय कुमारकी मित्रता मुक्तीकेवास्ते हुई लडकेकूं अच्छी कुलकी ओर अच्छे रूपकी अठारे वर्षमें इग्यारे तथा बारे वर्षकी कन्यासें सादी कराणी लडकेकूं चाहीये सो वीस वर्ष उपरांत शंशारी उत्पत्तिके काममें जयणा करे अनुक्रमसें घरके कामकाजकी मुकत्यारी स्यानसबूरीमाफक सोंपे जो कदास योग्य कन्या परणावे नही तो उलटी विटंबना होजातीहे कारण दोनोंजणे अनुचित कृत्य करणे लगजावे तो फजीता होताहे आपसमे एक २ के परसन नही पडे तब स्त्री भर्तारके आपसमें विरोध पडजाताहे धारानगरीमें एक कुरूप निर्गुणीके तो बडी रूपवान ओर गुणवान स्त्री व्याहे गइ ओर एक रूपवान गुणवानकूं विदरूप ओर निर्गुणी स्त्री व्याहेगइ भवतव्यतासें दोनोंके घरमें चोरोने

खातमाली आगे दोनुं जोमोका संयोग दुरस्त नही एसा समझ उन चोरोने वो रूपवांन स्त्री रूपवान पास सुलायदी कुरूप कुरूपके पास धरदी रूपवंत दोनों दिलमें उदासथे उन दोनोंके तो मनकांमना पूरी नई लेकिन विदरूप वणिया प्रनातसमें एसा हाल देखकर राजा नोजसें फरियादकी तब राजा सहरमें ढंढोरा पिटवाया ये काम किसने कीया उर क्यों कीया करणेमें क्या फायदा देखा मेरे सांमने जाहर होवे तब चोरोने आकर कहा गरीब परवर काग हंशका जोमा जो विधाताने नूलके करदीयाथा सो नूल हम चोरलोकोने सुधारदी रत्नसें रत्न मिलादीया यह बात राजा सुणके हुकम दीया यह इनसाफ ठीकहे पुत्रकूं हमेसां पेदास खरच करणेका घरकांममें लगाणा जो लायक होय तो घरकी मुकत्यारी सोंप देणी क्योंके हमेसां घरके फिकरमें रहणेसें इच्छा चारी तथा मदोन्मत्त नही होताहे बमी तकलीफसें धन कमाणा पमताहे इस बातका जाणकार होजाय तब धन नही उमाताहे छोटी उमरमें इसमेही प्रतिष्ठित इज्जतदार कहलाताहे जेसें राजगृही नगरीका प्रशेनजित राजा अपणे

सो लड़कोंका इमतियान करता हुवा श्रेणिककूं योग्य जांण उसकोंही राज्य सोंपदीया तेसें लड़केके माफक लड़कीका भतीजेका बेटेकी बहूका उचिताचरण जांणना जेसें धन्नासेठ च्यारों बेटेकी बहूकी परिक्षा करणेकूं पहली उज्झिताकूं पांचशालि चावलोंके दाणे दिये उसने फेंकदिये दुसरेकी बहू भोगवती सो उस दाणोंकों खागइ तीसरी रक्षिता यतनसे रख छोड़ा चोथेकी बहू रोहणी उसने अपणे पीहरके कर्षोंकों देकर खेतमें वो वादीये उस्सें तीसरे वर्ष जाते एककोठार भरगया परीक्षा पूछी तब सुसरेकूं दिखलाये तब सेठ फेंकणेवालीकूं झाड़ू बुहारु करणेका काम सोंपा दुसरीकूं राधणेका काम सोंफा तीसरीकूं आटा सीधा वगेरे घर विखरीका काम सोंपा रोहणीकूं गहणा जवाहिर रुपीया मोंहरे वगेरे सोंपी इय च्यारोंहीमें जो जो गुणथा वेसाही उनोंनें ग्रहस्थाश्रममें उन्नतीकर दिखलाइ बापकूं चाहीये पुत्रकेरूबरू तारीफ नही करे कारण फेर उसकी लायकी उंर गुण बढते नही अभिमांनमें आजाताहे कदास लड़का जूआ या चोरी या रंडीबाजी नसाबाजी पेटीपणा वगेरे कुलक्षण

सीखजावे तो उस कामोसें धनका नास बेइ-
ज्जती राजदंड होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी
बातोंके दृष्टांत सुणावे जो लडका अक्कलवाला
ऊर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोंसें बच
जाताहे रोकडकी कूंची लडकेकूं सोंपे तो आवंद
खरच ऊर शिलक हमेसां संभाल लेवे उसकरके
मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें
करणी भाईकी ऊर दोस्तकी तारीफ पिछाडी
करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ
अच्छा कांम करचूके तब करणी स्त्रीकी तारीफ
मरे बाद करणी पुत्रकी तारीफ तो बिलकुल
करणीही नहीं जो करणी तो पीछाडी करणी
जबकी विना तारीफ कीये सरे नही तब लड-
केकूं राजसभा दिखलाणी क्योंके कोइ कर्म-
योगसें अणचिंता संकट आपडे तो कायर होके
घभराना नहीहे वडे २ राजमान्य पुरषोंके संग
मोहबत करणेसें बहोत फायदाहे जेसेंके धन-
वानके दुस्मन बहोत होतेहे हरतरेसें जालला
पटकतेहें इसवास्तें राजवर्गीयोसें धनका फाय-
दा नही होवे तो अनर्थ तो जरूरही मिटा
सक्तेहे परदेसकी रीतभांतसें लडकेकूं जरूर
वाकिफ करदेणा चाहीये क्योंके जब परदेशके

चाल चलणसें वाकवी नही होवे वखत पम्णे-
पर परदेश जाणा पमे तब गोनूजांणके परदे-
शके जालसाज अनेक तरेके फंदेसें धनका
लालच दिखाकर ठग लेतेहे तास गंजीफेके
खेलसें नोट बणाणेकी धोखाबाजीसें जमीनमें
गमाहुवा धन दिखाकर वेस्यायोंकों नाग्यवा-
नकी स्त्रियां बणाकर मम्मइ वगेरे मुल्कमें सो-
नाटोलीके लुच्चे विद्यमांनसमेंमें अनेकोंकों ठग-
तेहे मिरजापुर कासीमें गुंमेलोक कोइतो आ-
गूंकी वीतक बात वापदादोका नांम बताकर
पहचान निकालकर अपणें मकानमें लेजाकर
माल छीनलेतेहे कोइ निजूमी कोइ हकीम ब-
णाकर पसारीयोसें मिलकर माल उतारतेहे जे-
पुर आगरे वगेरोमें दलालोका फंदा लुच्चाइकाहे
इत्यादिक देसावरी हालतोसें वाकबकर देणा
चाहीये इसबजे माताजी पुत्रकेवास्ते पूत्रकी
बहूकेवास्ते उचिताचरण करणा अपणी सोकके
बेटेका लाम अपणे पूत्रसें ज्यादे रखणा इस
वात्तोंसें दुनियामें तारीफ होतीहे पराये जाये-
को अपणा करके केवटणा यह बात बमी लाय-
क वंदीकीहे पिताके कुलके माताके कुलके तथा
स्त्रीके कुलके जो लोक होतेहें वो स्वजन कह-

जातेहे उनोके संगभी उचिताचरण रखणा अ-
थवा घरमें पुत्रजन्म तेसें विवाह सगाइ वगेरे
मंगलीक कामोंमें उनोका हमेसां सत्कार करणा
तेसेंही उनोंके नुकशांन वगेरे पमजावे तो उ-
नोंकों अपणेपास रखणा स्वजनोंमे संकट आ-
पमे तव अथवा उनोंके घर उच्छव होवे तब
उनोके इहां आप जाणा रोगाग्रस्त अथवा ध-
नहीन होजाय तो उनोका उद्धार करणा मित्र
ओर स्वजन वोही कहलाताहे जो रोगमें आ-
पदामें दुकालमें संकट आपमे तव राजद्वारमें ओर
स्मशानमें जो संग रहे ओर छेहनही दिखावे
सो वंधव कहताहे स्वजनोका उद्धार करणा
वो अपणाही उद्धार समजणा कारण लक्ष्मी
चंचलहे अरटकी घमनालकी तरे भरी ओर खा-
ली होजातीहे तेसेंही पैसेवाला दलद्री ओर दल-
द्री तालेवर होजाताहे इसवास्ते जिसकूं सहाय
आपने कीया होय वखत पमणेपर जरूर वो
अपणी सहाय करताहे स्वजनोकी परपूठ निंदा
नही करणी उनोके संग मस्करी वगेरेमेंभी विगर
कारण सूका वाद नही करणा कारणके वाद-
विवादमें वहोत दिनोंकी प्रीती तूटजातीहे स्व-
जनोके शत्रुके साथ दोस्ती नही करणी स्वज-

नके मित्रोके साथ मित्राइ करणी स्वजन घरमें नही होय उंर उनकी इकेली स्त्री घरमे होय तो एकेला नहि जाणा स्वजनोके संग उधार-का धंदा देस काल भाव सोचके करणा देवका या गुरुकाया धर्मका काम होय तो उनोमें सजनोके संग एक दिल होणा दोस्तीकी जगे तीनकाम नहि करणा वादविवाद उधारपार उनके नही रहणेसें उनकी स्त्रीके संग बात ये तीन बात नही करणी शंशारके काममेंभी जब च्यार आदम्योंका एक दिल होताहे तब अच्छी तरेसें काम सुधरताहे तेसेंही जिन मं-दिर वगेरे धर्मकांममें तो निश्चेही एक दिल करणेसें हीकाम निर्वाण चढताहे क्योंके धर्म-काम तो सर्व श्री संघके आधारपरहे स्वज-नोके संग एकदिल होणेपर पंच अंगुलीयोका द्दष्टांतहे पहली अंगूठेकी पासकी अंगली तर्जनी सो लिखणेमें चित्राम करणेमें कोइ चीजकूं दिखाणेमें चीजोकी तारीफ करणेमें चिमटी ब-जाणेमें अगवाणीहे इसवास्ते अहंकारमें आकर मध्यमा जो बिचली अंगलीहे उसकूं पूछणे लगी तेरेमें क्या गुणहे तब मध्यमा बोली मे सब अं-गुली- योमें मुख्यहूं बमीहूं बीचमें रहतीहूं तंत्री

गीत ताल वगेरे कलामें कुशलहूं कामकी जल
दीपणा बताणेकूं अथवा दोष छल वगेरोका नास
करणेकूं चिमठी बजातीहूं टचकारासें शिक्षा
करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिकाकूं
पूछा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य सा-
धर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नं-
द्यावर्त्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चूर्ण
वगेरोका मंत्रणा ये कांममे करसकतीहूं तब
तर्जनी चोथी अंगुलीसें पूछा तब वो बोली में
पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी
शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं भूत
शाकनीके उपद्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं
जापकी गिणती करणेमें अगवाणीहूं एसा सुण-
के च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी
उर अंगूठेकूं पूछा तुमारेमें क्या गुणहे तब अं-
गूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो लिखणा
चित्रांम करना ग्रास लेणा चिमठी भरणी चिमठी
बजाणी टचकारा करणा मूठी भरणी गांठ देणी
हथियार वापरणा दाढी मूंछ समारणा कतरणा
कातणा उखेरणा लोच करणा पीजणा वूणना
धोणा कूटणा दलणा पुरसणा कांटा निकालणा
गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ-

थवा फूल गूंथणा फूल पूजा करणी वेरीका गला पकमणा तिलक करणा श्रीजिनामृतकों पीतेहे अंगुष्ट प्रषण करणा इत्यादिक अनेक शंशारके काम में करसकताहूं तब च्यारुं अंगुलीयां अंगूठेके आश्रय करके कांम करणेलगी अब धर्माचार्यके संबंधमे उचिताचरण लिखतेहे तीनोटंक नक्तिसें बहुमांनसें धर्माचार्यकूं मनवचन कायासें वंदना करणी धर्माचार्यके कहे मुजब षमावस्यक पोषधादि कृत्य करणा तथा उनोकेपास शुद्ध श्रद्धानसे धर्मशास्त्रादि ग्रंथ सुणना धर्माचार्य जो हुकम देवे उसका बहुमांन करणा मनसेंजी उसकी अवज्ञा नहि करणी अन्यधर्मी लोकोंकी करी हुई धर्माचार्यकी निंदाकूं मिटाणेका यत्न करे लेकिन् आप उस निंदाके सांमल न होवे शास्त्रोंमें लिखाहे निंदा करणेवाला तो पापीहेही लेकिन् सुणनेवालेजी पापीहे धर्माचार्यकी तारीफ गुणानुवाद हमेसां करे कारणके धर्माचार्यके सामने अथवा परपूठ स्तुति करणेसें पुण्यानुबंधि पुण्य बंधताहे धर्माचार्यका छिद्र नही देखणा सुखमें या दुखमें मित्रकी तरे उनके अनुयायी चलणा उनका निंदक जो उनोंकों उपद्रव करे तो जहांतक

अपणी शक्ति होय जहांतक दूर करणा इस बातपर कोइ संका करताहे के प्रमादसें रहित एसें गुरुउंके बल छिद्र होताही नही तो फेर देखेही क्या उंर मित्रकी तरे उनोसें केसें वर्त्तावा रखणा इस बातका एसा उत्तरहे तुमारा कहणा सच्चहे धर्माचार्यतो निश्चे अप्रमादी होतेहें लेकिन् पंचम कालमे शरीरके संघयणभी वेसा नही न एसा मनोबलहे इस कारणोसें अपवादके रस्तेकी आचरणा देशक्षेत्रादि कारणो करके करते होय तब श्रावक जो तुच्छ बुद्धीहे उनोंकी न्यारी २ प्रकृतीके अनुसार भाव प्रगट होताहे ठाणांग सूत्रमें लिखाहे हे गोतम च्यार प्रकारका श्रावक होताहे एक मातापितासमान दूसरा भाइ समान तीसरा मित्रसमान चोथा शोकसमान साधूउंका जो कुछ कांम होय सो मनमे विचारे किसीवखत साधुउंका प्रमाद देखणेमे आवे तोभी साधुउंके ऊपरसें प्रेमभाव कम नही करे जेसें मातापिता अपणे बालकपर अंतरंगसे हेत स्नेह रखताहे तेसें साधूपर दयाका परिणाम रक्खे वो श्रावक मातापिता जेसा समझणा १ जो श्रावक साधूउंपर मनमें तो बहोत भाव रक्खे लेकिन् बहारसें विनय

साचवणेमें मंद आदर दिखावे लेकिन् साधूका कोइ दुसरा अनादर करे तो तुरत वहां जाय करके सहाय करे वो श्रावक भाइ जेसा जांणना २ जो श्रावक साधूउंकों स्वजनसेभी ज्यादे गिणे उर कोइ कामकाजमें साधू सला नही पूछे तो अहंकारसें क्रोध करे वह श्रावक मित्र जेसा जांणना ३ जो गृहस्थ अहंकारी साधूउंका छल छिद्र हमेसां देखा करे उर उनोका जो कसूर प्रमादसें होजावे वो हमेसां जाहिर कीया करे उर उन जती साधूउंको तिणखे जेसा गिणा करे वो श्रावक शोक जेसा जांणना निंदक लोकोंहे सो जो कुछ जिन मंदिर जैन शाशनकी हीलना निंदा करते होय तो यथा शक्ति मिटाणा चाहीये जेसें कुंभारके भवमें साठ हजार आदमीका कीया हुवा उपद्रव दूर कीया यात्रा जाते हुये संघकी रक्षा करी वो मरके सगर चक्रवर्त्तिका पोता जन्हुकुमार हुवा वह दृष्टांत जाणना धर्माचार्य शिक्षा दे तो तहत्त कहणा धर्माचार्य कोइ तरेका प्रमाद सेवते होय तो एकांतमें समझाणा माहाराज आप जेसें चारित्रवंतोंकों यह बात योग्य नही इत्यादिक हित शिक्षा देणी शिष्योकों चाहीये साम-

ने आणा ऊठणा आसण देणा पग चंपी करणी शूश्रु वस्त्र पात्र अन्न उंषधी ज्ञानके उपगरण वगेरे समयके उचितविनय उपचारभक्तिसे करणा हृदयमें प्रीति रखणी आप परदेशमें होय तो गुरुका सम्यक्त दांनके उपगारकूं हमेसां याद करे अब सहर वस्तीके लोकोंसें उचिताचरण लिखतेहें सहरके लोकोंमें कोइ संकट आय पडे तो मनमें समजणा की मेंभी संकटमें पडाहुं एसा विचारणा उच्छवमें होय तो आपभी उच्छव मांणना क्योंके एक वस्तीमें रहके द्विधा भाव नही रखणा एक धंदेके रुजगार करणेवालो आपसमें कुसंप होय तो निश्चे वो लोक संकटमें जा गिरतेहे बडा कोइ काम करणा होय तो बडाइ वधाणेकेवास्ते सब नागरिक लोकोंके संग जाणा जिस्सें किसीका दिल नही दुखे इकेले नही जाणा कोइ कांमकी गुप्त मसलत करी होय तो बाहिर प्रकाश नही करणी किसीकी चुगली नहि करणी सब बराबरीके होय तोभी मुसलमीनोकी तरे एककूं अगवाणी करके आप उनोके पिछाडी रहणा लेकिन् राजाके हुकम मुजब मंत्रवी परीक्षा करणेकूं एकसेज सबोकों सोनेकूं दी तब पांचसे

मूर्ख कुसंपसें आपसमे ज्ञगमणे लगे एसें कुसंप-
वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात कर-
णेकूं नही जाणा उंर एसोंकी अरजन्नी नहि
करणी प्रतक्ष प्रमांणहे कितनीही नाकात तुच्छ
चीज होय लेकिन् जब वोही चीज बहोत
एकठी होजाय तब बमी ताकतपर होजातीहे
देखीये कच्चे घास या सूतके तागे जब सांमल
होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जेसें
ताकतवरकूं बांध लेताहे जो अदमी आपसमें
एक २ का मर्म उघामे वो वंवीमे रहे उंर पेटमे
रहे सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ॥
परस्पराणिमर्माणि न्नाषंतेअधमानराः ते नरावि-
लयंयाति वल्मीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो
अदम्योके आपसमें जागमा होय तो तराजूके
पालणे मुजब बराबर रहणा लेकिन् अपणे
स्वजन संबंधीयोकी खेंच अथवा किसीसें रूस-
पतखाके न्यायसें वेमुख कन्नि नही होणा उप-
गारन्नी सच्चे इनसाफसें करणा आप समर्थ
होकर गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-
दंमसें सताणा नही तथा थोमा कसूर किसीने
कर लीया होय तो एकदम दंम नहि करणा
मासूल तथा राजदंमसें तकलीप जब लोक

पातेहे तव आपसमें संप ओर प्रीति ओर देतेहे जब वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही ताकतवर क्यों न होय वगममेंसे निकले हुये सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-वास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-समेंभी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो ज-रूरही चाहिये क्योंके छिलके दूर करदीये जाय तो चावल ऊगते नहीहे इत्यादिक जांणना अपणा भला चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-थवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-नोके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी बात बणाकर आसन ओर पान बीमी देकर भ-लाइ दिखातेहे लेकिन् वखत पमणेपर रुपे मां-गणेसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उ-पकारकूं उस वखत पहाम जितना गिणातेहे पहली बातकूं भूलजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १ मातामें द्वेष २ कसवणमे प्रेम ३ ओर सरकारीय हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये वातें प्रायें होणी मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन् ज्यादा मांगणेसें कोइ ज्यादे तूमत लापटकतेहे क्योंके

धनवानके लागूहे दलड़ीपर कोण तूमत लाताहे इसबजे नागरिक लोकोका उचिताचरण जांणना अब अन्यदर्शनी भेषधारीका उचिताचरण लिखतेहे अन्यदर्शनी भेषधारी अपणे घर भीखकूं आवे तो उनोंकों यथायोग्य दांन देणा और राजमान्य एसा जो अन्यदर्शनी मकानपर आवे तो विशेष भक्तीकरके दांन देणा श्रावकके दिलमें अन्य दर्शनीके भेषकी भक्ती तो नही और नही उनके गुणोका पक्षपातहे तोभी मकानपर आये हुयेका आदरमांन करणा गृहस्थका धर्महे मीठा वचन बोलणा आसण देणा भीमणेकूं निमंत्रणा करणी किसकारणसें आणा हुवा सो पूछणा उनोका काम करणा संकटमे पड़े हुये लोकोकूं बाहिर निकालणा यह बात सर्व धर्मीयोकूं सम्मतहे श्रावककूं जो उचिताचरण करणा लिखा उसका मतलब एसाहे जो की उचिताचरण करणेमें कुशल नहीहे वो पुरष लोकोत्तर पुरष जो सर्वज्ञ उनकी वाणीका सुक्ष्म बुद्धिसें गृहण करणा एसा जो जैनधर्म उसमें केसें कुशल होसके इसवास्ते धर्मार्थी लोकोकूं अवस्य उचिताचरण ध्यांनमें लेणा गुणपर प्रीति रखणा दोषोंपर मध्यस्थ भाव रखणा जिन

वचनपर रुचि राखणी यह सम्यग् दृष्टिका ल-
क्षणहें समुद्र मर्यादा छोमता नही पर्वत चलाय
मांन होता नही तेसेंइ उत्तम पुरष उचिताचरण
छोमते नही इसवास्ते जगद्गुरु तीर्थंकरजी गृ-
हस्थपणेमें मातापिताके संबंधमें उठणा प्रमुख
आदरसत्कार करतेहे बमे पुरष आपणेसें आदरसें
उठणा प्रमुख आचरणा करतेहे तो फिर उनोसें
ज्यादा कोणहे सो उचिताचरण नही करे ऊपर
लिखे उचित वचनोंसें बहोत गुण पैदा होतेहे जेसें
आंबम जिसकी उदादवाले नणशाली उसवाल
बजतेहे शोलंकी राजपूत वो आंबम मल्लिकार्जु
नकूं जीतकर चवदे क्रोम मोलका नरे हुये छवटो
करी चोदे २ नार तोलके एसे सोनेसें नरे हुये
बत्तीस घमे सिणगार उंरत मर्दोंके सजणेके
रत्नजमित एक क्रोम जहरकूं मिटाणेवाली सीप
वगेरे धनमाल चहुआण महाराज कुमारपालके
खजानेमें माली तब राजा प्रसन्न होकर राज-
पितामह एसा विरुद उंर क्रोम द्रव्य उंर
चोवीस जातिवंत घोमे एसा इनाम दीया ये
सब धन आंबट घर पोहचते २ रस्तेमेंही या-
चकोकों देदीया इसबातकी चुगली किसीने
राजासें खाई तब राजा गुस्सेमें आकर आंबम

मंत्रीकूं बोला क्यों तें मेरेसेंभी ज्यादे दांन देणे लगा तब आंबड मंत्री बोला हे राजन् आपके पिताजी दस गामडोके मालकथे ओर आजदिन आपके ताबेमें अठारे देस होगयेहे ओर आप अहमिंद्र बणरहेहो तो क्या इस बातसें आपकी तरफसें आपके पिताकी बेअदबी मानी जावे एसा उचित वचन सुणके राजा प्रसन्न होकर दुसरी किताब राजपूत्रकी वगसी ओर आगे जो दीयीथी उससें दूणी ऋद्धी इनायतकी इसवास्ते शास्त्रोंमे लिखाहे के दांन देतें रस्ते चलते सूते बेठते खाते पीते बोलते सब जगे योग्यही बोलणा वखतपर बडाई मिलतीहे समयकूं जाणा उसने सब कुछ जाणा वोही उचिताचरण जाणताहे कहाहे एकतरफ क्रोड गुण ओर एकतरफ उचिताचरणहे अगर उचिताचरण नही जाणताहे तो सब गुण जहर बराबरहे इसवास्ते अनुचित कांम छोड देणा जिसकरके अदमी मूर्खोंमें गिणे जाताहे वो सब काम अनुचित अयोग्य नही करणे चाहीये वो सब लोकीकशास्त्रों मुजब उपगारका कारण समझके इहां लिखताहूं हे राजेंद्र सो मूर्ख होतेतेहें तें इन बातोंको छोड जिसकरके तूं जगतमें

रत्नकी तरे निर्दोष होकर शोभा पावेगा ओर अखंम शासन जयवंत रहेगा छती शक्ति उद्यम नही करे १ पंमितोकी सभामें अपणा वखाण करे २ वेस्याके वचनपर विश्वास राखे ३ दंभ-याने कपटी लोकोके आमंबरपर भरोसा रख्खे ४ जुअेसें किमीयागिरीसें धन कमाणेकी इच्छा करे सो ५ खेती व्यापार नोकरी वगेरे लाभके रुजगारोमें संका रख्खे फायदा होगा या नही ६ अक्कलही न होकर बमा कांम करणाधारेसो ७ वणिया होकर एकांत वास करणेकी इच्छा रख्खे ८ सिरपर उधारा कढाके घरबार वगेरे खरीदे ए बुढ्ढा होकर कन्या परणे १० गुरु गमसें विगर सीखे ग्रंथकी व्याख्या करे ११ जो बात जाहिर हो चूकी उसकूं छिपाणेका यत्न करे १२ चंचल स्त्रीका भर्त्तार होकर मनमें इर्ष्या रख्खे १३ डुस्मन समर्थ होय फेर उ-सकी शंका नही रख्के १४ पहली धन देकर पीछेसे पछतावा करे १५ विगर पढा हुवा बमे स्वरसे कवित्तया काव्य बोले १६ मोंके विगर बोलणेकी चतुराई दिखलावे १७ ओर जहां बोलणेका मोका होय वहां परचुप रहे १८ फायदा लाभ आवंदकी वखत लमाइ करे १ए

जीमणेके वखत क्रोध करे २० बडे कायदेकी आसासें धन विखेरे २१ साधारण बोलणेमें कठन संस्कृत वगेरेके शब्द बोले २२ बेटेके हाथमें सब धन सोंपके आप दीन दुखी होवे २३ वेरतके पक्षके लोकोसें उधार वगेरे मांगणी करे २४ वेरतके संग लडाइ होणेसें दूसरी सादी करे २५ कामी पुरषोके संग हरीफाइसें धन उडावे २६ लडकेपर गुस्सा करके उसका नुकसांन करे २७ मंगत लोकोंकी करी हुई स्तुति सुणके मनमे अहंकार लावे २८ अपणी अहंकार बुद्धिसें दुसरेका हितकारी वचन नही सुणे २९ हमारी बडी जातिहे एसे अहंकारसें किसीकी नोकरी नहि करे ३० दुखसें कमाया जावे एसा जो धन सो देकरके कांम जोग सेवे ३१ मोल किराया देकर खराब रस्ते जावे ३२ जो राजा लोभी होय वर उसके पाससें धन लेणेकी आसा रखके ३३ हाकम दुष्ट अन्याइ होय उसके पाससें धनकी आसा रखे ३४ कायस्थ लोकोसें दोस्ती मोहबतकी आसा रखके ३५ मंत्रबीजादिक क्रूर कठोर होय उसका डर नही रखके ३६ कृतघ्नीसें उपगारके बदलेकी आसा रखके ३७ जो मूर्ख रसकूं नहि

समजे उसके आगें अपणा गुण प्रगट करे ३८ शरीर निरोगी रहते हुये वे हमसें दवा खावे ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लोनके वस स्वजनोकूं छोमदे ४१ जिस वातोसें दोस्तका दिल खट्टा होजाय एसी बात कहे ४२ फायदेका वखत आवे उस वखत आलस करे ४३ बमा धनवान होकर लमाइ दंगा करे ४४ जोतषीकी जुवानपर नरोसा रखके राज्य मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्वाह करणेका आदर रख्के ४६ गरीब अनाथ लोकोकूं तक्लीप देणेमें सूरवीरता जाहिर करे ४७ जिसकी एबजा हिरा देखणेमे आवे एसी ओरत परप्रीति राखे ४८ गुणके सीखणेमें क्षणमात्र प्रीति राखे ४९ दुसरोंका जमा कीया हुवा धन उमावे ५० अहंकार रखकर राजा जेसा बणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा वगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ दुख आणेसें दीनपणा प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे होणेवाली खोटी गतिकूं नूल जावे ५४ थोमे बचावकेवास्ते ज्यादे खर्च करे ५५ परिक्षा करणेकूं जहर खावे ५६ किमियागरीमें धन होमे ५७ खयरोग होगयेवाद फेर रसायण खावे ५८

आप अपणे बडाईका अभिमांन रक्खे ५९ गुस्सेमें आकर आत्मघात करणेकूं तयार होय ६० नित्त विगरकारण इधर उधर भटकता रहे ६१ शस्त्रोंके प्रहार लगेबाद फेरभी युद्ध देखे ६२ बडोंके साथ विरोध करके नुकशानीमें जा पडे ६३ थोडा तो धन होय ओर आडंबर बडा रक्खे ६४ में पंडित हूं एसा समजके बहोत बकवाद करे ६५ अपणी सूरवीरता समज किसीका डर नही रक्खे ६६ बहोत व्याख्यान करके अगले अदमीकूं त्रास उपजावे ६७ हासी करता हुवा मर्मकी जुवान कहे ६८ दलद्रीके हाथमें अपणा घर सोंपे ६९ पैदास तो होय नहि ओर धन खर्च करे ७० अपणे हक्कमे खरच करणेकूं कंजूसपणा करे ७१ तकदीरके भरोसे रहकर उद्यम नहि करे ७२ आप दलद्री होकर बात बणाणेमें वखत गमावे ७३ व्यसनकी उलफतमें गिरके जीमणाभी भूलजाय ७४ आप निर्गुणी होकर अपणे कुलकी बहोत तारीफ कीया करे ७५ वरना ओर कडा स्वर होय ओर गाणा गावे ७६ ओरतसें डर कर याचककूं दांन नही देवे ७७ कृपणपणा करके दुर्दशा भोगे ७८ जिस अदमीके प्रगट अवगुण दिखते

होय एसे अदमीकी तारीफ करे ७९ सभाका कांम पूरा हुवे नही उर पहली ऊठजावे सो ८० दूतयाने हलकारेका काम करे उर संदेसा भूल जावे ८१ खासीका रोग होय उर चोरी करणेकूं जावे ८२ दुनियामें नामंबरी उर यशकी इच्छाके चाहसे भोजनका खरच बहोत रख्के ८३ लोक मेरी तारीफ करेगा इस भरोसे आहार थोमा करे ८४ जो चीज थोमी होय वो चीज बहोत खाणेकी इच्छा करे ९५ कपटी उर मीठे वचनोके बोलणेवालेके जालमें जाफसे ८६ कसवणके जारके संग लमाइ करे ८७ दोजणे कोइ गुप्त सल्ला करते होय उसके बीचमें तीसरा आप जावे ८८ राजाकी महरबानी हमेसां बणी रहेगी एसा दिलमें भरोसा रख्के ८९ अन्यायके रस्ते चले उर आपणी बढोतरीकी आसा रख्के ९० धन तो पासमे होय नही उर धनसें होणेवाले कांम करे ९१ छानेकी बात लोकोमें जाहिर करे ९२ यशकेवास्ते अजाण अदमीका जाम न होय ९३ हितवचन कहणेवालेके संग वैर करे ९४ सब जगे भरोसा रख्के ९५ लोक व्यवहार नही जाणे ९६ याचक भीख मंगा होकर गरम भोजन करणे-

की टेंम रक्खे ९७ मुनिराज होकर क्रिया पा-
लणेमें शिथलतता रक्खे ९८ कुकर्म करता हुवा
सरमावे नही ९९ ओर बोलता हुवा बहोत हसे
१०० इसतरेसें सो मूर्ख जांणना जिस वा-
तोसें अपयश होय एसे सब काम छोडणा इस
तरेसें विवेक विलासमें जिन दत्त सूरजीने
लिखाहे सभामें वगासी हिचकी डकार हांसी
वगेरे करणा पडे तो मुख ढांककर करणा सभा-
में नाक कुचरणा नही ओर हाथ मरोडणा नही
पालखथी मारणी नही पगलंवा नही करणा
निद्रा विकथा वगेरे खराब चेष्टा नही करणी
उत्तम पुरषोका हसणा होठ फुरकाणे मात्र
होताहे ज्यादे हसणा अनुचितहे बगल नहि
बजाणी अंग बजाणा तिणखा तोडणा हाथसें
जमीन खोतरणा नखसें नख अथवा दांतोका
घसणा ये वातों नही करणी चारण भाट ब्रा-
ह्मण वगेरोके मुखसें अपणी तारीफ सुणके
मनमे अहंकार नही लाणा ओर समझवार अ-
दमी अपणी तारीफ करे तो मनमें समझणाकी
इतना गुण तो मेरेमेहे लेकिन् अभिमांन नही
करणा दुसरे अदमीके कहे मुजब वचनके अ-
भिप्राय दिलमें धरणा नीच अदमी अपणेकुं

हलकी जुवान कहे तो पीछा उत्तर हलकी जुबानसें नहि देणा जो बात वीतगइ या आगे होणेवाली या वर्त्तमानकालमें भरोसा रखणे योग्य नही होय एसी बातमें एसा नही कहणा की ये तो सच्च हे उर एसेंहीहें एसा प्रगट अपणा अभिप्राय नही जाहिर करणा कोइ काम किसीके पाससें कराणा विचारया होय तो उसके सांमने किसी दृष्टांतसें अथवा विशेष वचनोसें पहली जताणा चाहीये अपणा विचारया हुवा कामके अनुकूल कोइ वचन कहे तो जरूर मांन लेणा चाहीये जिसका कांम अपणेसें नही बणसके उसकूं पहलेहीसे नहिं कहदेणा जूठी दिलासा देकर धक्का नही खिलाणा चतुर पुरषोकूं चाहीये सो अपने दुस्मनकोंभी कमवी जुवान नही कहे अगर किसी मोंकेपर सुणाणा पडे तो मिसालकरके दुसरेके वहानेसें सुणाणा जो अदमी माता पिता रोगी आचार्य प्राहुणा भाइ तपस्वी बुढ्ढा बालक दुर्बल गरीब आदमी वैद्य अपणी उलाद भायोके कुटंब चाकर बहेन इणोके संग लडाइ नही करें वो अदमी तीन जगतकूं वस करे एक टकी लगाकर सूर्यके सा-

मने नही देखणा तेसें चंद्र सूर्यका ग्रहण लगे तब कूवेका पाणी ज्ञर संझा कीसमें आकास ये नही देखणा स्त्रीपुरषका संजोग सिकार जवानीमे ज्ञरपूर नंगी स्त्री जानवरोका मेथुन क्रीमा ज्ञर कंन्याकी योनि तेलमें जलमें हथियारमें मूतमें तेसें खूनमें अपणी पम्छिांई नहि देखणी एसें करणेसें आयु घटतीहे अच्छे बमे ज्ञर सुसील आदमीयोकी बातकूं काटणा गइ चीजका फिकर करणा किसीकी निद्रा ज्ञंग करणा इत्यादिक बातें कज्ञी नहि करणा बहुतोंके साथ वैर विरोध नहि करणा बहुतोकी मत जिधर होय उधरही मति देणी जिस कांममें स्वाद नहि एसाज्ञी कांम समुदायके संग करणा समजवारोकों चाहीये सब शुज्ञ क्रियामें आगेवांन होणा जो अदमी कपटसेंज्ञी निर्लोज्ञीपणा दिखलावे तो उसमेंज्ञी गुण हासिल होताहे किसी अदमीका नुकसांन करणेसें कोइ कांम सिद्ध होता होय तो एसा कांम बणे जहांतक नही करणा सुपात्र अदमीकी इर्ष्या नहि करणी अपणी जातिपर संकट आपमे तो जाति नही ठोमणी बहोत आदरसें जातिमें संप होय एसा काम करणा एसा नही करे तो

मान्य पुरषोका मांनखंडन उर अपयश होताहे अपणी जातिकों छोड पराइ जातिमें जो आसक्त होताहे उसकी कुकर्दम राजाकी तरे दुर्दसा होतीहे जातिमें कलह करणेसें अदमी भ्रष्ट मिलजाताहे उर संपमे रहे तो कमलमें कमलणीकी तरे बढताहे अपणा दोस्त साधर्मी उर जातिमें आगेवान बडा पुत्र जिसके नही होय एसी बहिन इतनोका जरूर पोषण करणा जो पुरष मनमें वडपन रखवा चाहे वो सारथीका कांम पराइ चीज खरीदणी उर वेचणी अपने कुलके अनुचित कांम नही करणा महाभारत ग्रंथमे लिखाहे मनुष्यकूं ब्रह्म मुहुर्त्तमें उठणा धर्म अर्थका विचार करणा सूर्यकूं उदय होते अस्त होते उर किसी वखतभी देखणा नही दिनकूं उत्तरकी तरफ रातकूं दक्षिणकी तरफ मूं करके दिसा जंगल जाणा अगर कुछ हरकत होय तो चाहे जिधर मुखकरके जंगल जाणा आचमनादि करके देवपूजा कर गुरुकूं वंदना करके साधू सुपात्रोकों दान देकर भोजन करणा जो भोजन घरमें होय वो पहली देव जिनराजके सांमने धरणा फेर भूख लगणेसें भोजन करणा कारण भोजनका कोइ वखत शास्त्रकारोनें

नहि लिखाहे इतना तो जरूरहे एकवार जी-
मकर पहरभरमें दुसरा खाणा नही और दोपहर
लांघणा नही अर्थात् पांच घंटा आगले भोज-
नकूं हो चुके तब दुसरा खाणा ये मर्यादा दि-
नकीहे रातकूं भोजन सर्वथा मनाहे इसवास्ते
दिनके पहले पहरमें भोजन करणा नहीं दोपहर
वीताणा नही सुपात्रोकों दान देणेकी विधि
इस मुजबहे सुपात्रकूं निमंत्रकर भोजनकी व-
खत घरपर लाणा अथवा आते मुनिराजकूं देख
उनोके सांमने जाणा वंदना करणा फेर क्षेत्र
संवेगका भावितहे या अभावितहे काल सुभिक्ष
हे या दुर्भिक्षहे दांन देणेकी वस्तु सुलभहे या
दुर्लभहे तेसेंइ पात्र आचार्यहे या उपाध्याय
गीतार्थ तपस्वी बाल वृद्ध रोगी समर्थहे या
असमर्थहे एसा दिलमें विचार करणा और ह-
रीफाइ बमाइ इर्ष्या प्रीति लज्जा और चतुराइ
दुसरे लोक दांन देतेहे इसवास्तें मुजेभी वे-
साही करणा एसी इच्छा उपगारका बदला उ-
तारणेकी इच्छा कपट विलंब अनादर कडुवा बो-
लणा देकर पिछताणा इत्यादिक दांनके दोषणहे
फकत अपणा जीवका भला चाहता हुवा दोष-
रहित अन्नपान वस्त्र वगेरे वस्तु अपणी अपणे

हाथसें अथवा आप खमा रहके स्त्री वगेरोके पाससें दिलावे जैनमुनिके आहार संबंधी बयालीस दोषण टालणेके पिंम विशुद्धि वगेरे ग्रंथोसें जांणना दांन दीयां पीछे मुनिराजकूं वंदन करके उनोंकों दरवाजेतक पोहचाणे जाणा मुनिराजका योग नहि होय तो बद्दल विगर वृष्टिमाफक साधूउंके आणेकी राह देखणी शुद्ध श्रावक साधूकुं दांन दिये विगर कोइजी चीज नहि खातेहे मुनिराजका निर्वाह दुसरी रीतसें होता होय तो अशुद्ध आहार लेणे उर देणेवालेकूं हितकारी नही उर कुसमयमें जो निर्वाह नही होवे तो आतुरके दृष्टांतसें अशुद्ध आहार दोनोंकों हितकारीहे जगवती सूत्रके लिखे मुजब रस्ते चलणेसें थके हुये रोगी लोच करे हुये एसे आगम शूद्ध वस्तुका लेणेवाला साधूकूं उत्तर पारणेके विषे दांन दीया होय तो उस दांनसें बहोत फल मिलताहे सुपात्र दांनसें देवके तथा मनुष्यादिकोका सुख तथा समृद्धि होतीहे चक्रवर्त्ति आदि पद मिलताहे अंतमें थोमे समयमें निर्वाण सुख मिलताहे अजय दांन १ उर सुपात्र दांन २ अनुकंपादान ३ उचितदांन ४ कीर्त्तिदांन ५ पह-

लीके दो दानोसें मुक्ति उंर सुखसंपदा मिल-
तीहे उंर तीन दानोसें फकत सुखसंपदा मि-
लतीहे सुपात्रका लक्षण इस तरेसेहें उत्तम
पात्र साधू जोकी सर्व संगका त्यागी शुद्ध उप-
देशक मध्यम पात्र श्रावक साधर्मी उंर जघ-
न्यपात्र अविरति सम्यक्दृष्टी सास्त्रांतरोमें लि-
खाहे हजारो मिथ्या दृष्टीसें एक थोमी श्रद्धा-
वाला सम्यक् दृष्टी अच्छाहे उंर हजारो संक्षे-
प श्रद्धावंतसें एकवारे व्रतधारी श्रावक श्रेष्ठहे
हजारवारे व्रतधारीसें एक मुनिराज श्रेष्ठहे उंर
हजार मुनिराजोसें एक तत्वज्ञानी श्रेष्ठहे त-
त्वज्ञानी जेसा पात्र हुया न होगा सतपात्र बमी
श्रद्धा योग्य काल उचित एसी देणेकी वस्तु
एसें धर्म साधनकी सामग्री बमे पुन्यसें प्राप्ति
होतीहे भोंचढाणी १ नजर करमी करणी २
अंतर्वृत्ति रखणी ३ मूं फेर लेणा ४ मोन क-
रणा ५ देणेमें देरी करणी ६ ये बाते नाकारा
करणेका चिन्हहे आंखमें आनंदके आंसू १ रूं
खमे होणा २ बहुमांन ३ प्रियवचन ४ अनुमो-
दन ५ ए पांच दानका भूषण कहलाताहे इत्या-
दिक संक्षेपसें दानविधी कही तेसेंइ भोजनकी
वखत साधर्मी आवे तो उसकूंभी यथाशक्ति

जीमाणा साधर्मीजी पात्र कहलाताहे साधर्मी वात्सल्यका बमा लाभ शास्त्रोमें तीर्थंकर महाराजने बयान कीयाहे तेसें डुसरे भिक्षारी लोकोंकूं दांन देणा निरासकर पीबा निकालणा नही कर्मबंध तेसें धर्मकी हीलणा नहि कराणी अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणके वखत दरवाजा बंध करणा ये गृहस्थ सत्पुरषोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अन्नगद्वार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही भरताहे लेकिन् बहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे पुरष वोही गिणे जाताहे इसतरे दीन डुखियोंकों अनुकंपा दांन देकर पीबे जीमणा जिनेश्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नहीं भगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अडुवारा लिखाहे भवसमुद्रमे मूबते हुये जीवोके समुदायकूं डुखसें हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर द्रव्यसें तो अन्नादिक भावसें सद्धर्म्मके रस्ते लगाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थंकर महाराज संशारसे विरक्त भावना लाये बाद दीन डुखीयोके उद्धार करणेकूं संवत्सरी दांन देतेहें एक वर्षतक फेर संजम लेतेहे प्रदेसी

राजा केसी कुमारके उपदेससे नास्तिक मत त्याग जैनधर्मका उत्कृष्ट श्रावक वणेवाद दांन साला दीन हीन पंथी श्रमण माहणोके वास्ते केशी गण धरके उपदेससें कराइ ये अधिकार राजप्रष्णी सूत्रमेंहे विक्रमराजा लोकोका ऋण उतारकर संवत चलाया एसेंही शालिवाहन जैनधर्मरूपी सक चलाया लोकोकी आपदा काटणेसें बमी फलप्राप्ति होतीहे चेलोकी परिक्षा विनयउपरसें मालम पमतीहे सुनटोकी परिक्षा संग्राम होणेसें मित्रकी परिक्षा आपदाका प्रसं-ग आणेसें उंर दानेश्वरीकी परीक्षा काल पम-णेपर मालम देतीहे हमारे विद्यमांनमें बीकानेर मारवामें डुकाल पमा सं० १९-५६का जिसमे नग्रसेठ चांद मलढढ्ढा वगेरे उंसवाल गोत्री ते-सेंइ नागा दम्माणी प्रमुख माहेश्वर गोत्रीयोने राजेंद्र गंगासिंह बहाडुरकी प्रेरणासें लाखो रुपयेका अनाज कंगालोको दांन दीया तेसें दांन बुद्धि रखणी तेसें माता पिता नाइ बहेन लमका लमकी उंरत नोकर रोगी केदी लोक गाँय वगेरे जांनवरोकूं यथायोग्य नोजन कराके पंचपरमेष्टीका ध्यांनकर पच्चखाणका उपयोग रखकर आपकी तासीरकूं माने एसा नोजन

करणा आहार पाणी वगेरे वस्तु स्वन्नावसेंही दुष्ट ओर खराब होय तोन्नी किसी २ कूं माफ-गत आताहे उसकूं साम्य कहतेहे जन्मसें ले-कर जहर खाणेकी टेंम पटकी होय तो उस अदमीकूं जहरन्नी अमृत होजाताहे ओर अमृ-तन्नी अगर कन्नी नहि खाया होय तो वो ज-हर माफक होताहे इसवास्ते पथ्य चीज नही सदे तोन्नी खाणा चहीये कुपथ्य चीज सदे तोन्नी नही खाणा ताकतवर अदमीकूं सब चीज हितकारी होतीहे एसा समजके काल-कूट जहर नहि खाणा जहर शास्त्रका जाण-कारन्नी कोइ वखत जहर खाणेसें मरजाताहे जेसें के तेरूकी रांफ होतीहे गलेके नीचे उतरे सो सब असन कहलाताहे इसवास्ते क्षणन्नरके सुखकेवास्ते जीन्नका लालची नहि होणा इस-वास्ते अन्नक्ष्य अनंतकाय ओर बहुत पापकारी बहु बीजबस्तुका खाणा ग्रेमणा क्योंके रोगका मूल रसहे न्नावप्रकाशमें लिखाहे बहुत साग-पात रोगकारीहे अन्नक्ष अनंत कायका विचार जैन तत्वादर्श न्नाषाग्रंथसे जांण लेणा पापका मूल लोन्नहे दुखका मूल स्नेहहे रोगका मूल रसहे इन तीनोका ग्रेमणेवाला सुखी होताहे

अपणी अग्नि बलमाफक प्रमाणसर भोजन करणा बहोत भोजन करणेसें उलटी दस्त हेजा वगेरे रोग होताहे जीमकर सो कदम टहलणा अध कच्चा अन्न नहि खाणा जीमकर अन्न पचणेकूं मावी करवट पावघंटा सोणा अध घंटा चित्ता सोणा ताकत वधणेकूं निद्रा लेणा नही दिनकूं कभी हमेस फिरणे घिरणेकी मेहनत करणेवाला देरी नहि रखतां मलमूत्रका त्याग करणेवाला उरतोसें वचके रहणेवाला एसे पुरषोके रोग नहि होताहे बिलकुल प्रभातसमें तदन त्रिकाल संध्याकी वखत अथवा रातकूं तथा रस्ता चलते भोजन नही करणा भोजन करती वखत अन्नकी निंदा नहि करणी मावे पगपर हाथ नहि रखणा एक हाथमे खाणेकी चीज लेकर दुसरे हाथसें नही खाणा उघामी जगेमें धूपमें अंधारेमे दरखतके नीचे भोजन नहीकरणा भोजन करती वखत तर्जनी अंगूठेके पास वाली टालनी नहि वस्त्र उर पग धोया विना नंगा होकर मेला वस्त्र पहरकर एक धोती पहरकर भीगा वस्त्र लपेटकर अपवित्र शरीरसें अतिशय जीभकी लोलपता इत्यादिक प्रकारसें भोजन नही करणा पगोमें जूता पहरा

हुवा चित्त ठिकाणे रखे विगर केवल जमीनपर अथवा पिलंगपर बेठकर खूणेमे बेठके दक्षिण दिसामे मूं करके तेसें पतले आसनपर बेठके इत्यादिक प्रकारसें भोजन नहि करणा आसनपर पग रखकर कुत्तेकी चंमालकी उंर नीच अदमीकी जहां नजर पमती होय एसी जगे भोजन नही करणा फूटे वरतणमें मलीन पात्रमें अपवित्र वस्तुसें उत्पन्न गर्भहत्या करणेवालाका स्पर्शा हुवा गाय कुत्ता पक्षीयोका सूंघा हुवा जिस चीजकी खबर नही के ये कहांसें आई हे जिस चीजकूं आप पहचाणे नही एक वेर रांधे हुवेकुं डुवारा गरम कीया होय ए इत्यादिक वस्तुका भोजन नहि करणा जीमते वखत वच २ शब्द वांकातिरछा मूं नही करता अपणे इष्टदेवका नांम लेणा उत्तम हाथोसें जीव जयणासें बणाया गया जीमणा स्वर वहते हुये मौन करके भोजन करणा शरीर वांका तिरछा नहि रखणा खाणेकी सब चीज सूंघके फेर खाणी जिस्सें नजर दोष टलताहे बहोत खारा बहोत खट्टा बहोत गरमागरम बहोत ठंमा अन्न नही खाणा शाक बहोत नही खाणा बहोत मीठी चीजभी नहि खाणी अत्यंत रु-

चिकारीजी चीज नहि खाणी ज्यादा गरम रस ताकतका नास करेहे बहोत खट्टा इंद्रियोकी शक्ति तथा वीर्यकूं हीन करताहे अतिसय खारा आंखोंकों विकार करेहे बहोत चिकणा गृहणी आंत बठी कला हाजमा बिगारेहे कफकूं करुवा उर तीखे रससें जीतणा पित्तकूं मीठे खट्टा मंदरससे जीतणा वायूकूं चिकणा उर गरम रससें जीतणा अजीर्णादि सन्निपातादि वाकी रोगोकूं उपवाससें जीतणा घीके संग करमी वस्तु पहली खावे मीठा रस वगेरे दूध वगेरे बलिष्ट वस्तु नित्य खावे दाहकारी वस्तु नही खावे बहोत जल नही पीवे खाया हुवा पचे बाद भोजन करे पहली मीठा बीचमे तीखा अंतमे करुवा रस खावे जलदी नहि करता हुवा मीठा उर चीकणा रस खावे बीचमे पतला खट्टा उर खारा खावे अंतमे करुवा तीखा रस खावे भोजनकी सरूआतमे जल पीवे तो अग्नि मंद होवे बीचमे पीवे तो रसायण मुजब अंतमे पीवे तो विष माफक नुकशांन करे जीमे बाद एक कुरला मूं साफ करणेकूं जरूर पीणा दटके जीमणा नही भोजन करके भीजा हाथ नेत्र रोगी टालके आंख गालके वाये हाथके नही

लगाणा कल्याणकेवास्तें दोनों गोमोके स्पर्श करणा भोजन करके दो घंटेतक स्त्री संग नहि करणा दोमणा वगेरे खेचल नहि करणा शरीर मर्दन पगचंपी करवाणा नही भार उठाणा बेसणा अथवा स्नान भोजन करके नहि करणा भोजनकर बेठणा नहि बेठे तो मेदवृद्धिसें पेट चूतमभारी होजाताहे सुश्रावक निर्वद्य निर्जीव उर परित्त मिश्र इससें अपणा निर्वाह करतेहे जीमते बूंद या अनाजका दाणा नही गिरावें मन वचन कायाकी गुप्ती रखके भोजन करे विवेकी देव गुरु नगरका मालक तथा स्वजनमे शंकट पमे तो छती शक्ति भोजन नहि करे सूर्यचंद्रका गृहण लगे तब भोजन करणा नही अजीर्ण नेत्ररोगमें भोजन नहि करणा तावकी सरूआतमे लंघन शक्ति माफक करणा वायूसें थकेलेसें क्रोधसें शोकसें कामसें जो ज्वर चढे अथवा चोटसे उसमे लंघण नहि करणा तीर्थ वंदनमें आठम चोदसकूं बमे पर्वके दिन भोजन नही करणा तपस्यासें अनेक कार्य सिद्ध होताहे चक्रवर्त्ति नारायणभी तपस्यासें देव आराधतेहे भोजनकर दांत साफ कर नवकारस मरणकर उठे तथा गुरुकूं तथा देवकूं चैत्य वं-

दनविधिसें वांदे गीतार्थसे मुनिसे अथवा सिद्ध पुत्रसें अथवा गीतार्थ श्रावकसे वांचे पूछे पढ्या हुवा याद करे धर्मकथा सुणे अथवा कहे मनमें सूत्रार्थ विचारे ये पांच प्रकारका स्वाध्याय करे शास्त्रोका रहस्य विचारणा सांझकुं पापका आलोचनारूप प्रतिक्रमण सामायक संयुक्त करे फेर जिन मंदिर जाकर आरती धूपादिक करके परमात्मा श्री तीर्थंकरोका गुण गावे रात्रीकूं च्यारोंही सरण लेकर सब जीवोंकों खमायकर सागारी अणसण लेकर देवगुरुका समरण करे जतनके साथ शयन करे श्रावकके तीन मनोरथहे सो करे अनित्यादिक बारे भावना भावे पिछली रात्रिका जब नींद उम्जाय तब अनादिकालकी अभ्यासरूप दुर्जय काम रागकूं जीतणेकूं स्त्रीके शरीरका अशुचि गलीचपणा विचारे जेसें थूलभद्रस्वामी जंबूस्वामी सुदर्शन सेठ वगेरोने जेसें दुष्कर शील पाला उर मन वस कीया क्रोधादिक कषाय जीतणेकूं जो जो उपाय कीया शंसारअसार बडा विषम एसें मनोरथ करणा स्त्रीका शरीर अपवित्र निंदनीक चामडी हाड मींजी आंतरया चरबी खून मांस पेसाब विष्टा वगेरे गलीच वस्तुसें भरा

हुवा इसकूं तूं क्या अच्छा समजताहे अरे जीव विष्टा वगेरे गलीच चीजकूं देखके जेसें तूं थू थू करताहे ओर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख एसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे विष्टाकी थेली कीडोंकी भरी कपटण चपलाइ ओर झूठसें जो पुरषोकूं ठगतीहे एसी स्त्रीका हावभाव ओर बहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके वस ओरतकूं भोगतेहें उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणे-वालाहे तथापि मनकूं संकल्पसें वर्जे तो सह-जमें काम जीतणेमें आताहे जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेभी अपणे जेसेही आदमी थे लेकिन् क्रोध मांन माया लोभकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोडेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये वाकी सत्पुरष पैदा होणेका कोइ अला-यदा क्षेत्र नहीहे इंद्रियां वगेरे वस्तु तो मनुष्य-के स्वभाव करके प्राप्तहे तेसें साधूपणा मिलणा सहजसें नही लेकिन् गुणोकों धारण करणे-वाला साधू कहलाताहे उद्यम करणेसें गुणोकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीडेके पुष्पकी तरे देखणे मात्र हो-ताहे वनमें पेदा हुये खसवोदार पुष्पकों लोक

गलेमे पहनतेहे उर अंगमे पेदा हुये मैलकों दूर माजतेहे गुणवानकी नक्ति दया क्षमा शील शंतोष निष्कपटता धारण करता हुवा गृहस्थ-धर्म आराधना करें अवसर आणेसें साधू व्रत गृहणकर निर्ममत्ती होकर सर्वसंग त्यागकर प-रमानंदरूप सिद्धिपद जयकमलाकूं नोगे यह गृहस्थ व्यवहारालंकार ग्रंथ मेने अर्हद्वचना-नुसार संक्षेप ग्रंथांतरोसे जो कुछ लिखाहे कुछ परंपरागत श्रुती कुछ इक अनुनवी वातें लिखीहे इसमें प्रमादके वसया अल्पज्ञताके सबबसें ज्यादा या कम सर्वज्ञ वचनसे विरुद्ध लिख-णेमे आगया होय तो पंचपरमेष्टिकी साक्षीसे मिथ्या दुस्कृत देताहूं विद्वज्जन सुधार लेंगें श्रीरस्तु लेखकपाठकयोः ॥

वसुधामंमलआर्यमे जाकोप्रबलप्रताप ॥
वर्द्धमानजिनराजप्रनु हरो दुरितशंताप ॥ १ ॥
प्रनुवाणीवारिदसघन मतअनेकएकांत ॥
गृहीवूंदनयवृष्टितें चात्रकस्वातिसिद्धांत ॥ २ ॥
संवतविक्रम रायके गतसताब्दउन्नीस ॥
छप्पन्नमाघत्रयोदसी उज्वलपक्षजगीस ॥ ३ ॥
मरुमंमनविक्रमनगर गंगासिंहनरराज ॥
सुरसरिताजसअतिरुचिर॥प्रजपावनकेकाज ॥४॥

वृहत्गच्छखरतरविटप मुनिश्रावकपतफूल ॥
भट्टारकयुगवरप्रवर ॥ कीर्तिसूरिजिनमूल ॥ ५ ॥
शाखाकीर्तिक्षेमकी अतिपसरीनरपूर ॥
अगणितजपमफलगुणी प्रगटेपुन्यपमूर ॥ ६ ॥
धर्मशीलगुरुमिष्टरस पल्लवकुशलनिधान ॥
रसनातारसकरप्रगट कितलगकरेवखान ॥ ७ ॥
गुरुगुणसरससुधानिधी ॥ पानकरणललचाय ॥
गुएससमोमनपीनअति भयोविचक्षणराय ॥ ८ ॥
परउपगारविचारकर निजआतमअविकार ॥
पाठकपदधारकरुचिर विरचतगणिःऋद्धिसार ॥ ९ ॥

इति श्रीश्रावगव्यवहारालंकारग्रंथउपाध्याय
श्रीरामलालजीयुक्तिवारिधिःकृतसंपूर्ण ॥

॥ अथ भावश्रावकके लक्षण लिख्यते ॥

सतरे लक्षणवाला भावश्रावक होताहे सो संक्षेपसें लिखताहूं १ अनर्थकूं पेदा करणेवाली चंचल चित्तवाली ऊंगुणगारी नरक जाणेके रस्ते जेसी स्त्रीकूं जाणके अपणे जीवका भला चाहता हुवा उसके वशमें नही रहे २ इंद्रीयांरूप चंचल घोमे हमेसां दुर्गतिके रस्ते दोमतेहे इसवास्ते शंसारका यथार्थ स्वरूप जांणणेवाला श्रावक सम्यक् ज्ञानकी लगामसें इंद्रियोकूं खोटे रस्ते नही जाणे देणा ३ सब अनर्थका तथा प्रयासका क्लेसका कारण ऊर असार एसा धनकूं जाणकर बुद्धिमांन पुरष थोमाही धनका लोभ नहि करे ४ संसार आप दुखरूप दुखका फल देणेवाला परिणाम याने आगेभी दुखदाई विटंबनारूप एसा जांण उसमें प्रीति रखके मुरजाणा नही ५ जहर जेसा विषय क्षणमात्र सुख देणेवाला एसा विचार हमेसां करणेवाला संसार प्रपंचसे मरणेवाला सर्वज्ञ कथित तत्वका जांणकार उन विषयोकी इच्छा नहि करे ६ तीव्र आरंभ ओमे निर्वाह नहि होता दीखे तोभी सर्व जीवपर दया रखता हुवा गुजरान माफक थोमा आरंभ करे ऊर

बिलकुल आरंभसे रहित एसें मुनिजनोकी स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं बेमी उंर फांस समान गिणता दिलके ऊपर कर डुरक करके रहे उंर चारित्र मोहनी कर्म खपाणेके उद्यममें रहे ८ बुद्धिमांन पुरष मनमें गुरुभक्ति उंर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रभावणा प्रशंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त पाले ए विवेकसें चलणेवाला धीर पुरष साधारण मनुष्योंकूं अण समजपणेकर गाम्री प्रवाह चलणेवाला समजे ज्ञानशुन्य किसी भाग्यवानकूं कोइ धर्मादि कर्त्तव्य करता देखे उस मुजब तत्वज्ञानरहित हीया शून्यपणे करतेहे एसा समज बुद्धिवंत लोक संज्ञाका त्याग करे १० एक जिनागम स्यादवाद् न्याय टाल डुसरा यथार्थ नही उंर डुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नही एसा जांणकर सर्वक्रिया अनुष्टांन जिनागमके अनुसार करे ११ अपणे जीवकी शक्तिकूं नही छिपाता हुवा जेसें संसारके बहोतसे कामकाज करताहे तेसेंइ अपणी हिम्मत नहि हारता हुवा दानशील तपभावना प्रमुख च्यार प्रकारके धर्मकूं जेसें आत्माकूं पीमा नही होय एसी तरे आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे डुर्लभ एसी

हितकारी उंर निरवद्य धर्मक्रिया पायकर अच्छी तरे आचरणा करता हुवा एसा आपणेकूं करते हुवेकूं देखके अज्ञानी लोक अपणेकूं हसे तोभी उनोके हसणेसें मनमें लज्या लाणी नही १३ देह स्थिति रक्षाका मूलकारण धन स्वजन आ- हार उंर घर इत्यादिक शंशारगत चीजोके ऊपर रागद्वेष नहि रखता हुवा संसारमें रहे १४ अपणा हित चाहता हुवा मध्यस्थपणेसें रहकर नित्य मनमें समताका विचार रखता हुवा रागद्वेषके वस नहि होणा कदा ग्रहकूं सर्वथा छोडदे १५ हमेसां दिलमें सब चीजोकी क्षणभंगुरताका विचारकर धनवान होकरकेभी धर्मकृत्यमें हरकत होय एसा उनोका संबंध नहि रक्खे १६ संसारसें विरक्त हुवा श्रावक भोग उपभोगकी चीजोसें तृप्ति होती नही एसा विचार करता हुवा उंरतके आग्रहसें कांम भोगसेवें जेसें ज्वरके पीडामें कुटकी चिरायता आदि खारा द्रव्य दिलमें नहि रुचे तथापि रोग मिटाणेकूं प्राणी खाताहे तेसें काम रोगकी शांति करे १७ वेस्या जो कसबण उसकी तरे आशंसा रहित श्रावक आज अथवा कल छोड- दूंगा एसा विचार करता पराई चीजके माफक

लूखे परणामोसें घरवास पाले एसे ये सतरे गुणोकरके जो युक्त सो जिनागममें नाव श्रावक कहताहे एसा परिणामोवाला नाव श्रावक शुन-कर्मके योगसें जलदी नाव साधूपणा पाताहे इसतरे धर्म रत्नशास्त्रमें लिखाहे ॥

इति श्री श्रावकव्यवहारालंकारग्रंथे नावश्रा-वकलक्षणसंपूर्ण ॥ जैनधर्ममें मूं बंधोके पंथवाले कहतेहे दो हजार वर्षका नस्मग्रह वीरप्रनूके जन्मराशिपर बेठाथा सो दो हजार वर्षतक जैन धर्मका उदय पूजा सत्कार नही नया वह ग्रह उतरा उंर हम प्रगटे सो जैनका उद्योत नया उत्तर नस्मगृह नगवानके रासिपर आ-याथा सो उनोके शंतानोका उदय पूजा सत्का-र कम पमा था जब वह उतरा तब नगवानके शंतान जती साधूउंकी पूजा सत्कार उंर धर्मो-द्योत नया खरतर गच्छी श्री जिन चंद्रसूरिः तपाहीरविजयसूरिः ज्ञांनविमलसूरिः विजयदां-नसूरि सं १६ से विक्रमके क्रिया उद्धार करा जिनोने अकब्बरसें उपदेस कर जैन तीर्थकी रक्षा करी अमारि उदघोषणा हिंन्दमे फिरवाइ इसवास्ते जिसकूं रोग होताहे रोगकी मुदत पोहचणेसें वोही आराम होताहे सो नया

भगवांनने कहाथा मेरे चेलोंका उदय पूजा सत्कार दो सहस्र वर्षतक नही होगा लेकिन् एसा नही कहा के एक गुरु विगरका लूंपक पंथ ढूंढक होंगे उनोकी पूजा होगी तीनसे तेतीस वर्षका फेर जन्मरासिपर धूम्रकेतु ग्रह बेठा उसके प्रताप जैनधर्मकूं मलीन करणेकूं मूर्तिनिंदक शास्त्रोत्थापक महानिन्नववाईसगोष्टि छावंगचूलियासूत्रमें लिखा सो तुम भये ॥ ॥

नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

	नाम.	किंमत.
१	करुणा बत्तिसी, दादासाहेबपूजा	०–४
२	सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१–०
३	मूर्तिमंम्ननका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०–८
४	पूजामहोदधि–गायनरूप ३७ पूजा	४–०
५	श्रावक व्यवहारालंकार	१–८

ग्रंथ छपते हैं.

१	श्रीपालचरित्र	१–८
२	धर्म्मरत्नसमुच्चय—जिस्में पंचप्रति क्रमणसूत्र विधि समेत, थुई चैत्य वंदन, बडे स्तवन, सिज्झाय, छोटे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नित्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्व, दंडक अर्थ समेत छपताहै	५–०